www.indiatodayhindi.in

हथियार सौदा: दोस्त पुराना ही अच्छा

कोविड चुनौती चलो फिर चलें स्कूल

बसपा: ब्राह्मणों को रिझाने की कोशिश

15 सितंबर, 2021 50 रुपए

इंडिया टुडे

मनोरंजन की मलिकाएं

विभिन्न ओटीटी प्लेटफॉर्म के शीर्ष पर काबिज प्रभावशाली महिलाओं ने महामारी के दौरान देशभर के घरों में किया मनोरंजन क्रांति का संचार

बाएं से: अमेजन प्राइम वीडियो की अपर्णा पुरोहित, नेटफ्लिक्स की मोनिका शेरगिल और आल्टबालाजी की एकता कपूर

RNI NO 45823/86 REGISTERED NO. DL(ND)-11/6042/2021-22-2023; LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2021-23; FARIDABAD/46/2020-22

अग्रिम सप्ताह के लिए प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित; एलपीसी दिल्ली-आरएमएस-दिल्ली-110006 से प्रत्येक शनिवार और सोमवार को प्रेषित; कुल पन्नों की संख्या 62 (आवरण सहित)

VISIT…

SANSKRITI UNIVERSITY
FOR EXCELLENCE IN LIFE

www.sanskriti.edu.in

8th in Multidisciplinary Emerging Universities (All India) by The Week

1st in School of Tourism & Hospitality (Best Value for Money) in private Colleges by India Today

SANSKRITI UNIVERSITY
AN INSPIRING PLACE TO STUDY

State-of-the-Art Infrastructure	Cosmopolitan Culture	Premium Placements
Top Academicians	Centre of Excellence Labs	Global Exposure
Centre of Excellence for AI, ROBOTICS, CNC MACHINES, ECOLOGICAL FARMING		Incubation Centre
Scholarship Available for Meritorious Students	Research & Innovation	Life Learning Skills

- Engineering
- Management & Commerce
- Fashion
- Humanities & Social Science
- Rehabilitation
- Basic & Applied Sciences
- Pharmacy
- Medical & Allied Sciences
- Polytechnic
- Tourism & Hospitality
- Law & Legal Studies
- Education
- Yoga & Naturopathy
- Agriculture
- Nursing
- ANM* • GNM*
- BAMS • BNYS
- Ph.D.

450+ Patents
1500+ Research Papers

PLACEMENT RECORDS

91% Students Placed

31 Lakhs Highest Package

4.80 Lakhs Average Package offered by 150+ Companies

COLLABORATIONS / ASSOCIATIONS

TCS iON | OFFERS INDUSTRY HONOUR PROGRAM (IHP)

B.TECH
(COMPUTER SCIENCE & ENGG.)
- Data Science • Artificial Intelligence
- Immersive Experience

B.TECH
(MECHANICAL ENGG.)

B.COM HONS. / BBA / MBA
- Financial Markets
- Banking & Insurance
- BFSI • Business Analytics

BCA / MCA

☑ Eligible to participate in TCS Digital examination which offers differentiated higher salarypackage (For Engg. Students)
☑ Placement Opportunities in top Corporates ☑ Assured internship in TCS iON

Campus: 28 K. M. Stone, Mathura – Delhi Highway, Chhata, Mathura, Uttar Pradesh (INDIA)
9690899944 enquiry@sanskriti.edu.in **9358512345, 8095376611**
Toll Free Number: 1800 120 2880

Scan QR code to visit website

* Under approval

प्रधान संपादक की कलम से

हमने अंग्रेजी *इंडिया टुडे* के 31 मई, 1984 के 'बड़े बजट के बादशाह' शीर्षक वाले अंक में बॉलीवुड की तीन सबसे कामयाब शख्सियतों–निर्माता–निर्देशक मनमोहन देसाई, प्रकाश मेहरा और सुपरस्टार अमिताभ बच्चन की तस्वीरें कवर पर छापी थीं. यह तिकड़ी दुनिया के सबसे बड़े फिल्मोद्योग में बड़े बजट की फिल्मों और तड़क–भड़क वाले सेट के बेजोड़ दबदबे का आईना थी. टेलीविजन अभी जमीन तलाश रहा था और मोबाइल और इंटरनेट अपने शैशवकाल में थे. करीब चार दशक बाद 4जी कनेक्टिविटी, स्मार्टफोन, स्मार्ट टीवी और माकूल कंटेंट से भारतीय मनोरंजन जगत में एक नया विस्फोट हुआ, जिसमें उत्तर प्रदेश के छोटे शहरों–कस्बों के गैंगस्टर से लेकर उलटे–पलटे शहरी रोमांस, स्त्री–उत्पीड़न और ऐतिहासिक कथानक शामिल हैं. ये सभी शो इंटरनेट के जरिए और आपके स्मार्टफोन, टैबलेट और स्मार्ट टीवी (एक और प्लेटफॉर्म 'ओवर द टॉप' या ओटीटी) पर उपलब्ध हैं. दर्शकों के लिए मनोरंजन का कमोबेश वैसा ही कारून का खजाना खुल गया, जैसा हमने तीन दशक पहले सैटेलाइट टीवी और लोकप्रिय धारावाहिकों के आगाज के दौर में देखा था.

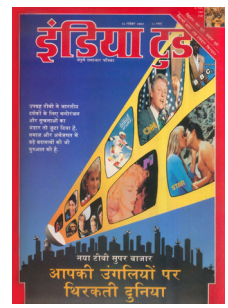

15 नवंबर, 1992 का आवरण

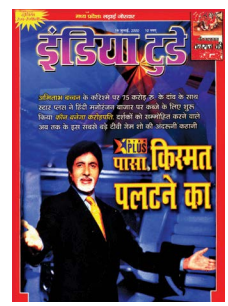

19 जुलाई, 2000 का आवरण

पिछले साल महामारी की वजह से लॉकडाउन के दौर में सिनेमाघरों के फाटक बंद हुए और लोग घरों में कैद हुए तो ओटीटी पर दर्शकों की संख्या करीब तिगुनी हो गई. मार्च 2021 में ईवाइ–फिक्की की रिपोर्ट के मुताबिक, ओटीटी ग्राहक 2019 में 1.05 करोड़ से 2020 में 2.8 करोड़ हो गए.

ओटीटी का आगाज भारत में हुआ तो उसे खासकर बाकी वैश्विक कंटेंट–हॉलीवुड फिल्मों और *हाउस ऑफ कार्ड्स, नार्कोस* और *गेम ऑफ थ्रोन्स* जैसे मौज–मस्ती वाले शो के लिए ही जाना जाता था. उसमें स्थानीय कथानकों की चाशनी ने समूचे देश में उसकी दीवानगी पैदा कर दी और मनोज बाजपेयी, पंकज त्रिपाठी जैसे निपट नए सितारों को जन्म दिया और *सैक्रेड गेम्स, द फैमिली मैन, मिर्जापुर* और *स्पेशल ऑप्स* जैसे शो नमूदार हुए. भारत में तकरीबन 40 ओटीटी प्लेफॉर्म हैं और धुआंधार लोकप्रियता का फायदा उठाने कुछ और आने को हैं. अनुमान है कि 2020 में उन पर 1,200 घंटे के मौलिक कंटेंट दिखे और उम्मीद है कि यह दोगुना होकर 2023 तक 3,000 घंटे सालाना हो जाएगा. यह भी आंका गया है कि 2021 में ओटीटी प्लेटफॉर्म कंटेंट पर 1 अरब डॉलर (करीब 7,300 करोड़ रु.) का निवेश करेंगे. यह घटनाक्रम इस वक्त की बुलंदी जैसा है. आकलन है कि 2021 में भारत में स्मार्टफोन वालों की तादाद 76 करोड़ पहुंच जाएगी, जो चीन के बाद दुनिया में दूसरे नंबर पर होगी. आश्चर्य यह है कि परदे का आकार कोई मायने ही नहीं रखता क्योंकि भारत में तकरीबन 70 फीसद लोग मोबाइल पर ही वीडियो देखते हैं. इसमें यह भी जोड़ लें कि स्मार्टफोन की कीमतें लगातार गिर रही हैं. यही नहीं, भारत में इंटरनेट का डेटा सबसे सस्ता है, कई लोग केबल टीवी कनेक्शन कटवा कर 'कॉर्ड नेवर्स' की नई पीढ़ी की ओर बढ़ रहे हैं.

ओटीटी हर उम्र–वर्ग, स्त्री–पुरुष, पसंद के लिहाज से विविध कंटेंट से बड़े खजाने की पेशकश कर रहा है. यहां भाषा भी बेलगाम है. डब की गई या सबटाइटल वाले शो देखना पहले ही हमारी आदत में शुमार हो चुका है. अनुमान है कि 2025 तक ओटीटी प्लेटफॉर्म पर बिताए कुल वक्त में क्षेत्रीय भाषाओं के कंटेंट की खपत 50 फीसद बढ़ जाएगी और अगली बढ़ोतरी दूसरे और तीसरे दर्जे की शहरों में होगी. ऑनलाइन शो देखने में आए इस उछाल ने रचनात्मक प्रयोगों की भी सूनामी पैदा कर दी है. बॉलीवुड के बड़े नाम भी अब ओटीटी कंटेंट की ओर मुड़ रहे हैं और बड़े फिल्मी सितारे भी लहर पर सवार होने लगे हैं. इससे कंटेंट निर्माण का एक नया व्याकरण तैयार हो रहा है क्योंकि उसका मकसद मौज–मस्ती के शो पेश करना है. कुछ कंटेंट तो सीमाएं लांघ रहे हैं और कंटेंट पर नियम–कायदे लादने की मांग उठ रही है क्योंकि ये सेंसरशिप बोर्ड के तहत नहीं आते. इंडस्ट्री इस दिशा में संगठित हो रही है.

लोकप्रिय ओटीटी प्लेटफॉर्म में तीन नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम वीडियो और आल्टबालाजी ने चार साल में 150 वेब शो और 90 फिल्में पेश कर दी हैं. दिलचस्प यह है कि उन सभी के रचनात्मक विभाग की मुखिया महिलाएं हैं. अमेजन प्राइम वीडियो में इंडिया ओरिजिनल्स की प्रमुख अपर्णा पुरोहित, नेटफ्लिक्स में कंटेंट वाइस प्रेसिडेंट मोनिका शेरगिल और बालाजी टेलीफिल्म्स की जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर एकता कपूर की तिकड़ी भारतीय दर्शकों का स्वाद बदल रही हैं. ये ताकतवर महिलाएं कमाई का ऐसा साम्राज्य खड़ा कर चुकी हैं, जो उनके समकालीन फिल्म निर्माता सपने में भी नहीं सोच सकते. हर रोज उनके सामने ऐसे प्रस्तावों के ढेर लग जाते हैं, जो उनसे अपने कंटेंट तैयार करने की मांग करते हैं.

हमारी आवरण कथा 'मनोरंजन की मलिकाएं' इस बड़े बदलाव की कथा है, जिसे सीनियर एडिटर सुहानी सिंह ने लिखा है. ग्रुप फोटो एडिटर की फोटो शूट के लिए पहली बार शेरगिल, कपूर और पुरोहित एक साथ खड़ी हुईं. शेरगिल फलांगती ओटीटी कार्यशाला का बयान कुछ इस तरह करती हैं, ''अनेक प्रोजेक्ट कतार में हैं. लेखन लगातार जारी है, कितने ही अनुभवी और नए–नवेली आवाजें अपनी जगह तलाशती और काम लेकर आ रही हैं.'' वाकई यह हम सबके लिए खुशखबरी है. देखिए और मजे लूटिए!

अरुण पुरी

(अरुण पुरी)

इंडिया टुडे

www.indiatodayhindi.in

चेयरमैन और प्रधान संपादक: अरुण पुरी
वाइस चेयरपर्सन: कली पुरी
ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर: दिनेश भाटिया
ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर: राज चेंगप्पा
चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर: मनोज शर्मा
एडिटर: अंशुमान तिवारी
सीनियर एडिटर: मोहम्मद वक़ास
एसोसिएट एडिटर: शिवकेश मिश्र, शुभम शंखधर, आशीष मिश्र (लखनऊ)
असिस्टेंट एडिटर: मनीष दीक्षित, सुजीत ठाकुर
राज्य ब्यूरो:, अमिताभ श्रीवास्तव (पटना), रोहित परिहार (जयपुर), एम.जी. अरुण (मुंबई), राहुल नरोन्हा (भोपाल), अमरनाथ के. मेनन (हैदराबाद)
ग्रुप क्रिएटिव एडिटर: नीलांजन दास
एसोसिएट आर्ट डायरेक्टर: चंद्रमोहन ज्योति
असिस्टेंट आर्ट डायरेक्टर: असित रॉय
ग्रुप फोटो एडिटर: बंदीप सिंह
फोटो डिपार्टमेंट: यासिर इकबाल, राजवंत रावत, चंद्रदीप कुमार, मंदार सुरेश देवधर (मुंबई)
चीफ फोटो रिसर्चर: प्रभाकर तिवारी
प्रिंसिपल फोटो रिसर्चर: सलोनी वैद
प्रोडक्शन चीफ: अभिनव पुगला

एसोसिएट पब्लिशर: विद्या मेनन (इंपैक्ट)
इंपैक्ट टीम
नेशनल हेड: सुपर्णा कुमार (गवर्नमेंट ऐंड पीएसयू)
सीनियर जनरल मैनेजर: जीतेंद्र लाड (वेस्ट)
जनरल मैनेजर: मयूर रस्तोगी (नॉर्थ), उपेंद्र सिंह (बेंगलूरू)
डिप्टी जनरल मैनेजर: इंद्रनील चटर्जी (ईस्ट)
ग्रुप चीफ मार्केटिंग ऑफिसर: विवेक मल्होत्रा
सेल्स एवं ऑपरेशन
सीनियर जनरल मैनेजर: दीपक भट्ट (नेशनल सेल्स)
जनरल मैनेजर: विपिन बग्गा (ऑपरेशंस)
डिप्टी जनरल मैनेजर: राजीव गांधी (नॉर्थ)
रीजनल सेल्स मैनेजर: सैयद आसिफ सलीम (वेस्ट)
डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर: एस. परमशिवम (साउथ)
सीनियर सेल्स मैनेजर: पीयूष रंजन दास (ईस्ट)

INDIA TODAY GROUP

वर्ष: 35; अंक: 42; 9-15 सितंबर 2021; प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित

- **संपादकीय कॉर्पोरेट कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, इंडिया टुडे ग्रुप मीडियाप्लेक्स, एफसी-8, सेक्टर 16-ए, फिल्म सिटी, नोएडा-201301, फोन: 0120-4807100;
- **ग्राहकी चंदा भेजें:** इंडिया टुडे (हिंदी), पो. बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001
- **ग्राहक सेवा:** कस्टमर केयर, इंडिया टुडे ग्रुप, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301, टोल फ्री फोन नं. 1800 1800 100 (बीएसएनएल/एमटीएनएल लाइनों से) फोन: दिल्ली, फरीदाबाद से (95120) 2479900; शेष भारत से (0120) 2479900. (सोम से शुक्र-सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक), फैक्स: (0120) 4078080. ई-मेल: wecare@intoday.com
- **सर्कुलेशन कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301
- **इंपैक्ट कार्यालय:** 1201, 12वां तल, टावर 2ए, वन इंडियाबुल्स सेंटर, (जुपिटर मिल्स) एस.बी. मार्ग, लोअर परेल (पश्चिम)-मुंबई-400013. फोन: 022-66063355 फैक्स: 022-66063226
- **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ए1-ए2, एनके सेंटर, विनुज्य निकुंज, उद्योग विहार, फेज-5, गुड़गांव, हरियाणा, फोन: 0124-4948400;
- 201-204 रिचमंड टावर्स, द्वितीय मंजिल, 12 रिचमंड रोड, बंगलुरु-560 025 फोन: 2212448, 226233, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. फैक्स: 080-2218335.
- रजिस्टर्ड कार्यालय: एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

- लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
- सभी विवादों का निबटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा.

- **लिविंग मीडिया इंडिया लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मनोज शर्मा द्वारा एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और थॉमसन प्रेस इंडिया लि., 18-35, माइलस्टोन, दिल्ली-मथुरा रोड, फरीदाबाद-121 007 (हरियाणा) में मुद्रित. संपादक: राज चेंगप्पा**

बंदीप सिंह

28
आवरण कथा

मनोरंजन की महारानियां

ओटीटी चैनलों में शीर्ष पर काबिज ताकतवर महिलाओं ने स्ट्रीमिंग क्रांति के जरिए महामारी के बीच भारतीय घरों तक मनोरंजन पहुंचाया

भीतर

सुर्खियां
कोविड-19: तीसरी लहर की जद्दोजहद
पेज 5

अर्थात्: न होता ये तो क्या होता...
पेज 15

फुरसत
संगीत: मेरा जुनून है प्रतिभाओं की तलाश: कैलाश खेर
पेज 58

सवाल-जवाब/मनप्रीत सिंह: भारतीय हॉकी पर
पेज 60

खास रपट
16 **नए हथियार, नया जोश**
नए रक्षा सौदों ने मोदी-पुतिन की मुलाकात का नया माहौल तैयार किया है

इलेक्ट्रिक वाहन
22 **ई-स्कूटर की सवारी**
ये सुंदर और रखरखाव में सस्ती हैं, बैटरी वाले दुपहिया वाहनों ने सेग्मेंट में जान फूंक दी है

खास रपट
25 **स्कूल की ओर कदम**
स्कूल खुलने का सिलसिला शुरू हो गया है पर कुछ सवाल भी उठे

इंडिया टुडे

इंडिया टुडे मैगजीन मिलने में दिक्कत हो रही है?
9311409555 पर नाम पता या 'हेलो' संदेश भेजें.
या मेल करें: Moreinfo@intoday.com
हम आपसे संपर्क कर लेंगे.

आवरण फोटो: बंदीप सिंह

आउटफिट: (अपर्णा) **तदाशी शोजी**, (मोनिका) **गौरी एन नयनिका**, (एकता) **दाश एन डॉट.** *जूलरी:* **एजोटीक, क्यूरियो कॉटेज** और **अनंत फाइन जूलरी.** *शूज:* (अपर्णा) **वार्लेतिनो**, (एकता) **मसीमो दुत्ती.** *स्टाइल:* **ईशा अमीन;** *सहायक:* **अंकिता.** *बैकड्रॉप:* **लेखा वाशिंगटन का मून डॉट चेयर**

पाठकों के लिए सूचना: कभी-कभी आपको इंडिया टुडे पत्रिका में 'इम्पैक्ट फीचर' या 'एडवरटोरियल' या 'फोकस' के पन्ने नजर आएंगे. ये विज्ञापन होंगे और इन्हें बनाने में पत्रिका के संपादकीय स्टाफ शामिल नहीं होते.

INDIA TODAY GROUP

पाठकों को सलाह दी जाती है कि पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सेवा या व्यक्ति के विज्ञापन और प्रचार से संबंधित सामग्री से वचनबद्धता कायम करने, पैसा भेजने या खर्च करने से पहले उचित जांच-पड़ताल कर लें. विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व इंडिया टुडे ग्रुप का नहीं है. ऐसे किसी भी तरह के दावों को विज्ञापनदाता अगर नहीं पूरा करता है तो इंडिया टुडे ग्रुप के प्रकाशनों के मुद्रक, प्रकाशक, एडिटर-इन-चीफ और एडिटर इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे.

पंजाबः मर्ज बढ़ता ही जा रहा
पेज 8

भाजपा-शिवसेना जंगः मुंबई का राजा कौन
पेज 10

सुर्खियां

गोवाः सियासी हमसफर की तलाश
पेज 12

समाचार सारः भाग्यशाली गोरखपुर
पेज 14

सी.के. थानसीर/गेट्टी इमेजेज

जमावड़ा
इस साल जुलाई में लॉकडाउन में छूट मिलने के बाद केरल के कोझीकोड में भीड़ भरी एक सड़क

कोविड-19

कोरोना की तीसरी लहर की कशमकश

सोनाली आचार्जी

भारत में 29 अगस्त को कोरोना के 43,000 नए मामले आए. सिर्फ साढ़े तीन महीने पहले देश में प्रति दिन 4,00,000 से अधिक नए मामले सामने आ रहे थे, उसे देखते हुए यह राहत भरी खबर ही कही जाएगी. लेकिन स्वास्थ्य विशेषज्ञ महामारी की स्थिति से चिंतित हैं, खासकर इसलिए क्योंकि 29 अगस्त को आए नए मामलों में से 67 फीसद सिर्फ केरल से हैं. आज कुल 2,09,520 कोरोना मामलों के साथ, केरल में देशभर में सबसे अधिक सक्रिय मामले हैं. महाराष्ट्र, जो कई महीनों तक संक्रमण के नए मामलों में सबसे आगे रहा था, अब वहां केरल के सक्रिय मामलों की तुलना में केवल एक-चौथाई मरीज हैं. जब आप केरल की तुलना उत्तर भारत के दिल्ली (375 सक्रिय मामले), राजस्थान (109) और उत्तर प्रदेश (269) जैसे कुछ राज्यों से करते हैं, तो केरल के आंकड़े और भयावह नजर आते हैं.

पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया (पीएचएफआइ) के

लहरों के बीच
अगस्त, 2021 में मुंबई के जुहू बीच पर जमा भीड़

मिलिंद शेल्टे

अध्यक्ष डॉ. के. श्रीनाथ रेड्डी कहते हैं, ''देश में कई ऐसे पॉकेट्स (इलाके) हैं जो वायरस के प्रति अत्यधिक संवेदनशील रहते हैं.'' इन पॉकेट्स में अगर लगातार उच्च संक्रमण दर बनी रही तो इससे पूरे देश में महामारी नियंत्रण को लेकर जोखिम पैदा हो सकती है. वायरस का एक नया वैरिएंट (संस्करण) या लंबे समय तक बड़ी संख्या में कोविड मामले एक बार फिर देश के चिकित्सा बुनियादी ढांचे को छिन्न-भिन्न कर सकते हैं.

केरल में बढ़ता संक्रमण क्यों चिंताजनक?

टीका विशेषज्ञ डॉक्टर गगनदीप कंग कहती हैं, ''सिर्फ एक राज्य में इतनी अधिक संख्या में संक्रमण के मामले होना चिंताजनक है.'' अधिकतर विशेषज्ञों का मानना है कि केरल की कम सेरोपॉजिटिविटी इसकी एक बड़ी वजह है. नवीनतम राष्ट्रीय सर्वेक्षण से पता चला है कि राज्य की केवल 44 फीसद आबादी में कोविड के खिलाफ प्रतिरक्षा थी. उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान जैसे राज्यों में सेरोपॉजिटिविटी 70 फीसद से ऊपर है.

केरल ने जुलाई में औसतन 13,500 और अगस्त में 19,500 रोजाना नए मामले दर्ज किए. जांच की पुष्टि का फीसद भी उच्च (15 फीसद से ज्यादा) बना हुआ है जो इसका संकेत है कि राज्य में वायरस का व्यापक प्रसार हो रहा है. राज्य के आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में 50 फीसद से ज्यादा अस्पताल के बिस्तर खाली हैं और मृत्यु दर केवल 0.5 फीसद है, जो राष्ट्रीय औसत (1.3 फीसद) के आधे से भी कम है. इसका अर्थ यह है कि लोग जांच में संक्रमित तो पाए जा रहे हैं, पर उनमें लक्षण गंभीर नहीं हैं. कोच्चि के अमृता अस्पताल में इंटरनल मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. सुभाष चंद्रा कहते हैं, ''यह राज्य की आबादी के बड़े हिस्से के टीकाकरण का नतीजा है. वर्तमान टीके भले ही संक्रमण को नहीं रोक पा रहे हों, पर वे न्यूमोनिया और अन्य स्वास्थ्य जटिलताओं को बढ़ने से रोककर बीमारी को गंभीर बनाने से रोकने में प्रभावी तो हैं ही.''

केरल ने टीका लगाने की अपनी पात्र आबादी के 20 फीसद से अधिक का पूर्ण टीकाकरण करा लिया है और 52 फीसद (जिसमें 45 साल से अधिक उम्र के 70 फीसद लोग शामिल हैं) को पहली खुराक मिल चुकी है. इसके बावजूद, राज्य ने ऐसे लोगों में लगभग 80,000 कोविड मामले दर्ज किए हैं जिन्हें टीके की पहली खुराक मिली है और संक्रमित होने वाले 40,000 लोगों को तो टीके की पूरी खुराक दी जा चुकी है. शुरू में, यहां देश में कोविड के एक नए वैरिएंट को लेकर आशंका जताई गई थी, लेकिन भारतीय सार्स-सीओवी-2 कंसोर्शियम ऑन जीनोमिक्स (आइएनएसएसीओजी) ने अगस्त में इस आशंका को खारिज कर दिया. आइएनएसएसीओजी ने अपने बयान में लिखा, ''डेल्टा वैरिएंट के प्रकोप में टीकाकरण की विफलता (या दो वैक्सीन की दोनों खुराक के बाद भी संक्रमण) आम हैं और भारत में भी ऐसा देखा गया है. नए वैरिएंट के सामने आने की चिंताओं का ऐसे आंकड़ों के संदर्भ में अंशांकन किया जाना चाहिए. अब तक, भारत में टीकाकरण की सफलता का अनुक्रमण (सिक्वेंसिंग) भी डेल्टा वैरिएंट का बहुत अधिक अनुपात दर्शा रहा है.'' दूसरे शब्दों में, केरल में कोविड संक्रमण में उछाल अभी भी डेल्टा वैरिएंट के कारण है.

लेकिन अगर वायरस को बेलगाम रूप से फैलने दिया जाता है, तो भविष्य में नए उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) का खतरा हो सकता है. वायरोलॉजिस्ट डॉक्टर शाहिद जमील कहते हैं, ''सिर्फ मौतों को रोकने से महामारी नहीं रुकेगी.'' लोग महामारी से ऊब चुके हैं और वे कम एहतियात बरत रहे हैं जिससे वायरस के अधिक संक्रामक स्ट्रेन्स का खतरा हो सकता है. जीनोम विशेषज्ञ डॉ. राकेश मिश्र कहते हैं, ''कोविड जितनी बार संचारित होता है उसके उतनी बार म्यूटेशन की संभावना होती है.''

केंद्र ने केरल की स्थिति से निपटने के लिए कदम उठाए हैं. 29 जुलाई को, राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) के निदेशक डॉ. सुजीत सिंह की अध्यक्षता में छह सदस्यीय टीम को स्थिति का जायजा लेने और जरूरी सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप की सिफारिश करने के लिए राज्य भेजा गया था. टीम ने खुलासा किया कि राज्य के लोगों में महामारी के कारण थकान और ऊब दिखी तथा होम आइसोलेशन को लेकर भी वे बहुत लापरवाह दिखे. 28 अगस्त को, केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन को लिखा, ''उच्च संक्रमण दर और पिछले चार हफ्तों में प्रति 10 लाख पर उच्च मामलों के कारण केरल के सभी 14 जिलों को चिंताजनक जिलों के रूप में पहचाना गया है.'' उन्होंने राज्य से परीक्षण में तेजी लाने और कोविड-19 प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन करने को कहा. किसी भी नए स्ट्रेन को पकड़ने के लिए केरल को कहा गया है कि वह जीनोमिक सीक्वेंसिंग के लिए उन जिलों से ज्यादा से ज्यादा नमूने भेजे जहां वायरस संचरण की दर उच्च है. भूषण ने पत्र में लिखा, ''मैं दोहराना चाहूंगा कि 'जांच, ट्रैकिंग, उपचार,

चिंताजनक हालात

210,000
सक्रिय मामले संक्रमण के केरल में हैं; देश में सबसे ज्यादा

46%
हिस्सेदारी है केरल की राष्ट्रीय संक्रमण में

10%
औसत टेस्ट पॉजिटिविटी दर दो महीनों से है केरल में

44%
आबादी, केरल की, में कोविड ऐंटीबॉडीज हैं

टीकाकरण और कोविड-उपयुक्त व्यवहार सुनिश्चित करने' की पांच स्तरीय रणनीति सुनिश्चित करने में कैसी भी ढिलाई से राज्य में कोरोना मामलों में और उछाल आ सकता है.''

क्या यह तीसरी राष्ट्रीय लहर लाएगा?

यह निश्चित है कि संख्या में वृद्धि होगी, क्योंकि भारत का एक बड़ा हिस्सा अब भी वायरस से संक्रमित नहीं हुआ है या इसके खिलाफ टीकाकरण नहीं किया गया है. लेकिन ज्यादातर विशेषज्ञों को इस बात पर संदेह है कि यह दूसरी लहर की तरह विनाशकारी होगी, खासकर नए स्ट्रेन की अनुपस्थिति में. जमील कहते हैं, ''सीरो-सर्विलांस से पता चलता है कि लगभग दो-तिहाई भारतीय पहले ही वायरस के संपर्क में आ चुके हैं. जहां कम जोखिम होगा, वहां स्थानीय प्रकोप होंगे.'' भारत ने वर्तमान में अपनी 11 फीसद वयस्क आबादी को पूरी तरह से टीका लगाया है और 37 फीसद ने कम से कम एक खुराक ली है.

नीति आयोग के नवीनतम आकलन के मुताबिक, महामारी की संभावित तीसरी लहर में देश भर में प्रति दिन चार से पांच लाख संक्रमण हो सकते हैं, और उसमें अस्पताल में अनुमानित 23 फीसद भर्ती दर से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर दो लाख समर्पित गहन देखभाल इकाई (आइसीयू) बिस्तरों की जरूरत होगी. राज्यों को इसके अनुसार तैयारी करने को कहा गया है. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया कहते हैं, ''जो भी होगा वह किसी नए कोविड स्ट्रेन के आने पर भी निर्भर करता है.''

लेकिन यह लहर कब आएगी? गृह मंत्रालय के विशेषज्ञ पैनल ने हाल में भविष्यवाणी की थी कि तीसरी लहर सितंबर और अक्तूबर के बीच किसी भी वक्त देश में आ सकती है. इसने आइआइटी, कानपुर के वैज्ञानिकों के एक समूह के गणितीय मॉडलिंग का इस्तेमाल किया, जिन्होंने दूसरी लहर के चरम पर पहुंचने की सटीक भविष्यवाणी की थी. गृह मंत्रालय की रिपोर्ट में तीन भविष्यवाणियां हैं—पहले परिदृश्य के अनुसार, तीसरी लहर अक्तूबर में चरम पर पहुंच सकती है, जिसमें प्रति दिन 3,20,000 पॉजिटिव मामले सामने आ सकते हैं; दूसरे परिदृश्य के मुताबिक, नए और ज्यादा विषाणुजनित रूपों के उभार के साथ तीसरी लहर सितंबर में चरम पर पहुंच सकती है, जिसमें रोजाना पांच लाख पॉजिटिव मामले आ सकते हैं और तीसरे परिदृश्य के अनुसार, तीसरी लहर अक्तूबर के अंत में प्रति दिन दो लाख पॉजिटिव मामलों के साथ चरम पर पहुंच सकती है.

क्या कोविड-19 भारत में स्थानिक बन जाएगा?

अगर भारत स्थानिक स्थिति में प्रवेश कर रहा है, जैसा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सौम्या स्वामीनाथन ने बताया था, तो यह अहम है कि नए स्ट्रेनों को नियंत्रित किया जाए. स्थानिक अवस्था में होने का अर्थ है कि वायरस लगातार मौजूद है, और कम टीकाकरण या ऐंटीबॉडी वाले विभिन्न क्षेत्रों में कम से लेकर मध्यम स्तर तक संक्रमण हो रहा है—जैसा अभी हो रहा है. डॉ. रेड्डी कहते हैं, ''अगर पर्याप्त लोगों में वायरस के प्रति प्रतिरोधक क्षमता है, तो यह छोटे इलाकों में लक्षण पैदा कर सकता है, पर यह बीमारी का कारण नहीं बनता है. यह कब होगा पता चलना संभव नहीं है.'' वैसे, अगर वायरस को म्यूटेट करने के मौके मिलते रहें तो ऐसा नहीं होगा.

पहले से ही एक नया खतरा मंडरा रहा है. दक्षिण अफ्रीका के संचारी रोगों के राष्ट्रीय संस्थान और क्वाजुलु-नेटाल रिसर्च इनोवेशन ऐंड सीक्वेंसिंग प्लेटफॉर्म ने सी.1.2 संस्करण के अपने नए विश्लेषण से वैश्विक खतरे की घंटी बजा दी है. वैज्ञानिकों ने पाया कि नए स्ट्रेन में चीन के वुहान में उभरे मूल कोविड-19 स्ट्रेन और अब तक दुनियाभर में पाए गए अन्य सभी प्रकार के वैरिएंट ऑफ कंसर्न (वीओसी) या वैरिएंट ऑफ इंट्रेस्ट (वीओआइ) की तुलना में अधिक म्यूटेशन होता है. अध्ययन में कहा गया है कि सी.1.2 संस्करण की म्यूटेशन दर (प्रति वर्ष 41.8 म्यूटेशन) अन्य संस्करणों की फिलहाल दिखाई गई वैश्विक म्यूटेशन दर से लगभग दोगुनी तेज है. चीन, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, पुर्तगाल, स्विट्जरलैंड, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य और मॉरिशस जैसे देशों में इस स्ट्रेन की पुष्टि हुई है. विशेषज्ञों का कहना है कि यह केवल समय की बात है कि यह कब भारत पहुंचता है. इस स्ट्रेन में डेल्टा संस्करण जैसे भी कुछ म्यूटेशन होते हैं, जो इसे अन्य कोविड स्ट्रेनों के खिलाफ बने ऐंटीबॉडी से बचने में मदद कर सकते हैं. इज्राएल में 60 फीसद टीकाकरण के बाद भी लोग डेल्टा संस्करण से संक्रमित हो रहे हैं.

आइएनएसएसीओजी ने अब तक भारत से वायरस के 67,699 नमूने लिए हैं. इसके अलावा, राज्यों ने 11,016 नमूनों के सिक्वेंस साझा किए हैं. यह भारत में कोविड से संक्रमित लोगों का मात्र 0.002 फीसद है. यह महत्वपूर्ण है कि अगर भारत को निरंतर स्थानिकता का प्रबंधन करना है, तो संचरण को कम रखने के लिए रोकथाम के उपायों के साथ-साथ स्ट्रेनों की निगरानी भी काफी बढ़ानी होगी. ■

पंजाब

मर्ज बढ़ता ही जा रहा

अनिलेश एस. महाजन

एएनआइ

नई दिल्ली में 30 अगस्त को राहुल गांधी से उनके आवास पर मिलने के एक दिन बाद कांग्रेस महासचिव और पार्टी के पंजाब प्रभारी हरीश रावत को 25 अगस्त को दिया अपना बयान आंशिक रूप से वापस लेना पड़ा. इस बयान में उन्होंने कहा था कि पंजाब कांग्रेस आगामी विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह की अगुआई में ही लड़ेगी. इसे सुधारते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश कांग्रेस में, ''पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी (पीसीसी) के मुखिया नवजोत सिंह सिद्धू (समेत)'' कई मशहूर नेता हैं. पर इसके साथ ही उन्होंने सिद्धू खेमे की ओर से जारी बयानबाजी पर आलाकमान की नाराजगी का भी इजहार कर दिया. रावत ने 31 अगस्त को चंडीगढ़ जाकर सिद्धू और उनके खेमे के लोगों से बात भी की. अगले दिन अमरिंदर से मिलकर उन्होंने बिजली की दरें कम करने का उपाय करने को कहा, जो कि सिद्धू खेमे की मांगों में से एक है. रावत ने दोनों खेमों को साफ कह दिया है कि अमरिंदर को बदलने की आलाकमान की कोई योजना नहीं हैं. हां, जल्द ही चुनाव संबंधी समितियों में सभी को एडजस्ट किया जाएगा.

अमरिंदर और सिद्धू खेमों में चल रही शत्रुता के मद्देनजर इस तरह की असमंजस की स्थिति ने पंजाब में कांग्रेस के सामने कई समस्याएं खड़ी कर दी हैं. इसमें यह भी साफ नहीं है कि सूबे के दोनों नेताओं के बीच की खींचतान में पार्टी नेतृत्व आखिर कहां खड़ा है. ऐसे में, इस खींचतान ने अगले साल फरवरी में उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मणिपुर और गोवा के साथ होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए रणनीतियों को बेहद जटिल बना दिया है. फिलहाल कांग्रेस की प्रदेश इकाई में हड़कंप मचा हुआ है. पिछले चार महीनों में अमरिंदर और सिद्धू के खेमे के बीच लड़ाई ने पार्टी की स्थिति को नुक्सान पहुंचाया है, यहां तक कि अकाली दल और भाजपा को फिर से जमीन हासिल होने लगी है.

एक असरदार चुनावी अभियान शुरू करने के लिए कांग्रेस को फौरन अपने घर में व्यवस्था ठीक करनी होगी. समस्या सिद्धू और अमरिंदर को एक साथ लाने की और आक्रामक सिद्धू पर लगाम लगाने की है. जाहिरा तौर पर राहुल और प्रियंका गांधी का समर्थन प्राप्त सिद्धू को महज महीने भर पहले, 23 जुलाई को मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह के विरोध के बावजूद प्रदेश कांग्रेस कमेटी का मुखिया नियुक्त कर दिया गया. अब, सिद्धू के साथ आ खड़े हुए चार कैबिनेट मंत्रियों—तृप्त राजिंदर बाजवा, सुखजिंदर रंधावा, चरनजीत चन्नी और सुखविंदर सरकारिया—के अलावा सिद्धू के ही वफादार, राज्य इकाई के नवनियुक्त महासचिव (संगठन) परगट सिंह ने अमरिंदर को मुख्यमंत्री पद से हटाए जाने की मांग कर दी है. इसकी पटकथा पहले जैसी ही है, जिसमें सिद्धू ने पहले मुख्यमंत्री को हटाने की मांग की थी और उसके बाद उनको प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बना दिया गया था. लेकिन इस बार अमरिंदर ने अपने हरबा-हथियार दुरुस्त कर लिए थे.

मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिद्धू के खेमों के बीच चल रही मुठभेड़ ने पंजाब कांग्रेस को बुरी तरह चोट पहुंचाई है

मुख्यमंत्री ने सियासी हालात पर चर्चा के लिए 10 अगस्त को पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी से मुलाकात की. 24 अगस्त को असंतुष्ट नेताओं ने राहुल गांधी से मुलाकात के लिए दिल्ली में डेरा डाल दिया, लेकिन उन्हें राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) के.सी. वेणुगोपाल ने हरीश रावत से मिलने के लिए देहरादून भेज दिया. असंतुष्टों का कहना है कि अमरिंदर 2015 में गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की कथित घटनाओं और उसके बाद प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की गोलीबारी जैसे भावनात्मक मुद्दों से निबटने में विफल रहे हैं. उन्होंने उन पर ड्रग माफियाओं पर नकेल कसने में नाकाम रहने, इजारेदार व्यापारिक सिंडीकेटों के साथ नरमी बरतने और यहां तक कि शिरोमणि अकाली दल के साथ मिलीभगत करने का भी आरोप लगाया.

ये नेता सिद्धू के प्रशंसक कतई नहीं हैं लेकिन बताते हैं, उन्होंने दिल्ली में कुछ वरिष्ठ नेताओं से मिले आश्वासन के बाद अपनी निष्ठा अमरिंदर से हटाकर सिद्धू की तरफ की है. इनमें से ज्यादातर का कांग्रेस के बाहर कोई भविष्य नहीं है और आखिरकार उनको पार्टी लाइन पर ही चलना होगा. राजनैतिक

बीच में सत्ता पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू (क्रमशः बाएं से दूसरे और तीसरे)

विश्लेषकों का मानना है कि अमरिंदर के खिलाफ उनकी बगावत उस सुगबुगाहट की उपज है जिसमें अगले कैबिनेट फेरबदल में उनको बाहर का रास्ता दिखाए जाने की भनक लगी थी. पिछले महीने, बाजवा के भतीजे नवजोत सिंह महल का होशियारपुर के जिला पुलिस प्रमुख के पद से तबादला करके जालंधर में सशस्त्र पुलिस के कमांडेंट के कम महत्वपूर्ण पद पर भेज दिया गया. पंजाब की विभिन्न जांच एजेंसियां फिर से विभिन्न घोटालों से जुड़े दस्तावेज इकट्ठा करने लग गई हैं, जिनमें नकली बीज, नकली और अवैध शराब बेचने का मामला भी शामिल है. इस बीच, प्रवर्तन निदेशालय ने पहले ही सिंचाई घोटाले में जांच को तेजी दे दी है. कुछ बागी मंत्री और विधायकों ने पहले ही इन जांचों में अपने नाम उछलते भांप लिए हैं.

कांग्रेस नेताओं के लिए असली सिरदर्द आक्रामक सिद्धू पर लगाम लगाना है. 27 अगस्त को अमृतसर में एक पार्टी समारोह में सिद्धू ने पार्टी आलाकमान को चुनौती देते हुए कहा कि अगर उन्हें निर्णय लेने की अनुमति नहीं दी गई, तो ''ईंट नाल ईंट वजा दवांगा (ईंट से ईंट बजा दूंगा). हालांकि, इससे पहले उन्होंने अपने विवादास्पद सलाहकार मालविंदर सिंह माली को हटाने की रावत की मांग को स्वीकार कर लिया था क्योंकि माली ने मानव खोपड़ी के ढेर के पास खड़ी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का एक स्केच पोस्ट किया था और विवादों में घिर गए थे. इस स्केच में गांधी के हाथ में एक बंदूक थी, जिसके नाल पर एक खोपड़ी टंगी थी—एक पंजाबी पत्रिका के 1989 के अंक का कवर पेज था, जिसको उन्होंने संपादित किया था. फिर, 15 अगस्त को एक पोस्ट करके माली ने दावा किया कि कश्मीर एक अलग देश था और भारत और पाकिस्तान दोनों ने इस पर अवैध कब्जा किया है. यहां तक कि सिद्धू के वफादार तृप्त राजिंदर बाजवा ने भी इसे राष्ट्रविरोधी सामग्री बताया.

खासतौर पर यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब 17 अगस्त को लाहौर किले में महाराजा रणजीत सिंह (खालसा साम्राज्य के संस्थापक) की मूर्ति कथित तौर पर पाकिस्तान में एक कट्टरपंथी समूह तहरीक-ए-लब्बैक के एक गुर्गे के हाथों तोड़े जाने की आलोचना न करने को लेकर अमरिंदर का खेमा सिद्धू से नाराज है. सिद्धू अफगानिस्तान के तालिबान के सत्ता में आने के घटनाक्रम पर भी खामोश हैं, जिसमें कई हिंदू और सिख परिवारों और अफगान नागरिकों को अपना देश छोड़कर भारत आने का इंतजार करना पड़ रहा है.

सिद्धू का चाहे कोई कदम हो या फिर उनकी खामोशी, उन्होंने इससे पहले भी कई बार इसी तरह बखेड़े खड़े किए हैं. अगस्त 2018 में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के रूप में इमरान खान के शपथ ग्रहण समारोह में पाकिस्तान के सेना प्रमुख कमर जावेद बाजवा को गले लगाने के लिए उनकी काफी आलोचना हुई थी. उस वक्त दीनानगर, पठानकोट और उरी में भारतीय सुरक्षा प्रतिष्ठानों पर आतंकी हमलों के बाद भारत-पाकिस्तान के संबंध और बिगड़ गए थे. फरवरी 2019 में पुलवामा में सीआरपीएफ के जवानों पर आत्मघाती हमले के बाद सिद्धू पर पाकिस्तानी प्रतिष्ठान की आलोचना करने से कतराने का भी आरोप लगाया गया था.

मुख्यमंत्री का खेमा इस बात से चिंतित है कि सिद्धू का पाकिस्तान को लेकर सहानुभूतिपूर्ण रवैया उदारवादी सिखों और हिंदुओं को कांग्रेस से दूर कर देगा. इस बीच, पार्टी आलाकमान से यही फीडबैक मिला है कि अमरिंदर सिंह पंजाब में सत्ताविरोधी रुझान का सामना कर रहे हैं और सिद्धू को पदोन्नयन से इस रुझान को काटने में मदद मिलेगी. प्रदेश इकाई का मुखिया बनाए जाने के बाद भी सिद्धू लगातार मुख्यमंत्री पर सीधा हमला बोल रहे हैं. अमरिंदर खेमे के नेता इस बात की भी शिकायत कर रहे हैं कि प्रदेश इकाई और मोर्चों के सभी पदाधिकारी सामान्य तौर पर पार्टी की तरफ से एआइसीसी (अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी) के लेटरहेड पर छपे पत्रों के जरिए और राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) के दस्तखत से नियुक्त किए जाते हैं, लेकिन सिद्धू लोगों की नियुक्ति अपने लेटरहेड पर ही कर रहे हैं, और पार्टी की आधिकारिक प्रक्रियाओं को धता बता रहे हैं.

कांग्रेस के एक आला नेता *इंडिया टुडे* से कहते हैं, सिद्धू को यह बात समझनी चाहिए कि वे प्रदेश इकाई के महज नियुक्त किए हुए अध्यक्ष हैं—इतने भर से पंजाब कांग्रेस उनकी मिल्कियत नहीं हो जाती. पर कांग्रेस के वही आला नेता इस बात की ओर भी ध्यान दिलाते हैं कि किसी को नहीं पता गांधी भाई-बहन ने उन्हें कितनी छूट दी हुई है. वैसे, रावत ने पंजाब कांग्रेस के असंतुष्ट नेतओं को आलाकमान का संदेश दे दिया है कि विधानसभा चुनाव के मद्देनजर मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह को बदलने की उनकी मांग जायज नहीं है. ■

मंदार देवधर

भाजपा-शिवसेना जंग

मुंबई का राजा कौन

किरण डी. तारे

मुंबई समेत महाराष्ट्र के 15 बड़े नगर निगमों के चुनाव नजदीक आ रहे हैं इसलिए भाजपा और शिवसेना के बीच जारी शीत युद्ध के और तीखे होने के आसार हैं. राज्य अभी भी कोविड-19 महामारी के मोर्चे पर संकट का सामना कर रहा है, ऐसे में दोस्त से दुश्मन बने दल एक-दूसरे को नीचा दिखाकर अपने नंबर बढ़ाने का कोई मौका नहीं गंवाना चाहते.

सत्तारूढ़ शिवसेना ने पहला हमला 24 अगस्त को किया जब महाराष्ट्र पुलिस ने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने के लिए भाजपा नेता और केंद्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री नारायण राणे को रत्नागिरि में गिरफ्तार किया. रायगढ़ के जिला न्यायाधीश ने उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया लेकिन उसी रात उन्हें जमानत भी दे दी गई. शिवसेना के पूर्व कद्दावर नेता और महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री राणे ने 18 अगस्त को मुंबई से सिंधुदुर्ग तक की 10 दिवसीय 'जन आशीर्वाद यात्रा' शुरू की थी. 23 अगस्त को महाड़ (रायगढ़ जिले) में पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने देश की आजादी के 75वें वर्ष से अंजान होने को लेकर ठाकरे का मजाक उड़ाया था. राणे ने कहा था, ''अपना भाषण देते समय, वे (ठाकरे) मुख्य सचिव की ओर मुड़े और पूछा कि यह स्वतंत्रता का कौन-सा वर्ष है? मैं वहां होता तो इसके लिए उन्हें कसके एक थप्पड़ देता.''

तब से शिवसेना और भाजपा के बीच संबंध कटुता के नए स्तर पर पहुंच गए हैं. बयान पर हिंसक आक्रोश का प्रदर्शन करते हुए शिवसेना कार्यकर्ताओं ने नासिक में भाजपा कार्यालय पर पथराव किया. पूरे राज्य में शिवसेना कार्यकर्ताओं ने राणे को 'कोंबडी चोर (मुर्गी चोर)' बताने वाले होर्डिंग भी लगाए. वे केंद्रीय मंत्री के लिए इस अपमानजनक शब्द का इस्तेमाल इसलिए करते हैं क्योंकि मुंबई में अपनी युवावस्था में राणे चिकन की दुकान चलाया करते थे. इसके जवाब में, भाजपा कार्यकर्ताओं ने ठाकरे को 'घर कोंबड़ा (घर में घुसा रहने वाला)' बताते हुए पूरे शहर में होर्डिंग लगा दिए. 2018 के बाद दोनों दलों के बीच एक दूसरे के प्रति अपमानजनक शब्दों के प्रयोग की पहली हाइ-प्रोफाइल घटना है. 2018 में लखनऊ के एक कार्यक्रम में योगी आदित्यनाथ के छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते समय खड़ाऊं नहीं उतारने पर उद्धव ने टिप्पणी की थी कि योगी को इसके लिए चप्पलों से पीटा जाना चाहिए. हालांकि मामला सुलझ गया था लेकिन भाजपा

सियासी जंग 24 अगस्त को मुंबई में नारायण राणे के जुहू स्थित आवास के बाहर शिवसेना-भाजपा कार्यकर्ताओं की भिड़ंत हो गई

कार्यकर्ताओं ने शिवसेना प्रमुख के खिलाफ नासिक और पुणे में अब (तीन साल बाद) शिकायत दर्ज कराई है. पार्टी ने भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ समारोह के बारे में ठाकरे को 'स्मरण कराने' के लिए 75,000 पत्र भेजने का अभियान भी शुरू किया है.

28 अगस्त को राणे ने आग में घी डालते हुए शिवसेना के अतीत के कुछ 'गंदे कार्यों' का पर्दाफाश करने की धमकी दी. शिवसेना के कभी नंबर-2 रहे राणे ने अपने गृह जिले सिंधुदुर्ग में जनता को संबोधित करते हुए कहा, ''रमेश मोरे को क्यों मारा गया? जय (जयवंत) जाधव की हत्या की योजना किसने बनाई? कौन अपनी भाभी के चेहरे पर तेजाब फेंकना चाहता था? मुझे सबके उत्तर पता हैं और मैं उन्हें सही समय पर जाहिर भी करूंगा.'' मोरे और जाधव की 2000 की शुरुआत में जब हत्या हुई थी, वे शिवसेना के विधायक थे. उनकी हत्या क्यों की गई यह बात इतने वर्षों बाद भी रहस्य बनी हुई है. 'भाभी' वाली टिप्पणी पर कानाफूसी और अटकलें तो चल रही हैं लेकिन फिलहाल यह सब यहीं तक सीमित है.

इस बीच, मुंबई में बार मालिकों से कथित जबरन वसूली के मामले में ठाकरे के एक भरोसेमंद सिपहसालार, परिवहन मंत्री अनिल परब को 29 अगस्त को प्रवर्तन निदेशालय की ओर से नोटिस भेजने के साथ केंद्र ने लड़ाई को आगे लेकर जाने के संकेत दे दिए हैं. बर्खास्त सहायक पुलिस निरीक्षक सचिन वझे ने कथित तौर पर परब पर आरोप लगाए थे कि वे हर महीने 100 करोड़ रुपए की जबरन वसूली करने का दबाव बना रहे थे. ईडी ने अब परब को अपने मुंबई दफ्तर में पेश होने और रत्नगिरि के दापोली में अपने लक्जरी रिसॉर्ट के लिए आय के स्रोत बताने को कहा है. 30 अगस्त को ईडी ने कथित तौर पर बेहिसाब अचल संपत्तियां रखने के लिए यवतमाल-वाशिम से शिवसेना सांसद भावना गवली के कार्यालयों पर भी छापे मारे.

विवाद की जड़ बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) के नियंत्रण की लड़ाई है जो एशिया का सबसे अमीर नगर निकाय है. इसका 2021-22 का वार्षिक बजट 39,039 करोड़ रुपए है, जो आठ राज्यों के बजट से

बीएमसी में बढ़ती ताकत

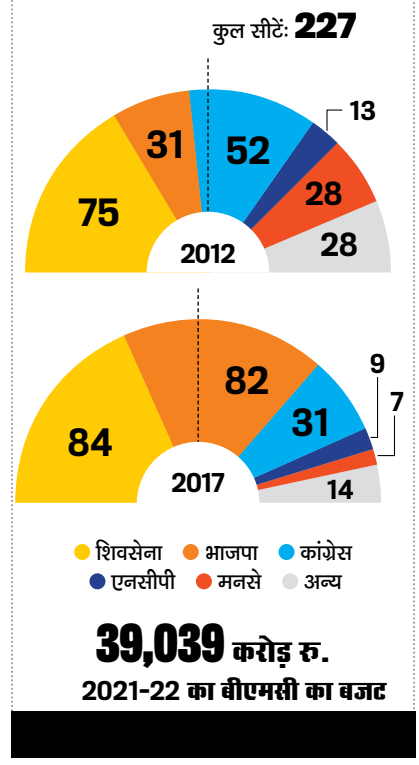

39,039 करोड़ रु.
2021-22 का बीएमसी का बजट

मराठी भाषी निम्न मध्यम वर्ग के वोटों के लिहाज से नारायण राणे भाजपा के लिए पॉइंट मैन हैं

ज्यादा है. बीएमसी चुनाव अगले साल के आरंभ में होने हैं और भाजपा इसमें शिवसेना के वर्चस्व को खत्म करना चाहती है, जिस पर 1997 से ही शिवसेना का कब्जा है.

मराठी भाषी निम्न मध्यम वर्ग के वोटों की लड़ाई में राणे भाजपा के लिए अब तक का सबसे अच्छा दांव रहे हैं. भाजपा के एक रणनीतिकार को लगता है कि राणे मुंबई में बसे कोंकण मूल के लोगों के वोट को प्रभावित कर सकते हैं, हालांकि अतीत में उन पर समुदाय के खिलाफ हिंसा भड़काने के आरोप भी लगे हैं. भाजपा 2017 में शिवसेना की 84 सीटों के मुकाबले केवल दो सीटें पीछे रह गई थी, लेकिन परेल, लालबाग और भायखला जैसे सेना के प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में पैठ बनाने में भाजपा विफल रही थी. नाम न छापने का अनुरोध करते हुए भाजपा के एक रणनीतिकार कहते हैं, ''राणे इन क्षेत्रों में हमारे लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगे. अगर हम मध्य मुंबई जीत जाते हैं तो हम बीएमसी में ठाकरे युग का अंत कर सकते हैं.''

राणे को आगे बढ़ाकर पार्टी ने एक बड़ा जुआ खेला है. राजनीतिक विश्लेषक हेमंत देसाई का कहना है कि अगर भाजपा राणे को आक्रामक तरीके से आगे बढ़ाती है तो इससे शिवसेना के ऐसे बहुत से हमदर्द जिनमें बिखराव है, एकजुट हो सकते हैं. शिवसेना प्रवक्ता अरविंद सावंत का कहना है कि राणे ने सारी विश्वसनीयता खो दी है. दक्षिण मुंबई, जिसमें परेल और भायखला शामिल हैं, के लोकसभा सांसद सावंत कहते हैं, ''भाजपा बदले की राजनीति कर रही है. मुंबईवासियों को शिवसेना की विकास की राजनीति पर पूरा भरोसा है.''

इस बीच, मुंबई कांग्रेस अध्यक्ष अशोक 'भाई' जगताप ने घोषणा की है कि पार्टी बीएमसी चुनाव स्वतंत्र रूप से लड़ेगी. सत्तारूढ़ महाराष्ट्र विकास अघाड़ी (एमवीए) गठबंधन के वोटों के बंटने के साथ, भाजपा की योजना कुछ सीटों पर शिवसेना की कट्टर प्रतिद्वंद्वी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) को भी खड़ा करने की है. शिवसेना के असर वाले इलाकों में भाजपा और मनसे के बीच अंदरूनी समझौते की संभावना है. देसाई कहते हैं, ''बीएमसी में सत्ता उद्धव ठाकरे के लिए ऑक्सीजन की तरह है. भाजपा शिवसेना को वेंटिलेटर पर डालने की पूरी कोशिश करेगी.''

उद्धव ने बीएमसी चुनाव के लिए पत्ते अभी तक नहीं खोले हैं. वे दो प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं, दक्षिण और उत्तरी मुंबई को जोड़ने वाली तटीय सड़क और मेट्रो लाइन के अंधेरी-दहीसर खंड पर कड़ी नजर रख रहे हैं. शिवसेना के एक अंदरूनी सूत्र के मुताबिक, ठाकरे को उम्मीद है कि सहयोगी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) अल्पसंख्यक वोटों में सेंध लगाकर मददगार बनेगी. चूंकि अल्पसंख्यक वोट कांग्रेस, एआइएमआइएम, समाजवादी पार्टी और एनसीपी के बीच बंटते हैं, ठाकरे को अभी भी सबसे ज्यादा उम्मीद मराठीभाषी निम्न मध्यम वर्ग से है जो शिवसेना के मुख्य मतदाता हैं. ■

ग्राफिकः तन्मय चक्रवर्ती

मोर्चे पर आगे
गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत 2020 में स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में

एएनआइ

गोवा

सियासी हमसफर की तलाश

गोवा विधानसभा के चुनाव आए नजदीक, संभावित गठबंधनों की तलाश में जुटीं राजनैतिक पार्टियां

किरण डी. तारे

मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत की अगुआई में गोवा सरकार ने 1 सितंबर से हर महीने हर घर को 16,000 लीटर पानी मुफ्त देने का वादा किया है. इससे करीब तीन लाख परिवारों को पानी का एक भी पैसा नहीं देना पड़ेगा, मगर राज्य सरकार को हर महीने 11.5 करोड़ रुपए के राजस्व की चपत लगेगी. यह बिल्कुल पहली बार है जब गोवा में सरकार ने लोगों मुफ्त रेवड़ी बांटी है, जो याद दिलाता है कि चुनाव करीब हैं.

गोवा फरवरी 2022 में नई सरकार चुनेगा. लिहाजा राज्य की तमाम पार्टियां सियासी हमसफर को तलाश में जुट गई हैं. भाजपा भांपने में लगी है कि महाराष्ट्र गोमांतक पार्टी (एमजीपी) उसके साथ आने को कितनी तैयार है, वहीं तमाम निगाहें कांग्रेस और गोवा फॉरवर्ड पार्टी (जीएफपी) के बीच संभावित गठबंधन पर लगी हैं. जीएफपी इच्छुक दिखाई देती है, पर कांग्रेस अपनी फितरत के मुताबिक लेटलतीफी में फंसी है.

जीएफपी के अध्यक्ष विजय सरदेसाई दावा कर रहे हैं कि उन्हें कांग्रेस के गोवा प्रभारी दिनेश गुड्डू राव ने बताया है कि पार्टी आलाकमान ने गठबंधन की मंजूरी दे दी है, वहीं राज्य कांग्रेस अध्यक्ष गिरीश चोडांकर के मुताबिक राज्य के नेताओं को अभी ऐसी कोई सूचना नहीं मिली है. इस बीच बेसब्र सरदेसाई ने चार सीटों मेंड्रम, हल्डोना, सेंट आंद्रे और थिविम से जीएफपी के उम्मीदवारों की घोषणा भी कर दी. वे कहते हैं, ''कांग्रेस को गणेश चतुर्थी (10 सितंबर) तक गठबंधन के बारे में फैसला ले लेना चाहिए.'' राजनैतिक जानकार राजन देसाई मानते हैं कि कांग्रेस-जीएफपी गठबंधन भाजपा की10 साल की हुकूमत के सत्ता में लौटने की संभावनाओं को पलीता लगा सकता है. देसाई कहते हैं, ''अगर वे साथ मिलकर लड़ें तो दक्षिण गोवा में भाजपा को बहुत नुक्सान पहुंचा सकते हैं, जहां अल्पसंख्यक वोट बड़ी तादाद में हैं.''

कांग्रेस और जीएफपी 2017 में भी ऐसी ही स्थिति में थीं. तब दोनों के बीच गठबंधन की बातचीत आखिरी वक्त बेपटरी हो गई जब राज्य कांग्रेस अध्यक्ष लुइजिन्हो फलेरो ने वादा तोड़कर सरदेसाई की मजबूत सीट फटोर्डा से जोस डी'सिल्वा को मैदान में उतार दिया था. बदले में जीएफपी ने नावेलिम में फलेरो के खिलाफ निर्दलीय एडविन सूजा को समर्थन दिया और चुनाव के बाद कांग्रेस की गठबंधन की गुजारिश ठुकराकर अपनी पार्टी के तीन विधायकों का समर्थन भाजपा को दे दिया, जिसकी बदौलत मनोहर पर्रीकर मुख्यमंत्री बने.

लगता है, कांग्रेस ने 2017 में सबसे बड़ी पार्टी होने के बाद भी सरकार न बना पाने की तत्कालीन महासचिव दिग्विजय सिंह की नाकामी से सबक सीख लिया है. इस बार पी. चिदंबरम गोवा के पर्यवेक्षक हैं. लेकिन पूर्व वित्त मंत्री ने भी 26 अगस्त को पणजी में कहा, ''हम सभी 40 सीटों की तैयारी कर रहे

बदल गया है वक्त

कांग्रेस 2017 में 40 सदस्यीय विधानसभा में 17 सीटें पाकर सबसे बड़ी पार्टी थी. मुख्यमंत्री मनोहर पर्रीकर की मृत्यु के बाद अगस्त 2018 में अतानासियो मोनसेराते ने उपचुनाव में पणजी की सीट जीती. कांग्रेस ने 18 सीटें जीती थीं पर दलबदल से पांच पर सिमट गई*

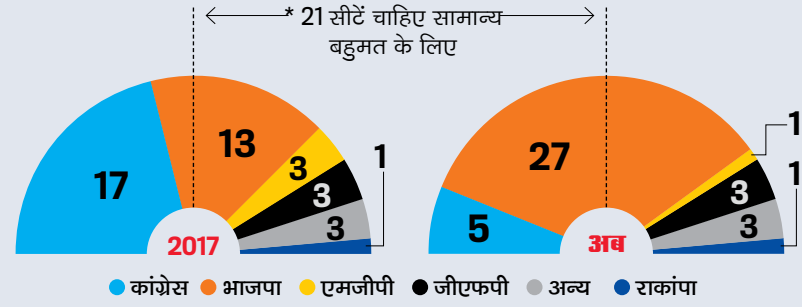

अल्पमत से बहुमत

भाजपा ने बीते तीन साल में दूसरी पार्टियों में सेंध लगाकर 15 विधायक जुटाए, जो उसके मूल विधायकों से भी ज्यादा हैं

↘ 7 अप्रैल 2017: कांग्रेस के दिग्गज विश्वजीत राणे विधायक की शपथ लेने से पहले ही पाला बदलकर भाजपा में चले गए. उन्होंने उपचुनाव भाजपा के टिकट पर जीता और स्वास्थ्य मंत्री बनाए गए

↘ 17 अक्तूबर 2018: दो कांग्रेस विधायक सुभाष शिरोडकर और दयानंद सोप्ते पार्टी छोड़कर भाजपा में आए. दोनों ने बाद में भाजपा के टिकट पर उपचुनाव जीते

↘ 27 मार्च 2019: एमजीपी के मनोहर अजगांवकर और दीपक पावस्कर भाजपा में शामिल हुए. अजगांवकर को उप-मुख्यमंत्री बनाया गया, जबकि पावस्कर को पीडब्ल्यूडी की कमान मिली

↘ 11 जुलाई 2019: दस कांग्रेस विधायक—चंद्रकांत कावलेकर, अतानासियो मोनसेराते, जेनिफर मोनसेराते, फिलिप नेरी रोड्रिगेज, नीलकांत हलरंकर, फ्रांसिस्को सिल्वेरा, फ्लाफासियो डायस, इनसिडोर फर्नांडीस, विल्फ्रेड डीसा और टोनी फर्नांडीस—पाला बदलकर भाजपा में आ गए.

हैं. गठबंधन की अभी कोई बात नहीं है.''

कांग्रेस और जीएफपी के बीच दरार पैदा करने की गरज से भाजपा ने 18 अगस्त को कांग्रेस के फटोर्डा ब्लॉक प्रमुख पिदादे नरोन्हा और संयोजक जोसफ सिल्वा को पार्टी में शामिल कर लिया. नरोन्हा अनुसूचित जनजाति के हैं और फटोर्डा में 25 फीसद वोट इसी समुदाय के हैं. भाजपा के उम्मीदवार दामोदर नाइक भी अनुसूचित जनजाति के हैं. कांग्रेस और जीएफपी अगर फटोर्डा में मतभेद सुलझा लें, तो भाजपा को तगड़ी टक्कर दे सकते हैं.

भाजपा की फिसलन भरी जमीन

केंद्रीय पर्यटन मंत्री श्रीपद नाइक ने कहा है कि भाजपा-एमजीपी गठबंधन से हिंदू वोटों का बंटवारा रोकने में मदद मिल सकती है. एमजीपी ने भी भाजपा या किसी भी दूसरी पार्टी के साथ गठबंधन की संभावनाओं को खारिज नहीं किया है. उसके अध्यक्ष सुदिन धावलिकर ने कहा कि अंतिम निर्णय पार्टी की केंद्रीय समिति करेगी. हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि एमजीपी 12 सीटों पर चुनाव लड़ने के साथ कुछ अन्य सीटों पर निर्दलीयों का समर्थन करेगी. इसे पार्टी के अकेले चुनाव लड़ने का संकेत माना जा सकता है.

सावंत पहले भाजपा मुख्यमंत्री हैं जिन्हें दो-तिहाई विधायकों का समर्थन हासिल है. भाजपा के 27 विधायक हैं और एक निर्दलीय गोविंद गाउडे उसे समर्थन दे रहे हैं. भाजपा गोवा को लेकर संजीदा है, जुलाई में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा और महासचिव (संगठन) बी.एल. संतोष की ताबड़तोड़ यात्राएं कीं.

भाजपा ने साफ कर दिया है कि वह अगला चुनाव सावंत की अगुआई में लड़ेगी. अलबत्ता कई महत्वाकांक्षी मंत्री फच्चर फंसा सकते हैं. स्वास्थ्य मंत्री विश्वजीत राणे, राज्यसभा सांसद प्रमोद तेंडुलकर और राज्य पार्टी अध्यक्ष सदानंद शेट तानावड़े ने भी अपनी दावेदारी पेश कर दी है. यही नहीं, राणे के अलावा कम से कम तीन मंत्री अपनी पत्नियों के लिए टिकट चाहते हैं. उप-मुख्यमंत्री चंद्रकांत कावलेकर सांगुएम सीट से पत्नी सावित्री, राणे पोरिएम से पत्नी दिव्या, पोत मंत्री माइकल लोबो सिओलिम सीट से पत्नी देलिलाह, पूर्व मंत्री पांडुरंग मदकैकर कुंबार्जुआ में अपनी जगह अपनी पत्नी जैनेट को लड़ाना चाहते हैं.

सावित्री और देलिलाह तो राजनीति में सक्रिय हैं. सावित्री सांगुएम से 2017 में कांग्रेस की टिकट चुनाव हार गई थीं, जबकि देलिलाह ग्राम पंचायत की सदस्य हैं. लोबो की पत्नी को सिओलिम से टिकट नहीं मिलती तो वे दो सीटों सिओलिम और सालिगाव में भाजपा की मुश्किल खड़ी कर सकते हैं. कावलेकर भी दक्षिण गोवा की चार सीटों पर पकड़ रखते हैं और भाजपा की संभवनाएं धूमिल कर सकते हैं. दीव्या अगर निर्दलीय बनकर जीत जाती हैं तो राणे मुख्यमंत्री पर सौदेबाजी कर सकते हैं.

सुर्खियां

मैदान में छोटी पार्टियां

आम आदमी पार्टी (आप) ने 2017 में गोवा की राजनीति में पहला कदम रखा था. तब वह सीटों से हाथ मलती रह गई थी. अब वह भी एमजीपी के साथ गठबंधन पर नजरें गड़ाए है. जुलाई में गोवा यात्रा के दौरान केजरीवाल ने कहा कि अगर उनकी पार्टी सत्ता में आई तो हर माह 300 यूनिट तक बिजली मुफ्त दी जाएगी. 2017 में आप के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार एल्विस गोम्स थे, जो अगस्त में कांग्रेस में चले गए. पार्टी अब महादेव नाईक के भरोसे हैं, जो भाजपा के पूर्व मंत्री हैं और जुलाई में पाला बदलकर आप में आए थे.

पूर्व आप नेता मनोज परब की अगुआई में रिवॉल्यूशनरी गोवन ने उत्तर गोवा में खासकर युवाओं के बीच खासा असर पैदा किया है. परब कहते हैं, ''हमारा फोकस नौजवानों को ताकतवर बनाने पर है.'' रिवॉल्यूशनरी गोवन 2022 में चुनावों में पहली बार उतरेगी और वह भाजपा को मुश्किल पेश कर सकती है.

मुख्यमंत्री सावंत ने भांप लिया है कि सत्ता की राह मुश्किल होगी. लिहाजा वे दो विषयों पर ध्यान दे रहे हैं, जो गोवावासियों के दिल के करीब हैं. ये हैं लौह अयस्क की खुदाई और पर्यटन. उनका कहना है कि नवगठित गोवा खनिज विकास निगम (जीएमडीसी) बनाने का मकसद खनिजों की खुदाई पर निर्भर तीन लाख लोगों को रोजगार देना है. उन्होंने कहा, ''जीएमडीसी कई खदानों की लीज नीलाम करेगा. सरकार 2 करोड़ लाख टन लौह अयस्क की खुदाई करेगी.'' उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री को पत्र लिखकर आग्रह भी किया है कि 1 अक्तूबर से शुरू होने वाले टूरिज्म सीजन से पहले चार्टर उड़ानों को गोवा में उतरने की अनुमति दी जाए. ऐसा होता है तो राज्य के सुस्त पड़े पर्यटन क्षेत्र में नई जान आएगी. ■

इलस्ट्रेशन: सिद्धांत जुमरे

समाचार सार

भाग्यशाली गोरखपुर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दोनों का गोरखपुर से खास रिश्ता है. मोदी ने 2014 और 2019 दोनों बार अपने लोकसभा प्रचार अभियान की शुरुआत इसी जिले से की थी. 2017 में गोरखपुर में ही उन्होंने भाजपा के विधानसभा चुनाव प्रचार की शुरुआत की थी. 2017 में मुख्यमंत्री बनने से पहले आदित्यनाथ लगातार पांच बार गोरखपुर से लोकसभा सांसद रहे हैं. वे गोरखनाथ मठ के महंत भी हैं. इस साल, 18 अक्तूबर को मोदी एक बार फिर से भाजपा के अभियान की शुरुआत गोरखपुर से करेंगे—इस बार 2022 के विधानसभा चुनावों के लिए. क्या गोरखपुर चौथी दफा भी पार्टी के लिए भाग्यशाली साबित होगा?

एएनआइ

छाते की प्रतिस्पर्धा

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री **ममता बनर्जी** को एक नया उपकरण मिल गया है—एक नीला छाता. बारिश हो या धूप, यह छाता हमेशा उनके साथ बना रहता है. राजनैतिक प्रेक्षकों का कहना है कि ममता ने यह नया लुक प्रधानमंत्री मोदी से ही लिया है, जिनकी इस बार लोकसभा के मॉनसून सत्र के दौरान अपना छाता खुद पकड़ने की वजह से काफी तारीफ हुई थी. प्रतिस्पर्धा बढ़ी है तो प्रतीकों की बाढ़ आ गई.

आराम का काम

इकत्तीस अगस्त को वरिष्ठ आइएएस अधिकारी **अनिल मुकीम** खामोशी से गुजरात के मुख्य सचिव के पद से उतर गए और उन्होंने अपने लिए तीसरे सेवा विस्तार की मांग भी नहीं की. उनकी जगह पंकज कुमार ने ली है जो 1986 बैच के अधिकारी हैं. बहरहाल, कोविड से निबटने में राज्य की तैयारियों में मुकीम के योगदान से प्रभावित होकर भाजपा उन्हें रिटायरमेंट के बाद एक प्रमुख पद देने की सोच रही है. खबर है कि मुकीम प्रधानमंत्री कार्यालय में सलाहकार नियुक्त किए जा सकते हैं, और अगर वह राज्य में ही रहना चाहेंगे तो गांधीनगर में गुजरात विद्युत नियामक प्राधिकरण के मुखिया बनाए जा सकते हैं.

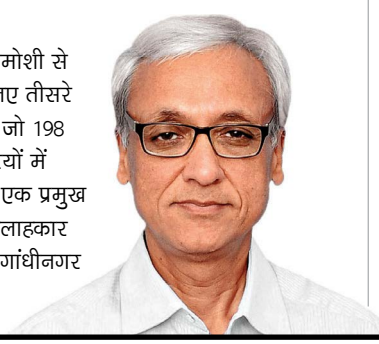

एक और रामाराव

तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) के मुखिया के. तारक रामाराव (केटीआर) अपने मुख्यमंत्री पिता **के. चंद्रशेखर राव** की आंखों के तारे हैं. असल में, हाल ही में, मुख्यमंत्री ने पार्टी के समर्थक एक दंपति के बच्चे का नाम भी केटीआर रख दिया. पार्टी कहती है कि इस दंपति में अलगाव हो चुका था और स्थानीय टीआरएस विधायक ने उन्हें साथ लाने में मदद की थी. कृतज्ञ दंपति ने मुख्यमंत्री से अनुरोध किया कि वे बच्चे का नामकरण करें और केसीआर ने बच्चे का नाम तारक रामाराव रख दिया. भला पारिवारिक नौटंकी के बिना सियासत हो सकती है क्या?

चंद्रदीप कुमार

मितव्ययी मुख्यमंत्री

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री **एम.के. स्टालिन** पार्टी की प्रतिद्वंद्विता का असर सरकार के मितव्ययता अभियान पर नहीं पड़ने देना चाहते. द्रमुक सरकार को पिछली सरकार से 65 लाख स्कूल बैग मिले हैं जिनकी कीमत 13 लाख रुपए है. इन पर अन्नाद्रमुक पूर्ववर्तियों जे. जयललिता और ई.के. पलानीस्वामी की तस्वीरें हैं और इन्हें स्कूली बच्चों में मुफ्त बांटा जाना था. बैग में बदलाव के बजाए, स्टालिन ने इन्हें अविलंब बांटने का निर्देश दिया. वे कहते हैं कि यह बचत किसी शिक्षा योजना में लगाई जाएगी. सूबे को ऐसे ही मितव्ययी मुख्यमंत्री की जरूरत है.

—संदीप उन्नीथन, साथ में आशीष मिश्र, अमरनाथ के. मेनन, रोमिता दत्ता और किरण डी. तारे

अर्थात्

ना होता ये तो क्या होता...

अंशुमान तिवारी

सरकारी कंपनियों को बेचने या न बेचने की बहस में केवल आप अपनी राजनीति चुन सकते हैं. यह कंपनियां ऐसा सिक्का हैं जो दोनों पहलू पर खोटा है. यह चुनाव अच्छे और बुरे के बीच है ही नहीं, हमें तो कम और ज्यादा नुक्सान के बीच एक को चुनना है.

सरकारी हैं तो क्या हुआ?

मान लें कि अगर सरकार पेट्रोल की कीमतें पूरी तरह बाजार के हवाले कर दे. पेट्रोल-डीजल सस्ते हो जाएं. या किसी स्टार्ट-अप की तरह, निजी पेट्रोल पंप सस्ता तेल बेचने लगें तो फिर क्या होगा? इंडियन ऑयल, एचपीसीएल, बीपीसीएल, एचपीसीएल को बीमार होने में एक-दो साल ही लगेंगे. विनिवेश के लिए ग्राहक मिलना मुश्किल हो जाएगा. अगर किसी को लगता है कि ऐसा नहीं हो सकता तो बीएसएनएल या एयर इंडिया की हालत देख लें जो किसी तरह बिक नहीं रही हैं.

सरकारी कंपनियों को बनाए रखने के तर्क देने वाले अक्सर खुद से यह सवाल ही नहीं पूछते कि एक विराट कारोबारी सरकार को ढोते हुए उन्हें मिला क्या है? अगर सरकारी बैंक अच्छे हैं तो जमाकर्ताओं को अच्छा ब्याज क्यों नहीं मिलता? भारत में ही दुनिया में सबसे महंगा पेट्रोल-डीजल क्यों मिलता है? बिजली इतनी महंगी क्यों है? रेलवे इतनी घटिया क्यों है? अस्पताल, स्कूल, ट्रांसपोर्ट, कहीं भी, सरकार को बनाए रखने की कीमत हम महंगी और खराब सेवा के तौर ही पर चुका रहे हैं.

हमारे टैक्स और बचत पर चलने वाली सरकारी कंपनियां इतनी ही अच्छी हैं तो इनके शेयरों की हालत गौरतलब है. अपने कारोबार में एकाधिकार वाली दिग्गज सरकारी कंपनियां जैसे कोल इंडिया, एनएमडीसी, एनटीपीसी, इंडियन ऑयल, सेल, भेल यहां तक सरकारी बैंकों तक, अधिकांश कंपनियों में दस साल का रिटर्न नकारात्मक है. बीते दस बरस में शेयर सूचकांक 200 से 300 फीसद बढ़े लेकिन सरकारी कंपनी (-9.66%) और सरकारी बैंक सूचकांक (-27%) निवेशकों को नुक्सान के गवाह हैं.

सरकारी कंपनियां रोजगारों की फैक्ट्री भी नहीं हैं. नौकरियों के बाजार में संगठित क्षेत्र (सरकारी और निजी) का हिस्सा केवल छह फीसद है. जुलाई में डीए बढ़ने के वक्त बताया गया था कि 40 लाख पदों की तुलना में केंद्रीय कर्मचारियों की तादाद 31.42 लाख है. 2016 के के सरकारी आंकड़े के अनुसार, केवल 11.30 लाख लोग केंद्रीय सरकारी कंपनियों में हैं.

निजीकरण क्रांति भी नहीं है?

सरकारी कंपनियों के निजीकरण या विनिवेश से हमारे सभी दुख-दर्द दूर होने जाने के दावों को तथ्यों का आईना दिखाना जरूरी है. 2019-20 में 84 सरकारी कंपनियों का सालाना घाटा करीब 45,000 करोड़ रुपए रहा (सरकारी उपक्रम सर्वे) है. सरकारी कंपनियों को बेचकर राजस्व जुटाने का लक्ष्य बीते एक दशक में केवल दो बार मिला और वह भी अधिकतम एक लाख करोड़ रुपए. अगर सरकार इस साल इतना भी जुटा लेती है तो भी वह एयर इंडिया और बीएसएनएल के संचित घाटे (1.10 लाख करोड़) से कम होगा.

मतलब यह कि अगर चार साल में 6 लाख करोड़ रुपए का असंभव लक्ष्य मिल भी जाए तो कुछ बदलेगा नहीं. न घाटा खत्म हो जाएगा, न पेट्रोल-डीजल सस्ते होंगे, न टैक्स कम होने लगेंगे और न ही सरकार चुस्त होकर शानदार सेवाएं देने लगेगी.

लेकिन यह मजबूरी है

केंद्र सरकार की कंपनियां पुरानी बीमारियों की तरह हैं. सरकारी कंपनियों की संख्या बढ़ रही है. 2014 में इस परिवार में 234 सदस्य थे अब 257 हैं. 2009 से 2018 के बीच में इनमें लगी सरकारी पूंजी यानी टैक्स देने वालों का पैसा 7.92 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 22.72 लाख करोड़ रुपए पहुंच गया लेकिन इसी दौरान इनमें लगे प्रत्येक एक रुपए पर वापसी 25 पैसे से घटकर 11 पैसे रह गई है.

इनके मुनाफे केवल भ्रम हैं. लाभ वाली दस शीर्ष कंपनियां तेल, कोयला, बिजली और गैस क्षेत्र की हैं, जहां सरकार का एकाधिकार है. प्रतिस्पर्धा शुरू होते ही वे एयर इंडिया बन जाएंगी. अन्य सार्वजनिक कंपनियां व बैंक प्रत्येक पैमाने पर अपने निजी समकक्षों से बहुत पीछे हैं. पिछले दो दशक में सबसे ज्यादा नए रोजगार टेलीकॉम, सूचना तकनीक, बैंकिंग में आए हैं, जहां सरकार ने निजीकरण किया है.

सरकारी कंपनियों के पुनर्गठन और विनिवेश पर भाजपा और कांग्रेस अपने कुर्ते आपस में बदलती रही हैं. निजीकरण के विरोधी और समर्थक दोनों ही टैक्स देते हैं इसलिए उन्हें इस विनिवेश की सियासत समझनी होगी. सरकारें अंतिम विकल्प तक इन्हें बनाए रखकर अपने भ्रष्ट फायदों के लिए निचोड़ लेना चाहती हैं या फिर कोई रास्ता न बचने पर इन्हें अपने चहेते उद्यमियों को सौंप देना चाहती हैं.

अगर आप इन परजीवियों को पालने की हिमायत करते हैं तो इनके लिए आगे और ज्यादा टैक्स चुकाने को तैयार रहिए. इनके रहते हुए हमें लंबे वक्त तक खराब और महंगी सरकारी सेवा झेलनी होगी. लेकिन अगर आप इन्हें बेचने हक में हैं तो बिक्री पारदर्शिता पर सवाल उठाइए ताकि निजी कंपनियां सरकारी एकाधिकार की जगह न ले लें.

सरकारी कंपनियों की बिक्री कोई क्रांतिकारी सुधार नहीं है, यह एक अनिवार्य उपचार है जो बस सही तरीके से किया जाना चाहिए.

@anshuman1tiwari

यह चुनाव अच्छे और बुरे के बीच है ही नहीं, हमें तो कम और ज्यादा नुक्सान के बीच एक को चुनना है

इलस्ट्रेशनः राज वर्मा

रूसी हथियारों की नई खेप

कई नए रक्षा सौदों ने प्रधानमंत्री मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के आमने-सामने शिखर सम्मेलन के लिए नई फिजा तैयार की

संदीप उन्नीथन

मिला हाथ से हाथ
25 अगस्त को मॉस्को के पास अंतरराष्ट्रीय सैन्य खेल 2021 के दौरान रूस के रक्षा मंत्री सेर्गेइ शोइगी (बाएं) और रूस में भारत के राजदूत डी.बी. वेंकटेश वर्मा

मॉस्को के बीचोबीच हल्की रोशनी से जगमग कॉन्फ्रेंस कक्ष में *लॉर्ड ऑफ वार,* जेम्स बॉन्ड से मिलता हैं. कांच के पारदर्शी पैनलों पर ड्रोन, टैंक और मिसाइलों की तस्वीरें दिपदिपा रही हैं. कंक्रीट की पतली दीवारों से एक होलोग्राम होस्ट या वर्चुअल मेजबान, हल्के-से काले कपड़े पहने एक रूसी भाषी कन्या, आहिस्ते-से नमूदार होती है और मॉस्को के सैन्य औद्योगिक परिसर में बने अत्याधुनिक हथियारों के बारे में बताती है. सुथरी अंग्रेजी बोलने वाले एग्जीक्यूटिव और निर्यात-केंद्रित सैन्य उद्यम का जनसंपर्क से जुड़ा शीर्ष अमला टैबलेट हाथ में लिए प्रदर्शित हथियारों के इर्द-गिर्द घूमता है. आइए, फेडरल सर्विस ऑफ मिलिटरी टेक्निकल कोऑपरेशन (एफएसएमटीसी) का मुख्यालय में आपका स्वागत है. यह रूस की वह संस्था है जिसकी देखरेख में हर साल 50 अरब डॉलर (3.65 लाख करोड़ रुपए) से ज्यादा के हथियारों का दुनिया भर में निर्यात होता है.

कॉन्फ्रेंस कक्ष में इसके डायरेक्टर दमित्री शुगाएव भारत के साथ रूसी हथियारों की खरीद-फरोख्त पर लटकी अमेरिकी प्रतिबंधों की तलवार को ज्यादा तवज्जो नहीं देते. वे कहते हैं, ''ऐसी पाबंदियों का शून्य असर होता है. भारत की दिलचस्पी अपनी सैन्य क्षमताओं को मजबूत करने में है.'' निश्चित तौर पर ऐसा होता भी लग रहा है. रूस-निर्मित लंबी दूरी की वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली एस-400 की पहली खेप इसी साल भारतीय वायु सेना (आइएएफ) को सौंप दी जाएगी. यह 5.43 अरब डॉलर (39,645 करोड़ रुपए) के उस सौदे का हिस्सा है जिस पर ऐसी पांच प्रणालियों के लिए 2018 में अमेरिकी विरोध का खतरा उठाकर भी दस्तखत किए गए थे. अमेरिका ने भारत को अपने एक कानून सीएएटीएसए (प्रतिबंधों से अमेरिका के दुश्मनों का मुकाबला करने का कानून) से आगाह किया, जो रूस से तिजारत करने वाले देशों के खिलाफ लगाया जाता है. अमेरिका के 2016 के राष्ट्रपति चुनाव में मॉस्को की कथित दखलअंदाजी और सीरिया तथा यूक्रेन में सैन्य कार्रवाइयों के बाद इसे और बढ़ावा दिया गया.

अमेरिकी पाबंदियां अभी तक लगाई नहीं गई हैं, शायद इसलिए कि भारत न केवल रणनीतिक सहयोगी देश है बल्कि उसने 2008 के बाद 18 अरब डॉलर (1.31 लाख करोड़ रुपए) के अमेरिकी हथियार खरीदे हैं और अरबों डॉलर के अभी खरीदे जाने हैं. महामारी से पैदा आर्थिक तंगी से भारत की रक्षा जरूरतों में बदलाव नहीं आया. लद्दाख में पिछले साल जनवरी से चीन की पीएलए (पीपल्स लिबरेशन आर्मी) की नौ-महीने लंबी आक्रामक तैनाती से साफ हो गया कि चीन से सटी सरहद पर

खरीदारी की फेहरिस्त

भारत और रूस के बीच कई अरब डॉलर के सौदे पर बातचीत जारी

द्वितीय अकुला-वर्ग एसएसएन

संख्या: **1**

3 अरब डॉलर (21,910 करोड़ रु.)

दस साल की लीज पर, साथ में एक अकुला-वर्ग पनडुब्बी, जिसके लिए 3 अरब डॉलर देना है और लीज सौदे पर 2019 में दस्तखत हुए

स्थिति: बातचीत जारी

किलो-क्लास पनडुब्बी

संख्या: **4**

1 अरब डॉलर+ (7,300 करोड़ रु. से ज्यादा)

रूस की पुरानी पनडुब्बी की बिक्री 1+ 25 करोड़ डॉलर में होगी, जो रूसी शिपयार्ड में मरम्मत का खर्च है

स्थिति: बातचीत जारी

एसयू-30एमकेआइ जेट

संख्या: **18**

70 करोड़ डॉलर (5,110 करोड़ रु.)

जेट के आखिरी बैच का लाइसेंसशुदा निर्माण नासिक में एचएएल में होगा

स्थिति: बातचीत जारी

एके-203 एसाल्ट राइफल

संख्या: **7,50,000**

1.6 अरब डॉलर (11,690 करोड़ रु.)

दोनों पक्ष अमेठी के ओएफबी फैक्टरी में एसॉल्ट राइफलों के उत्पादन के लिए प्रति नग कीमत पर बात आखिरी चरण में

स्थिति: बातचीत जारी

स्थुत एसडी1 हल्के टैंक

संख्या: **350**

सबसे अधिक मांग क्योंकि भारतीय सेना को 25 टन के वायुमार्ग से ले जाने के काबिल टैंक की विभिन्न मोर्चों पर तैनाती की तलाश. सेना इसे सीमित संख्या में तैयार हालत में भी लेने पर विचार कर रही है

कामोव 226टी हेलिकॉप्टर

संख्या: **200**

1 अरब डॉलर (7,300 करोड रु.)

इसके उत्पादन के लिए एचएएल और रसियन हेलिकॉप्टर्स ने साझा उद्यम इंडो-रसियन हेलिकॉप्टर्स की शुरुआत की है. एमओयू पर दस्तखत जून 2018 में हुए

स्थिति: बातचीत जारी

मिग-29 एयरफ्रेम

संख्या: **21**

80 करोड़ डॉलर (5,840 करोड़ रु.)

सोवियत दौर के एयरफ्रेम की खरीद, नई इंजन और मरम्मत के साथ वायु सेना के बेड़े में शूमार होगा

स्थिति: बातचीत जारी

भारत के तीन दशक से चले आ रहे अमन-चैन के परखच्चे उड़ चुके हैं. इस अनिश्चितता की आर्थिक कीमत हथियार सौदों और अमेरिका तथा रूस के बीच निपुण कूटनीतिक पैंतरेबाजी से चुकाई गई. दोनों ही भारत के रणनीतिक साझेदार हैं, जिन्होंने 2017 से छोटा-मोटा शीत युद्ध छेड़ रखा है.

दो साल से दबी जुबान चर्चा है कि भारत और रूस ने अमेरिकी पाबंदियों से बचने और 'स्विफ्ट' के जरिए लेन-देन टालने के लिए रुपए-रूबल भुगतान का रास्ता खोज निकाला है. पाइपलाइन में कई अरब डॉलर के भारत-रूस हथियार सौदे हैं. भारत की बुरी तरह छिन्न-भिन्न हो चुकी पनडुब्बी क्षमता को मजबूत करने के लिए दोनों देशों ने हाल में दूसरी अकुला-वर्ग की परमाणु शक्ति संपन्न हमलावर पनडुब्बी (एसएसएन) की लीज को लेकर बातचीत की. यह रूसी नौसेना की उस ब्रात्स्क पनडुब्बी (जिसे अब चक्र-3 कहते हैं) के अलावा होगी, जो 2026 में भारतीय नौसेना में शामिल होगी. भारत और रूस ने 2019 में चक्र-3 के लिए 3 अरब डॉलर (21,910 करोड़ रुपए) का सौदा किया था. इसकी कीमत में 72 महीनों तक कलपुर्जे बदलने के साथ मरम्मत और 10 साल की लीज शामिल है. दूसरी एसएसएन के आने पर नौसेना के आइएनएस विक्रमादित्य और आइएनएस विक्रांत पर केंद्रित दोनों युद्धपोत बेड़ों के पास एक-एक हमलावर पनडुब्बी हो जाएगी. दोनों एसएसएन चार अरिहंत वर्ग की युद्धक मिसाइल पनडुब्बियों के भारतीय बेड़े को पहरेदारी में लाने-ले जाने के काम भी आएंगी.

टेक्नोलॉजी के फलक के दूसरे छोर पर दोनों देशों ने हाल में एके-सीरीज की 70,000 राइफलों के लिए 300 करोड़ रुपए के सौदे पर दस्तखत किए. उधर, उत्तर प्रदेश के अमेठी में 7,00,000 से ज्यादा एसॉल्ट राइफलों के संयुक्त उत्पादन के लिए 1.6 अरब डॉलर (11,890 करोड़ रुपए) के सौदे पर मोलभाव चल ही रहा है. बीते अप्रैल में सेना ने 350 हल्के टैंकों की खरीद के लिए वैश्विक पूछताछ शुरू की. उन्हें हवाई रास्ते से लाया-ले जाया सकेगा और ज्यादा अहम यह कि हिमालय की पर्वतमालाओं में चीन के खिलाफ तैनात किया जाएगा. इसमें रूस-निर्मित हल्का टैंक स्थुत सबसे आगे है, क्योंकि इसका वजन पैदल सेना के युद्ध वाहन से कुछ ही ज्यादा है, तब भी जब इसमें 125 मिमी की भारी तोप लगी है, जो सेना के टी-72 और टी-90 मध्यम टैंकों में लगी तोप जैसी ही है. सेना सीमित तादाद में तैयारशुदा स्फुत टैंक खरीदना चाहती है.

फिर 15 अरब डॉलर (1.09 लाख करोड़ रुपए) के और भी सौदे हैं, जिन्हें या तो पूरा किया जा रहा है या बातचीत चल रही है. इस हथियार खरीद से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की आमने-सामने दोतरफा शिखर बैठक की पूर्वपीठिका तैयार होगी, जो दो साल के अंतराल से इसी साल होनी है. फलते-फूलते रक्षा सौदों के अलावा बारंबार होने वाले सैन्य अभ्यास भी हैं. रूस 2022 में इनसान को अंतरिक्ष में भेजने वाले भारत के मिशन गगनयान के लिए चार अंतरिक्ष यात्रियों के प्रशिक्षण में भी मददगार है.

इस्लामाबाद में भारत के पूर्व उच्चायुक्त जी. पार्थसारथी कहते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा भारत की नीतिगत रणनीतिक स्वायत्तता की तस्दीक है, ''हम अमेरिका के साथ क्वाड का हिस्सा इसलिए हैं क्योंकि हमें हिंद-प्रशांत में चीन की ताकत को संतुलित करना है, लेकिन यह रूस के साथ हमारे रिश्तों की कीमत पर नहीं होगा. रणनीतिक स्वायत्तता का सच्चा सार यही है.''

यह रिश्ता हाल के वर्षों में खास तौर पर पेचीदा हुआ है, क्योंकि चीन से साथ भी रूस का करीबी सुरक्षा सहयोग है और यह ऐसा रिश्ता भी है जो हथियारों की बिक्री और अमेरिका के प्रति साझा नफरत से चल रहा है. मॉस्को स्थित थिंक टैंक, सेंटर फॉर द एनालिसिस ऑफ स्ट्रैटजिक ऐंड टेक्नोलॉजीज (सीएएसटी) के डायरेक्टर रुस्लान पुखोव कहते हैं, ''हमारा शानदार अतीत, अच्छा वर्तमान और उज्ज्वल भविष्य है.'' मगर वे कुछ चेतावनियां भी जोड़ते हैं, ''भारत में अमेरिकी गतिविधि से रूसी बहुत परेशान हैं. भारतीय भी रूसी-चीनी मेलजोल को लेकर शंकालु हैं. तो जोखिम बहुत ज्यादा है, खासकर पुतिन या मोदी के जाने के बाद, क्योंकि कई चीजें उनकी निजी केमिस्ट्री पर टिकी हैं.''

उधर पाकिस्तान भी है. हाल के वर्षों में मॉस्को ने इस्लामाबाद को एमआइ-35 हेलिकॉप्टर गनशिप, जेएफ-17 लड़ाकू विमानों के लिए क्लिमोव आरडी-93 जेट इंजन और पंतसिर वायु रक्षा मिसाइल प्रणालियां बेचीं. ये हथियार बिक्रियां भारत को दिए मौखिक आश्वासनों का उल्लंघन थीं. फिर भी कई अहम वजहों से ये रूस-भारत रिश्तों में आड़े नहीं आईं. रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए पिछले साल नए जोश से शुरू अभियान के बावजूद भारत रक्षा उत्पादन के अहम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनने से अभी बरसों दूर है.

इसीलिए परमाणु शक्ति संपन्न हमलावर पनडुब्बियों के बेड़े सरीखी रक्षा क्षमताओं की कमियों की भरपाई के लिए रूस का सहयोग अहम है. भारत का छह परमाणु पनडुब्बियों के निर्माण का स्वदेशी कार्यक्रम पहली इकाई सौंपने में कम से कम एक दशक का वक्त लेगा. नौसेना ने 10 साल की लीज खत्म होने पर अपनी अकेली परमाणु संपन्न हमलावर पनडुब्बी चक्र-2 इस साल रूस को लौटा दी. ऐसे में अकुला-वर्ग की पनडुब्बियां खासी राहत की तरह आई हैं. नौसेना को नई परिस्थितियों में जरूरत भी खासी है.

पारंपरिक पनडुब्बियों की कमी से निपटने के लिए रूस ने चार सेकंड-हैंड किलो-वर्ग की पनडुब्बियां बेचने की भी पेशकश की है. रूसी अहाते में चारों पनडुब्बियों की जोड़-तोड़ के लिए भारत को करीब 1 अरब डॉलर (7,300 करोड़ रुपए) चुकाने होंगे. यह कामचलाऊ व्यवस्था होगी. बस तब तक के लिए जब नौसेना को घरेल शिपयार्ड से छह पारंपरिक प्रोजेक्ट 75आइ पनडुब्बियां मिलना शुरू नहीं हो जातीं. बहुत ऊंचाइयों पर तैनात भारतीय सैनिकों को कामोव 226टी हेलिकॉप्टर फिर

रूस के साथ हथियारों के सौदों में अब कहीं अधिक समीक्षा और मोलतोल होती है क्योंकि भारत का जोर बेहद अहम टेक्नोलॉजी के पूरी तरह हस्तांतरण पर है

मुहैया किए जा सकते हैं. यह एक टन वजन ढोने में सक्षम बक्सानुमा मशीन है. भारतीय पैदल सेना को जल्द एके-203 राइफलों से लैस किया जा सकता है, जो सात दशक से ज्यादा पहले वजूद में आई इस लोकप्रिय राइफल का आधुनिक संस्करण है.

लंबे वक्त से लटके कलपुर्जों के सौदों ने एक मदद यह की कि रूस-निर्मित आइएनएस विक्रमादित्य की मरम्मत और जोड़-तोड़ के कारवाड़ में चल रहे काम में तेजी आ गई. क्रिवाक-वर्ग के चार फ्रिगेट के लिए 2.5 अरब डॉलर (18,250 करोड़ रुपए) के अनुबंध के तहत दो युद्धपोत रूस में बनेंगे और दो गोवा शिपयार्ड लिमि में.

ये सब चाहे जितने अहम लगते हों, लेकिन हकीकत यही है कि भारतीय रक्षा बाजार में हाल के वर्षों में अमेरिका के आने से रूस की धमक कम हुई है. स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट की मार्च 2021 की रिपोर्ट बताती है कि 2015-2020 में रूस के कुल हथियार निर्यात में भारत का हिस्सा 23 फीसद था. 2011-2015 के मुकाबले भारत को रूसी हथियारों की बिक्री में 22 फीसद की गिरावट थी. इसलिए चिंताएं बढ़ी हैं.

दोनों देश अपने सैन्य औद्योगिक प्रतिष्ठानों को जोड़ने और रक्षा संबंधों को गहरा करने के लिए संयुक्त उद्यमों पर निर्भर कर रहे हैं. भारत का किसी भी दूसरे के साथ ऐसा रिश्ता नहीं है. 23 साल पुराना इंडो-रशियन ब्रह्मोस कॉर्पोरेशन, जो इसी नाम की सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल बनाता है, दो अन्य परियोजनाओं के लिए मॉडल बन गया है. एक है इंडो-रशियन हेलिकॉप्टर्स जो केए-226 बनाता है, और दूसरा, इंडो-रशियन राइफल्स जो एके-203 एसॉल्ट राइफलों का निर्माण करेगा. एके-203 न केवल सेना की इनसास और पूर्व यूरोपीय एके टाइप राइफलों की जगह लेगी बल्कि एक दशक से ज्यादा वक्त के लिए भारतीय पैदल सेना के जवान की मुख्य राइफल भी होगी. तो भी यह मिलनसारी रूसी सौदों को भारतीय रक्षा मंत्रालय की गहरी छानबीन से नहीं बचा पाई, बल्कि उसमें इजाफा ही हुआ.

रक्षा मंत्रालय चाहता है कि रूस अहम टेक्नोलॉजी का हस्तांतरण करे, ताकि भारत का अपना उद्योग आत्मनिर्भर बन सके. 2018 में भारत ने पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान सुखोई एसयू-57 के निर्माण के संयुक्त उद्यम से हाथ खींच लिए, क्योंकि वह हल्के स्तर की टेक्नोलॉजी साझा किए जाने को लेकर नाखुश था. 200 कामोव केए-226 हेलिकॉप्टर बनाने के संयुक्त उद्यम का भी यही हश्र हो सकता है. यह तीन साल से इसलिए रुका हुआ है क्योंकि रक्षा मंत्रालय चाहता है कि रूस इस मशीन में स्वदेशी सामग्री मौजूदा 40 फीसद से बढ़ाकर सभी हेलिकॉप्टरों में 70 फीसद करे.

एके-203 असॉल्ट राइफल का सौदा इसलिए रुका पड़ा है क्योंकि रूस प्रति राइफल 1,200 डॉलर की कीमत पर जोर दे रहा है, जो अमेरिकी एसआइजी 716 बैटल राइफल के आयात की लागत से कम से कम 300 डॉलर ज्यादा है. भारतीय सेना इस अमेरिकी राइफल का भी इस्तेमाल करती है. भारतीय अफसरान चाहते हैं कि रूस की कलाशिनकोव कंपनी इस मशहूर हथियार का 'नो-हाऊ' और 'नो-व्हाइ' दोनों भारत को दे. रूस के साथ रिश्ता कायम रहेगा, लेकिन साफ है कि यह गैरबराबरी का नहीं होगा. ■

पुराना फॉर्मूला
बसपा सुप्रीमो मायावती अब पार्टी और अपना वजूद बचाने के लिए पुराने तरीके पर आ रहीं

एएनआइ

क्या बहनजी कर पाएंगी पलटवार?

उत्तर प्रदेश के पिछले दो विधानसभा चुनावों में मुंह की खाने वाली बसपा ने एक बार फिर से ब्राह्मणों को रिझाना शुरू किया. दूसरी ओर रसूख वाले नेता पार्टी से लगातार विदा होते जा रहे. तो फिर क्या हैं अगले चुनाव में उसकी संभावनाएं?

आशीष मिश्र

यह बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष मायावती की बदलती रणनीति का संकेत था जब 23 जुलाई को पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्र अयोध्या से 'प्रबुद्ध विचार गोष्ठी' की शुरुआत कर रहे थे. इससे पहले मिश्र ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से मुख्यत: ब्राह्मणों को रिझाने के लिए शुरू किए गए सिलसिलेवार आयोजन प्रबुद्ध विचार गोष्ठी का पोस्टर भी रिलीज किया. पोस्टर में अयोध्या में बन रहे राम मंदिर के मॉडल के साथ भगवान राम और परशुराम का भी चित्र था. इसमें एक और खास बात नोटिस की जा रही थी: अभी तक बसपा के पोस्टरों में दिखने वाले नीले रंग का प्रयोग बस प्रतीक के तौर पर ही किया गया था. बाकी पूरे पोस्टर में भगवा रंग ही अधिकता में दिख रहा था.

अयोध्या की गोष्ठी में जाने से पहले मिश्र ने रामलला और हनुमानगढ़ी के दर्शन करने के साथ सरयू नदी की आरती भी की. सियासी आयोजन से पहले मंदिरों के दर्शन करने की परंपरा बसपा में पहली बार दिखी थी. प्रबुद्ध विचार गोष्ठी की शुरुआत 21 पंडितों की ओर से एक साथ शंख बजाकर की गई. मिश्र ने अपने

45 मिनट के संबोधन में कई बार श्रीराम और परशुराम का जिक्र किया और सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी पर राम के नाम पर लोगों को धोखा देने का आरोप भी लगाया.

उत्तर प्रदेश के 60 से अधिक जिलों में आयोजित हो चुकी प्रबुद्ध विचार गोष्ठी के जरिए मिश्र ब्राह्मणों को लुभाने की भरसक कोशिश कर रहे हैं. गोष्ठी आयोजन के इस सिलसिले का समापन 7 सितंबर को होगा जिसे बसपा सुप्रीमो मायावती संबोधित करेंगी. इस सम्मेलन में प्रदेश के 75 जिलों में तैनात बसपा के ब्राह्मण कोआर्डिनेटर शिरकत करेंगे. बसपा में अचानक आए इस बदलाव की वजह 23 जुलाई को अयोध्या में सम्मेलन की शुरुआत से पहले मिश्र के ट्वीट से जाहिर होती है, जिसमें उन्होंने लिखा था: ''सत्ता की चाबी ब्राह्मण (13 प्रतिशत) और दलित (23 प्रतिशत) के हाथ में''. मिश्र हर ब्राह्मण सम्मेलन में यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि यूपी में बसपा के साथ अगर 13 फीसदी ब्राह्मण जुड़ता है तो 23 फीसदी दलित समाज के साथ मिलकर पार्टी की जीत पक्की है.

वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले बसपा की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने एक बार फिर दलित-ब्राह्मण गठजोड़ की उस रणनीति पर दांव लगाया है जिसके जरिए पार्टी ने 2007 में यूपी का विधानसभा चुनाव जीता था. बसपा के ब्राह्मण चेहरे सतीश चंद्र मिश्र कहते हैं ''बसपा की सरकार में ब्राह्मणों को जितना सम्मान मिला उतना कभी किसी सरकार में नहीं मिला है. यूपी की योगी सरकार में ब्राह्मणों का जितना उत्पीड़न हुआ है उतना पहले कभी नहीं हुआ. ब्राह्मणों पर झूठे मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं.'' ब्राह्मणों को लुभाने के लिए ही मिश्र ने उन सभी ब्राह्मणों की कानूनी मदद करने की घोषणा की है जो सरकार पर झूठे मुकदमे लगाकर फंसाने का आरोप लगा रहे हैं.

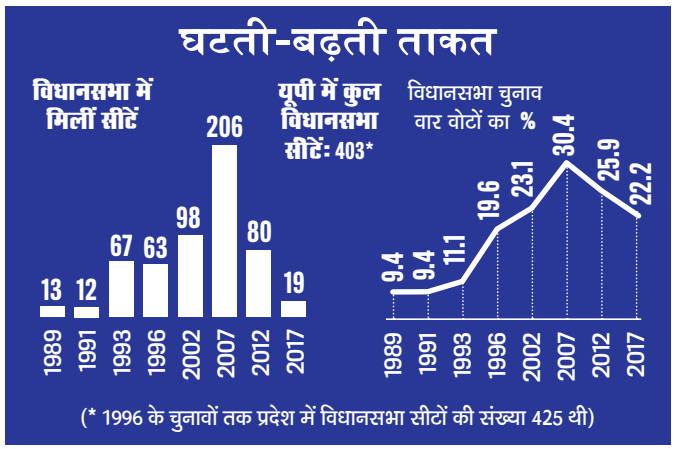

ग्राफिकः तन्मय चक्रवर्ती

बिछड़ते गए सब बारी-बारी

स्वामी प्रसाद मौर्यः बसपा संस्थापक कांशीराम के करीबी स्वामी प्रसाद मौर्य सपा सरकार के दौरान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष थे. बसपा से इस्तीफा देने के बाद 8 अगस्त, 2016 को मौर्य भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए थे. वर्तमान में योगी सरकार में श्रम विभाग के कैबिनेट मंत्री हैं.

नसीमुद्दीन सिद्दीकीः कभी मायावती का दाहिना हाथ रहे नसीमुद्दीन सिद्दीकी यूपी में बसपा का मुस्लिम चेहरा थे. अनुशासनहीनता के आरोप में बसपा से निकाले गए पूर्व कैबिनेट मंत्री सिद्दीकी 22 फरवरी, 2018 को कांग्रेस में शामिल हो गए थे. वर्तमान में यूपी कांग्रेस मीडिया सेल के इंचार्ज हैं.

लालजी वर्माः कांशीराम के करीबी रहे आंबेडकर नगर की कटेहरी विधानसभा सीट से विधायक लालजी वर्मा बसपा विधानमंडल दल के पूर्व नेता थे. मायावती ने वर्मा को अनुशासनहीनता के आरोप में 4 जून, 2021 को बसपा से बाहर निकाल दिया है. फिलहाल वे किसी भी पार्टी में नहीं हैं.

राम अचल राजभरः बसपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और अकबरपुर से पांच बार के विधायक रामअचल राजभर की गिनती मायावती के करीबी नेताओं में होती थी. मायावती ने राजभर को अनुशासनहीनता के आरोप में 4 जून, 2021 को बसपा से निष्कासित कर दिया. फिलहाल किसी पार्टी में नहीं.

इंद्रजीत सरोजः पूर्व राज्यसभा सांसद इंद्रजीत सरोज की गिनती कभी मायावती के विश्वस्त नेताओं में होती थी. 2 अगस्त, 2017 को मायावती ने सरोज को अनुशासनहीनता के आरोप में पार्टी से निष्कासित कर दिया था. 21 सितंबर, 2017 को वे सपा में शामिल हो गए.

सुखदेव राजभरः आजमगढ़ के दीदारगंज से विधायक सुखदेव राजभर बसपा के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं. पिछले 1 अगस्त को उन्होंने एक सार्वजनिक पत्र लिखकर राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा की और बेटे कमलकांत को सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के हवाले करने का ऐलान किया.

ब्रजेश पाठकः पूर्व सांसद ब्रजेश पाठक की पहचान बसपा के प्रभावी ब्राह्मण चेहरे के रूप में होती थी. 25 अगस्त 2016 को उन्होंने बसपा छोड़ भाजपा ज्वाइन की. 2017 के विधानसभा चुनाव में लखनऊ मध्य से वे भाजपा के विधायक बने और फिलहाल योगी सरकार में कैबिनेट मंत्री का सुख भोग रहे हैं.

डमरू, चंदन और त्रिशूल
ब्राह्मणों को रिझाने के लिए अयोध्या से शुरू बसपा की प्रबुद्ध विचार गोष्ठी में पार्टी नेता सतीश चंद्र मिश्र (बीच में काली जैकेट में)

वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव के लिए जमीनी स्तर पर संगठन का ढांचा मजबूत करने में जुटी बसपा के प्रबुद्ध विचार गोष्ठी के अगले चरण में बसपा प्रबुद्ध समाज मंडल संयोजक कमेटी का गठन किया जा रहा है. इसमें ब्राह्मण, ठाकुर के साथ दूसरी जातियों का भी प्रतिनिधित्व है लेकिन कमेटी की कमान ब्राह्मण समाज के नेता को दी जा रही है. बूथ स्तर पर ऊंची जातियों को बसपा से जोड़ने के लिए यह कमेटी बूथ सम्मेलनों का आयोजन करेगी. साथ ही यह कमेटी बसपा की पूर्व सरकार के दौरान किए गए लोकहित के कार्यों की जानकारी भी देगी. लखनऊ में विद्यांत पीजी कालेज में अर्थशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर और दलितों के आर्थिक-सामाजिक ढांचे का अध्ययन करने वाले मनीष हिंदवी बताते हैं, ''2007 के विधानसभा चुनाव में बसपा की सरकार बनाने में योगदान देने वाले ज्यादातर नेता आज मायावती के साथ नहीं हैं. ऐसे में दलित-ब्राह्मण सोशल इंजीनियरिंग को कारगर बनाने के लिए बसपा को बहुत ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी.'' 2007 के विधानसभा चुनाव में यूपी की कुल 403 विधानसभा सीटों में से 206 सीटें जीत कर सरकार बनाने वाली बसपा 2017 के विधानसभा चुनाव में 19 सीटों पर सिमट गई थी. पिछले चार वर्षों के दौरान अनुशासनहीनता के आरोप में बसपा से 9 विधायक निलंबित हो चुके हैं. 2019 में हुए विधानसभा उपचुनाव में आंबेडकर नगर की जलालपुर विधानसभा सीट बसपा हार गई थी. इसी वर्ष पंचायत चुनाव के बाद मायावती ने आंबेडकर नगर जिले से पार्टी के दो कद्दावर नेता और विधायक लालजी वर्मा और राम अचल राजभर को पार्टी से निष्कासित कर दिया था.

वर्ष 2007 के विधानसभा चुनाव में मायावती की सोशल इंजीनियरिंग के चलते 41 ब्राह्मण विधायक बसपा के टिकट पर चुनाव जीते थे, इनकी संख्या अब घटकर 4 रह गई है. मौजूदा समय में बसपा के पास ब्राह्मण चेहरे के तौर पर सतीश चंद्र मिश्र, गोरखपुर के चिल्लूपार से विधायक विनय तिवारी, पूर्व कैबिनेट मंत्री अनंत मिश्र, नकुल दुबे, रत्नेश पांडेय और हाल ही में पार्टी में वापसी करने वाले पवन पांडेय शामिल हैं. मनीष हिंदवी बताते हैं, ''मायावती के साथ तालमेल न बिठा पाने के कारण कई नेताओं ने या तो बसपा छोड़ दी या फिर वे पार्टी से निकाल दिए गए. इनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है. इसने बसपा को कमजोर किया है.'' 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद बसपा के 100 से ज्यादा पूर्व कोऑर्डिनेटर पार्टी छोड़ चुके हैं.

बसपा से नाराज नेताओं की पहली पसंद समाजवादी पार्टी बनी है. बसपा ने 2019 का लोकसभा चुनाव सपा के साथ मिलकर लड़ा था. इस चुनाव में बसपा के सांसदों की संख्या तो शून्य से बढ़कर 10 हो गई थी लेकिन सपा के 5 सांसद ही रहे. लोकसभा चुनाव के फौरन बाद बसपा और सपा की राहें जुदा हो गई थीं. पिछले वर्ष अक्तूबर में राज्यसभा चुनाव के दौरान सपा और बसपा के बीच तल्खी बढ़ गई थी. उस समय मायावती की ओर से भाजपा के प्रति नरम रुख दिखाए जाने पर बसपा के 7 विधायकों ने बगावत कर दी थी. पार्टी नेताओं का मानना है कि सपा की शह पर इन नेताओं ने बगावत की थी. नाराज मायावती ने विधायक चौधरी असलम अली, असलम राइनी, मुज्तबा सिद्दीकी, सुषमा पटेल, वंदना सिंह, हरगोविंद भार्गव और हाकिम लाल बिंद को निलंबित कर दिया. अटकलें हैं कि इनमें से कई विधायक 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा के टिकट पर लड़ सकते हैं. अलीगढ़ की कोल विधानसभा सीट से पूर्व विधायक जमीरउल्लाह हाथी का साथ छोड़ साइकिल की सवारी शुरू कर चुके हैं. जमीरउल्लाह कहते हैं, ''यूपी में सपा की एकमात्र पार्टी है जो अगले विधानसभा चुनाव में भाजपा को कड़ी टक्कर देगी. बसपा ने भाजपा से अंदरूनी गठबंधन कर जनता के साथ छल किया है.'' बसपा नेताओं का मानना है कि स्वार्थी नेताओं के हटने से पार्टी को और मजबूती मिलेगी. बसपा में पहली बार तैनात किए गए तीन प्रवक्ताओं में से एक धर्मवीर चौधरी बताते हैं, ''बसपा की विचारधारा न मानने वाले नेता अगर पार्टी छोड़कर जा रहे हैं तो पूर्व की अखिलेश यादव सरकार में मंत्री रहे राज किशोर सिंह जैसे वरिष्ठ नेता बसपा ज्वाइन भी कर रहे हैं. अगले 15 दिनों के भीतर बड़ी संख्या में दूसरी पार्टियों के नेता बसपा ज्वाइन करने वाले हैं.'' ज्वाइन जो भी कर रहे हों, फिलहाल 2022 के विधानसभा चुनाव में बसपा की कामयाबी इस बात पर भी निर्भर है कि पार्टी अपना कुनबा कितना बचा पाती है. ■

↘ रामवीर उपाध्यायः पूर्व कैबिनेट मंत्री रामवीर उपाध्याय पश्चिमी यूपी में बसपा का ब्राह्मण चेहरा थे. 21 मई 2019 को मायावती ने अनुशासनहीनता के आरोप में सादाबाद से विधायक रामवीर को बसपा से निष्कासित कर दिया था. 15 मई को रामवीर की पत्नी सीमा उपाध्याय भाजपा में शामिल.

↘ दयाराम पालः कभी मायावती के करीबी रहे बसपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष दयाराम पाल ने 20 सितंबर, 2019 को सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की मौजूदगी में हाथी की सवारी छोड़ साइकिल पर सवार हुए. पाल के साथ कई राज्यों में बसपा के प्रभारी रहे मिठाई लाल ने भी सपा ज्वाइन की थी.

↘ चंद्रदेव राम यादवः बसपा के संस्थापक सदस्यों में से एक कांशीराम के करीबी चंद्रदेव राम यादव ने दिसंबर, 2019 में मायावती पर उपेक्षा का आरोप लगाकर पार्टी से इस्तीफा दे दिया था. पूर्व कैबिनेट मंत्री चंद्रदेव को 22 जुलाई, 2020 को अखिलेश यादव ने सपा की सदस्यता दिलाई थी.

↘ राम प्रसाद चौधरीः मायावती सरकार में मंत्री रहे राम प्रसाद चौधरी की गिनती पूर्वांचल के प्रभावी कुर्मी नेताओं में होती है. ये बस्ती के कप्तानगंज विधानसभा क्षेत्र से लगातार पांच बार विधायक रहे और एक बार खलीलाबाद लोकसभा सीट से सांसद भी बने. 20 जनवरी 2020 को यह सपा में शामिल हुए.

ईवी ब्रांड
एस1, एस1 प्रो
निर्माता
ओला इलेक्ट्रिक
कीमत (एक्स-शोरूम)
करीब 1 लाख रु. (एस1),
करीब 1.3 लाख रु.
(एस1 प्रो)

संदेश रविकुमार

खुश और उत्साहित
ओला इलेक्ट्रिक के सीईओ भवीश अग्रवाल 15 अगस्त को अपने ई-स्कूटर के लॉन्च के अवसर पर

अब बिजली वाली स्कूटी से नापिए शहर

नए-नए डिजाइन में, खूबसूरत और महंगी भी. नए जमाने के अनुरूप इलेक्ट्रॉनिक दुपहिया वाहनों की आमद ने इस सेग्मेंट के बाजार में मचाई हलचल

एमजी अरुण

पिछले तीनेक वर्षों से कुछ नए उत्पाद आने और कुछ बड़े दुपहिया निर्माताओं के अपनी भावी योजनाओं की घोषणा के बावजूद भारतीय दुपहिया इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) क्षेत्र में एक तरह की शांति ही थी. चंद ईवी उत्पाद जिन्होंने खबरें बनाईं उनमें एक था एथर 450 जिसे काफी विलंब के साथ सितंबर 2018 में बेंगलूरू में लॉन्च किया गया. इसके अलावा बजाज ऑटो ने अपने चेतक स्कूटर को ईवी संस्करण के साथ पुनर्जीवित किया और टीवीएस मोटर ने अपना आइक्यूब इलेक्ट्रिक स्कूटर लॉन्च किया था. पर इस साल अगस्त में भारतीय टैक्सी सेवा प्रदाता कंपनी ओला ने बड़े धूमधाम के साथ अपना इलेक्ट्रिक स्कूटर लॉन्च किया और दुपहिया क्षेत्र में छाई सुस्ती खत्म हो गई. 1 लाख रुपए कीमत वाले स्कूटर के लॉन्च के साथ ओला अत्यधिक मूल्य संवेदनशील भारतीय बाजार में आंतरिक दहन इंजन (आइसीई) वाले दुपहिया वाहनों के मौजूदा निर्माताओं के कड़े प्रतिद्वंद्वी के रूप में उभरा है.

ईवी ब्रांड
चेतक
निर्माता
बजाज ऑटो
कीमत (एक्स शोरूम):
करीब 2 लाख रु.

इस साल 19 जुलाई तक देश भर में 1,04,806 इलेक्ट्रिक वाहनों के पंजीकरण हुए हैं. इनमें दुपहिया वाहन और कारें भी शामिल हैं

ओला के एस1 और एस2 प्रो के लॉन्च के साथ, जिसके लिए प्री-लॉन्च बुकिंग पहले ही शुरू हो चुकी थी, अब भारत में चार स्वदेसी ई-स्कूटर निर्माता हो गए हैं. दुपहिया पोर्टल bikedekho.com पर दी गई जानकारी के अनुसार ओला के प्रतिद्वंद्वी एथर एनर्जी के स्कूटर 1.13 लाख रुपए से शुरू होते हैं. एथर 450x की प्रीमियम रेंज की कीमत 1.32 लाख रुपए है. जनवरी 2020 में बजाज ऑटो ने अपने चेतक स्कूटर के इलेक्ट्रिक अवतार को 1 लाख रुपए की एक्स-शोरूम कीमत रेंज में उतारा. यह अर्बेन और प्रीमियम श्रेणियों में उपलब्ध है. टीवीएस मोटर ने जुलाई में अपना आइक्यूब ई-स्कूटर लॉन्च किया था और इसकी ऑन-रोड कीमत लगभग 1.23 लाख रु. बताई जाती है. इस क्षेत्र में टॉर्क मोटर्स (2009 के बाद से), अल्ट्रावॉयलेट, ओरक्सा एनर्जी और एमफ्लक्स मोटर्स जैसे स्टार्ट-अप भी उतरे हैं, लेकिन उन्होंने अभी तक कोई भी वाहन व्यावसायिक स्तर पर लॉन्च नहीं किया है.

इस कैलेंडर वर्ष के पहले छह महीनों में भारत में केवल 52,000 ई-स्कूटर की बिक्री हो पाई थी जो कुल दुपहिया वाहन सेग्मेंट का सिर्फ 0.7 प्रतिशत है. सोसाइटी ऑफ मैन्युफैक्चरर्स ऑफ इलेक्ट्रिक वेहिकल्स के अनुसार, 2020-21 के लिए ई-स्कूटर की बिक्री 6 प्रतिशत गिरकर 1,43,837 यूनिट हो गई जो पिछले वर्ष 1,52,000 यूनिट्स थी. विशेषज्ञ ई-स्कूटर सेग्मेंट के प्रति कम झुकाव के लिए आइसीई समकक्षों की तुलना में ई-स्कूटर की ऊंची कीमतें, उनकी मजबूती और लंबे समय के लिए टिकाऊ होने की क्षमता पर संदेह, चार्जिंग के बुनियादी ढांचे का अभाव और एक मजबूत वित्तपोषण तंत्र की कमी को जिम्मेदार ठहराते हैं. हालांकि कई राज्यों ने अपनी ईवी नीति शुरू की है पर कुछ ने इसे अभी तक लागू नहीं किया है. यह भी एक कारण है. भारी उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, इस साल 19 जुलाई तक देश में दुपहिया और कारों सहित 1,04,806 इलेक्ट्रिक वाहनों का पंजीकरण किया गया था. ई-वाहन पोर्टल के अनुसार पिछले तीन वर्षों में देश में कुल 5,17,322 इलेक्ट्रिक वाहन पंजीकृत किए गए हैं.

बढ़ रही उत्सुकता

कम बिक्री संख्या के बावजूद ईवी को लेकर उत्सुकता, केंद्र और राज्य सरकारों की ईवी नीतियों और ईंधन की बढ़ती कीमतों के कारण ये चर्चा में बने हुए हैं. एथर और अब ओला के आने से पहले स्टार्ट-अप ई-स्कूटर उद्यमी चीन से ईवी किट का आयात करके उन्हें यहां असेंबल करते थे. विशेषज्ञों का कहना है कि उनके पास

ईवी ब्रांड
आइक्यूब
निर्माता
टीवीएस मोटर
कंपनी
सड़क पर आने तक कीमतः
1.2 लाख रु.

बाजार में इलेक्ट्रिक वाहनों को लॉन्च करने के लिए साधन और कौशल की कमी थी. दूसरी ओर, दुपहिया क्षेत्र के मौजूदा खिलाड़ी पारंपरिक वाहनों के लिए अपनी रणनीतियों से संतुष्ट थे क्योंकि इससे उन्हें अपनी बिक्री की संख्या अच्छी खासी रखने में मदद मिलती रही. भारत में आइसीई वाहनों का बाजार बहुत बड़ा है. हालांकि महामारी के कारण, पिछले वित्त वर्ष की तुलना में वित्त वर्ष 2020-21 में कुल दुपहिया वाहनों की बिक्री में 3 प्रतिशत की गिरावट आई, लेकिन वर्ष की दूसरी छमाही में बिक्री में काफी वृद्धि हुई थी. नतीजतन, वित्त वर्ष 2020 में 1.82 करोड़ की तुलना में वित्त वर्ष 2021 में भारत में 1.76 करोड़ दुपहिया वाहन बेचे गए.

विशेषज्ञों का मानना है कि ईवी रणनीति को सफल बनाने के लिए तीन प्रमुख तत्वों की आवश्यकता है. ऑटो इंटेलिजेंस फर्म डायनामिक्स इंडिया के अध्यक्ष और निदेशक रवि भाटिया कहते हैं, ''सबसे पहले, ग्राहक ज्यादा अग्रिम भुगतान के लिए तैयार हों. दूसरा, सेक्टर की स्टार्ट-अप कंपनियों को शुरुआत में बड़े नुक्सान के लिए तैयार रहने की जरूरत है. तीसरा, सरकार को ईवी निर्माताओं और खरीदारों दोनों की मदद करने के लिए कुछ सब्सिडी प्रदान करनी होगी.''

यह कुछ हद तक भारत में हो रहा है. शुरुआती कठिन दौर में जब निवेश रिटर्न से अधिक है, निजी इक्विटी कंपनियों के बड़े फंड एथर और ओला जैसे खिलाड़ियों के साथ मजबूती से खड़े हैं. ओला की हालिया एंट्री ने इस सेगमेंट में एक नया उत्साह पैदा कर दिया है. अधिकांश शहरों में पेट्रोल की कीमतें 100 रुपये प्रति लीटर को पार कर गई हैं, और केंद्र और राज्य दोनों सरकारें ईंधन पर वसूले जाने वाले करों में रियायत के प्रति अनिच्छुक दिखती हैं क्योंकि वे सरकार के राजस्व का एक बड़ा स्रोत हैं. ईंधन की ऊंची कीमतें खरीदारों को ईवी जैसे विकल्पों की ओर आकर्षित कर रही हैं. कुछ सरकारी नीतियों ने भी इस क्षेत्र को प्रोत्साहित किया है. छह साल पहले केंद्र ने भारत में हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों के तेजी से प्रचलन और निर्माण के लिए एक योजना (फेम) तैयार की थी. 1 अप्रैल, 2019 से शुरू हुई योजना के दूसरे चरण को 10,000 करोड़ रुपए के बजटीय समर्थन के साथ पांच साल के लिए लागू किया जा रहा है. इस साल जून में भारी उद्योग विभाग ने फेम-II योजना में कुछ संशोधन किए. ई-स्कूटर की खरीद के लिए प्रोत्साहन राशि को 50 प्रतिशत बढ़ाकर प्रति किलोवाट घंटा बैटरी क्षमता पर 15,000 रुपए कर दिया गया. इस प्रोत्साहन की सीमा भी एक्स-शोरूम कीमत के 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर दी गई है.

केंद्र ने देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिए अन्य पहलें भी की है. मई 2021 में इसने बैटरी की कीमतों को कम करने के लिए भारत में उन्नत केमिस्ट्री सेल के उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना को मंजूरी दी. केंद्र ने इलेक्ट्रिक वाहनों पर जीएसटी (माल और सेवा कर) को भी 12 से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया है. इससे पहले, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने घोषणा की थी कि बैटरी से चलने वाले वाहनों को ग्रीन लाइसेंस प्लेट दिए जाएंगे और परमिट आवश्यकताओं से छूट दी जाएगी. राज्यों को इलेक्ट्रिक वाहनों पर रोड टैक्स माफ करने की सलाह देने वाली अधिसूचना भी जारी की गई.

रोमांच बरकरार

ईवी क्षेत्र की संभावनाओं ने निर्माताओं को उत्साहित किया है. ओला के संस्थापक और सीईओ भवीश अग्रवाल ने हाल ही में एक मीडिया साक्षात्कार में कहा, ''ईवी क्रांति वास्तव में एक क्रांति है, यह केवल इंजन को बाहर निकालने और मोटर लगा देने भर तक सीमित नहीं है.'' वे चाहते हैं कि ऑटो उद्योग पेट्रोल और डीजल वाहनों को अलविदा कह दें और 2025 तक पूरी तरह दुपहिया ईवी बनाना शुरू कर दें. लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि कहना आसान है, करना मुश्किल. ईवी को लेकर शुरुआती उत्साह तब तक कायम नहीं रह सकता जब तक उत्पाद की कीमतें कम नहीं होतीं. यह तभी होगा जब भारत ईवी पुर्जों के आयात पर अपनी निर्भरता को कम कर दे और उन्हें देश में बनाया जाए, विशेष रूप से वाहन का पावरट्रेन जिसमें इंजन, ट्रांसमिशन, एक्सल आदि जैसे अहम घटक शामिल हैं. भारत बैटरी और अन्य घटकों के लिए चीन पर बहुत अधिक निर्भर है.

हालांकि स्टार्ट-अप उद्यमी अपनी संभावनाओं को लेकर उत्साहित हैं, लेकिन देखना होगा कि यह उत्साह तब कितना रहता है जब दुपहिया क्षेत्र के पुराने खिलाड़ी इसमें जोर-शोर से कूदेंगे क्योंकि वे अपनी उपलब्ध पूंजी, बुनियादी ढांचे और वितरण नेटवर्क के बूते ईवी बाजार को अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बना देंगे. भाटिया कहते हैं, ''बजाज ऑटो और हीरो मोटोकॉर्प जैसी कंपनियां अभी खेल देख रही हैं. अगर ईवी व्यवसाय एक सफलता बन जाता है तो वे इसमें जोर-शोर से उतरेंगी.'' अपने चेतक ईवी के अलावा, बजाज ऑटो ने 2021-2022 में इलेक्ट्रिक थ्री व्हीलर और क्वाड्रिसाइकिल (चार पहिए वाली छोटी गाड़ियां) लॉन्च करने की घोषणा की है. इसका प्रीमियम बाइक ब्रांड केटीएम भी कथित तौर पर ई-मोटरबाइक की एक रेंज पर काम कर रहा है, जिसे भारत में पेश किया जा सकता है. प्रतिद्वंद्वी हीरो मोटोकॉर्प और टीवीएस मोटर कंपनी पहले ही इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए समर्पित सुविधाओं और निवेश योजनाओं की घोषणा कर चुकी है.

ई-स्कूटर के मोर्चे पर जंग अभी शुरू ही हुई है. ईवी को मिले शुरुआती आकर्षण से परे देखते हुए, कंपनियों को पारंपरिक आइसीई वाहन उपयोगकर्ताओं को ईवी के सामर्थ्य, टिकाऊपन और डिजाइन को लेकर आश्वस्त करना होगा. हो सकता है वे अभी तक आइसीई वाहनों के लिए एक चुनौती पेश न कर पाए हों पर कौन जाने कल को यही ट्रेंड बन जाए. ■

दूर-दूर से
ओडिशा में भुवनेश्वर के एक स्कूल में प्रवेश से पहले तापमान की जांच कराते छात्र

एएनआइ

खास रपट
शिक्षा

चलो फिर स्कूल चलें

देश भर में स्कूल धीरे-धीरे खुलने लगे लेकिन इसके साथ ही अभिभावकों और शिक्षाविदों के मन में उठ रहे बेशुमार प्रश्न

शैली आनंद

मार्च 2020 में स्कूलों में वर्चुअल पढ़ाई शुरू होने के बाद राघव कपूर (आग्रह पर बदला गया नाम) को पहले तो ऑनलाइन क्लास में शामिल होना अच्छा लगता था. लेकिन मुंबई के आठवीं क्लास के इस छात्र को आठ महीने बाद पढ़ाई के इस नए तरीके के नुक्सान महसूस होने लगे. धीरे-धीरे उसकी एकाग्रता कम होने लगी और फिर ऐसी नौबत आ गई कि पढ़ाई से उसकी दिलचस्पी ही खत्म हो गई. यही नहीं, अपने सहपाठियों और दोस्तों से मुलाकात न हो पाने की वजह से उसमें अवसाद के लक्षण दिखने लगे.

राघव जैसे छात्रों की दास्तानों ने शिक्षाविदों, अभिभावकों और सरकारी संस्थाओं को फौरन स्कूल दोबारा खोलने पर विचार करने के लिए प्रेरित किया. महीनों तक अलग-थलग रहने की वजह से यह एहसास गहरा गया है कि स्कूल में दोस्तों और हमउम्र छात्रों के साथ मौज-मस्ती और शिक्षकों के साथ आमने-सामने बातचीत भी कोई चीज होती है. मुंबई के पोद्दार एजुकेशन नेटवर्क और अर्ली चाइल्डहूड एसोसिएशन की प्रेसिडेंट स्वाति पोपट वत्स कहती हैं, ''वर्चुअल लर्निंग से बस इतना ही है कि हां, पढ़ाई हो रही है.

लेकिन हमें जल्दी ही स्कूल की कक्षाओं की ओर लौटने की जरूरत है. इसके अलावा, निजी और सरकारी स्कूलों के बीच 'डिजिटल डिवाइड' ने सरकारी स्कूल के बच्चों को भारी नुक्सान पहुंचाया है और जितना जल्द हो सके, इसे दुरुस्त किए जाने की जरूरत है.'' अर्ली चाइल्डहुड एसोसिएशन शिशुओं की शिक्षा के क्षेत्र में प्रोफेशनल्स को एक मंच पर लेकर आता है.

हाल ही में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ने 10 देशों में 22,996 बच्चों पर किए गए 15 अध्ययनों का मेटा-एनालिसिस किया. इसमें पाया गया कि जिन बच्चों का अध्ययन किया गया उनमें से 79.4 फीसद पर महामारी और उसके बाद क्वारंटीन का नकारात्मक असर हुआ; कम से कम 22.5 फीसद बच्चे कोविड से काफी डरे हुए थे; 35.2 फीसद ने ऊबने की शिकायत की; और 21.3 को ठीक से नींद न आने की समस्या थी. दिल्ली के वसंत वैली स्कूल की प्रिंसिपल रेखा कृष्णन कहती हैं, ''यह स्वीकार करना लगभग नामुमकिन है कि 2020 में दाखिला लेने वाले बच्चे अपने सहपाठियों को स्क्रीन पर एक बॉक्स के रूप में जानते हैं. उन्हें उनके साथ सामाजिक रूप से मिलने-जुलने या खेल के जरिए घुलने-मिलने का मौका ही नहीं मिला. इतने लंबे समय तक स्कूल बंद होने का नतीजा हमारे बच्चों के लिए न तो सकारात्मक है और न ही फायदेमंद. इसे ठीक से समझने और इसके असर को दूर करने में कई साल लग जाएंगे.''

जहां तक स्कूल दोबारा खोलने की बात है तो इसके बारे में अभिभावकों की राय मिली-जुली है. एक ओर जहां कामकाजी अभिभावक अपने बच्चों को फिर से स्कूल भेजने के लिए तैयार हैं, वहीं घर के माहौल में बच्चों को रखने वाले माता-पिता इसे लेकर अनिच्छुक हैं. दिल्ली की उद्यमी और पांच साल तथा उससे कम उम्र की दो बेटियों की मां गुरसिमरन मान जैसी अभिभावकों का मानना है कि बच्चों को दोबारा स्कूल भेजने का फैसला उन्हें स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी ढांचे की उपलब्धता पर आधारित होना चाहिए. ''हमारे बच्चों की शिक्षा और जीवन सबसे बड़ी प्राथमिकता है. कई लोगों का मानना है कि अगर मॉल दोबारा खुल सकते हैं तो स्कूल भी खुल सकते हैं. लेकिन सुरक्षा सर्वोपरि है. अगर क्लासरूम से बीमारी फैलने लगे तो क्या हमारे बच्चों के लिए पर्याप्त स्वास्थ्य इन्फ्रास्ट्रक्चर है?''

लगने लगी क्लास

कई राज्यों ने स्कूलों में सीनियर कक्षाओं के छात्र बुलाने या तो शुरू कर दिए हैं या करने वाले हैं

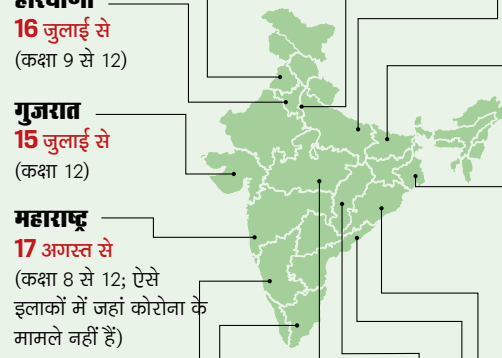

पंजाब
26 जुलाई से
(कक्षा 10 से 12)

हरियाणा
16 जुलाई से
(कक्षा 9 से 12)

गुजरात
15 जुलाई से
(कक्षा 12)

महाराष्ट्र
17 अगस्त से
(कक्षा 8 से 12; ऐसे इलाकों में जहां कोरोना के मामले नहीं हैं)

कर्नाटक
23 अगस्त से
(कक्षा 9 से 12)

तमिलनाडु
1 अगस्त से
(कक्षा 9 से 12; सिर्फ 50 फीसदी छात्र)

दिल्ली
9 अगस्त से
(कक्षा 10-12; मार्गदर्शन के लिए स्कूल आने को)

मध्य प्रदेश
26 जुलाई से
(कक्षा 11-12)

छत्तीसगढ़
2 अगस्त से
(कक्षा 12))

उत्तर प्रदेश
16 अगस्त से
(50 फीसद क्षमता के साथ सभी कक्षाएं)

बिहार
26 जुलाई से
(कक्षा 10 और 12)

पश्चिम बंगाल
नवंबर के बाद
(सभी कक्षाओं के छात्र एक दिन के अंतराल पर आएंगे)

ओडिशा
26 जुलाई से
(कक्षा 10 और 12)

आंध्र प्रदेश
16 अगस्त से
(सभी कक्षाएं खुल गईं)

ग्राफिकः तन्मय चक्रवर्ती

दोहरी समस्या

माता-पिता दो तरह की समस्याओं से जूझ रहे हैं—बच्चों की अपनी सुरक्षा और सेहत तथा घर पर रहने वालों की सुरक्षा और सेहत. मेडिकल जर्नल *जेएएमए पीडियाट्रिक्स* में 18 अगस्त को प्रकाशित एक रिपोर्ट में कोविड मामले वाले 6,280 घरों का अध्ययन किया गया. इसमें पाया गया कि तीन साल तक के बच्चों से घर में कोविड वायरस के संक्रमण का जोखिम 14-17 वर्ष की आयु वाले बच्चों के मुकाबले 43 फीसद ज्यादा है. मैक्स हेल्थकेयर के ग्रुप मेडिकल डायरेक्टर डॉ. संदीप बुद्धिराजा का कहना है, ''कई परिवारों को चिंता है कि उनका बच्चा घर के उन दूसरे सदस्यों को इस वायरस से संक्रमित कर सकता है जो बुजुर्ग या कई बीमारियों वाली बेहद संवेदनशील श्रेणी में हो सकते हैं. वैक्सीन की दो खुराक से यह जोखिम काफी कम हो जाएगा.''

कोविड की वजह से खुद बच्चों की मौत का उतना जोखिम नहीं है. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक, भारत में कोविड की वजह से मरने वाले सिर्फ एक फीसद व्यक्तियों की उम्र 17 साल से कम थी. इसके मुकाबले अस्पताल में भर्ती सभी कोविड मरीजों में से 88 फीसद की उम्र 45 साल से ज्यादा थी. मरने वाले करीब 40 फीसद बच्चों (नवजात शिशुओं समेत 10 साल से कम उम्र) को दूसरी बीमारियां भी थीं और अस्पताल में भर्ती होने वाले नौ फीसद कोविड-पॉजिटिव बच्चों को पहले से कोई न कोई गंभीर किस्म की बीमारी थी.

दुनियाभर में कोविड-पॉजिटिव बच्चों के अस्पताल में दाखिल होने के मामलों में इजाफा हुआ है, खासकर अमेरिका में यह तेजी से बढ़ा है, जहां डेल्टा वेरिएंट फैल रहा है. भारत में आई दोनों लहरों के दौरान कुल मामलों में करीब तीन फीसद मामले दस साल तक के बच्चों के थे. कुछ जिलों में ज्यादा से ज्यादा वयस्कों को टीका लगाए जाने के साथ ही बच्चों में संक्रमण की दर बढ़ रही है—महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में जुलाई 2021 में 9,000 बच्चे कोविड-पॉजिटिव पाए गए, जो वहां के कुल मामलों का 10 फीसद है. अलबत्ता 95 फीसद मामलों में कोई लक्षण नहीं था और अस्पताल में भर्ती कराने की जरूरत नहीं थी.

बच्चों में कोविड का सबसे सामान्य लक्षण हलका बुखार और खांसी है, और ज्यादातर में कोई लक्षण नहीं दिखता. मेडिकल जर्नल *द लांसेट ऐंड एडोलसेंट हेल्थ* में ब्रिटेन में

2,50,000 बच्चों पर किया गया अध्ययन अगस्त 2021 में प्रकाशित किया गया. इसमें पाया गया कि लक्षण वाले ज्यादातर बच्चे छह दिन बाद ठीक होने लगे और चार हफ्ते से ज्यादा लक्षण वाले बच्चों की संख्या कम है.

अलबत्ता, असली चिंता यह है कि कोविड के बाद बच्चों में तेजी से बढ़ रही परेशानियों की ओर लोगों का ध्यान कम जा रहा है. मुंबई में फोर्टिस हॉस्पिटल में बालरोग विशेषज्ञ डॉ. जेसल शेठ का कहना है, ''(वयस्कों के मुकाबले बच्चों में) मौत का जोखिम कम है, लेकिन मौजूदा सबूत सुझा रहे हैं कि जिनमें स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें हैं उनमें रिकवरी के बाद गंभीर लक्षण उभरने या इनफ्लैमेटरी सिंड्रोम के ज्यादा जोखिम हैं.

कोविड-नेगेटिव होने के चार से छह हफ्ते के बाद बच्चों में मल्टीसिस्टम इनफ्लैमेटरी सिंड्रोम (एमआइएस-सी) विकसित होता है. ऐसा बिना लक्षण वाले बच्चों में भी हो सकता है, लिहाजा अभिभावकों में इस बात को लेकर घबराहट है कि जांच में कोविड-निगेटिव होने के बावजूद उनके बच्चे मल्टी-ऑर्गन इनफ्लैमेशन की वजह से अचानक बीमार हो रहे हैं.'' इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक इंटेंसिव केयर चैप्टर की ओर से जारी आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत में 2,000 से ज्यादा एमआइएस-सी के मामले आए हैं. इनमें से करीब 60 फीसद मामलों में इनफ्लैमेशन (सूजन) ने दिल को प्रभावित किया. डॉ. बुद्धिराजा बताते हैं, ''बच्चों में कोविड आम तौर पर खुद तक ही सीमित रहने वाला होता है. लेकिन अभिभावकों को बच्चों की रिकवरी के कुछ समय बाद तक लक्षणों पर नजर रखे रहनी चाहिए.''

जहां तक बच्चों को टीका लगाने का मामला है तो परीक्षण चल रहा है और 21 जुलाई को जायडस के तीन-डोज वाली डीएनए वैक्सीन को 12-18 साल के बच्चों के लिए इमर्जेंसी इस्तेमाल की मंजूरी दे दी गई. यह सुई मुक्त डोज है, जिसे बच्चों के लिए तैयार किया गया है, और कोविड के खिलाफ इसकी क्षमता 66 फीसद है. इससे स्कूलों में कक्षाएं तेजी से और सुरक्षित ढंग से खोलने की उम्मीद बंधी है.

स्कूल क्या कर सकते हैं?

स्कूल दोबारा खोलने का फैसला कुंठा और बेसब्री के आधार पर नहीं किया जा सकता या दूसरे देशों या राज्यों के मॉडल को अपनाकर इस बारे में निर्णय नहीं किया जा सकता. इसे आस-पड़ोस और शहर के हालात पर सोचे-समझे फैसले पर आधारित होना चाहिए और ऐसा डॉक्टरों, अभिभावकों, शिक्षकों और छात्रों से बातचीत के बाद ही करना चाहिए. वसंत वैली स्कूल की कृष्णन कहती हैं, ''यह नाजुक परिस्थिति से गुजरने जैसा है. सुरक्षित शारीरिक दूरी और सुरक्षा प्रोटोकॉल तैयार करना तो है ही, साथ ही इन जगहों का इस्तेमाल करने वालों को उसके बारे में प्रशिक्षित भी करना होगा. शिक्षक के नाते मुझे लगता है कि हमें पूरे शहर के स्कूल खोलने का फैसला नहीं करना चाहिए, बल्कि इसके बारे में निर्णय हर इलाके के हालत पर आधारित होना चाहिए.''

स्कूलों को अन्य बातों के अलावा, अपने इलाके या जोन में टेस्ट पॉजिटिविटी रेट पर ध्यान देने की जरूरत है. इसके अलावा, उन्हें सामाजिक दूरी के नियम सख्ती से लागू करने चाहिए, स्कूलों में परीक्षण की सुविधा होनी चाहिए, स्कूलों में हाइब्रिड (ऑनलाइन-ऑफलाइन) कक्षाएं चलाने की सुविधा होनी चाहिए और सभी शिक्षकों तथा स्टाफ के सदस्यों का टीकाकरण पक्का किया जाना चाहिए.

बच्चों की मिक्सिंग रोकने और संक्रमण की स्थिति में आसानी से क्वारंटीन के लिए ''बबल'' की अवधारणा को अपनाना चाहिए. वत्स बताती हैं, ''इस सोच के तहत एक बबल में 10 से 12 बच्चे और चार वयस्क होते हैं, सो, अगर एक बबल में कोई संक्रमित होता है तो उस बबल के लोगों को क्वारंटीन में रख दिया जाएगा. बबल का इस्तेमाल स्कूल की विभिन्न जगहों पर अलग-अलग दिनों में टाइमटेबल के मुताबिक किया जाएगा. सभी खिलौनों और उपकरणों को रोजाना सैनिटाइज किया जाएगा और सॉफ्ट टॉय या लाइब्रेरी की किताबें दो बच्चों को शेयर न करना सुरक्षा प्रोटोकॉल का महत्वपूर्ण हिस्सा होगा.'' अर्ली चाइल्डहुड एसोसिएशन और एसोसिएशन फॉर प्राइमरी एजुकेशन ऐंड रिसर्च की ओर से तैयार पोस्ट कोविड गाइडलाइंस फॉर रीओपनिंग ऑफ प्रीस्कूल्स ऐंड डे केयर्स शीर्षक वाले दस्तावेज में ये सुझाव दिए गए हैं.

गुड़गांव का हेरिटेज एक्सपीरिएंशियल लर्निंग स्कूल निश्चित प्रोटोकॉल और मानक संचालन प्रक्रियाओं के साथ जनवरी 2021 से ही दोबारा खुलने को तैयार है. उनके सुरक्षा प्रोटोकॉल में सभी आगंतुकों के तापमान को देखना, स्कूल कैंपस का नियमित सैनिटाइजेशन, सामाजिक दूरी बरतने और हर वक्त मास्क पहने रखने की आवश्यकता शामिल है. सभी छात्रों और शिक्षकों को स्कूल को सूचित करने को कहा गया है और तबीयत खराब होने की स्थिति में स्कूल न आने को कहा गया है. हेरिटेज एक्सपीरिएंशियल लर्निंग स्कूल की प्रिंसिपल नीना कौल का कहना है, ''हम अभिभावकों के साथ निरंतर संपर्क में हैं और छात्रों को स्कूल भेजने के बारे में उनकी दिलचस्पी के ऑनलाइन सर्वेक्षण भी किए गए हैं. उनमें से ज्यादातर ने हमें अपनी सहमति दे दी है.''

स्कूलों को अपने परिसर में कक्षाएं शुरू करने से पहले तमाम चीजों में एक यह भी देखना होगा कि उनके आस-पड़ोस या इलाके में कोरोना मामलों की स्थिति क्या है

वैसे, यह मान लेना गलत होगा कि स्कूल जल्दी ही महामारी पूर्व के मॉडल को अपना लेंगे. उन्हें छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे और ऑनलाइन तथा इन-पर्सन स्कूलिंग की व्यवस्था पर एक साथ काम करना होगा. कृष्णन कहती हैं, ''स्कूलों को लर्निंग के हाइफ्लेक्स मॉडल (जिसमें कुछ बच्चे शारीरिक रूप से क्लास में मौजूद होंगे जबकि कुछ वर्चुअली शामिल होंगे) शामिल करने की जरूरत है और सिंक्रोनस (एक साथ होने वाले) और एसिंक्रोनस (अलग-अलग समय होने वाले) मॉडल की जरूरत है.'' इसकी मिसाल के तौर पर पेश किए गए देशों में स्कूल सुरक्षित ढंग से खोले गए हैं. वहां टीकाकरण की अधिक दर, बड़े पैमाने पर परीक्षण, वेंटिलेशन सिस्टम आधुनिक बनाने के लिए मोटा निवेश और सुविचारित कोविड प्रक्रिया जैसी पूर्व शर्तें शामिल हैं. भारत को इन मुद्दों पर भी विचार करना चाहिए.

मान पूछती हैं, ''क्या स्कूल दोबारा खोलने या हमारे बच्चों को लर्निंग के नजरिए से पिछड़ा रखने का विकल्प है? वयस्कों के तौर पर हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने बच्चों को सिखाएं कि वे अपने जीवन में इस अप्रत्याशित समय को किस तरह देखें. हमें इस पर ध्यान देना चाहिए कि हम क्या कर सकते हैं और हमारे बस में क्या है.'' इसका मतलब होगा कि टेक्नोलॉजी को कामचलाऊ माध्यम की बजाए निरंतर उभरते, सहायक साधन के रूप में देखना होगा. आज के संदर्भ में टेक्नोलॉजी जूम क्लासेज तक सीमित लगती है, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं रहना है. आगे बढ़ने की इकलौती राह सिंक्रोनस लर्निंग और असिंक्रोनस लर्निंग के बीच संतुलन के साथ लचीलापन और अनुकूलन स्थापित करना है, पठन-पाठन के हाइब्रिड मॉडल के साथ इन-पर्सन क्लासेज शुरू करना है. हां, कोई एक मॉडल सबके लिए कारगर नहीं हो सकता.

—साथ में **सोनाली आचार्जी**

जिन्होंने उतारी हथेली पे दुनिया

महामारी के दौरान ओटीटी प्लेटफॉर्मों ने भारतीय मनोरंजन जगत के सांचे-ढांचे को हमेशा के लिए बदलकर रख दिया. और इस पूरे उथल-पुथल की प्रक्रिया की अगुआई की है जुनूनी महिलाओं के एक छोटे-से समूह ने

सुहानी सिंह

फोटोः बंदीप सिंह

बीते डेढ़ साल से कोविड-19 महामारी ने हिंदुस्तानियों को भले ही घरों में कैद कर दिया हो पर मायूसी और बर्बादी के बीच एक क्षेत्र में खासा उछाल आया और वह है स्ट्रीमिंग मनोरंजन का क्षेत्र. ओवर द टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्मों की बिल्कुल नई दिलेर दुनिया के नए रचियताओं और वितरकों की पूरी नई जमात ने घरों में कैद हिंदुस्तानियों का वक्त गुजारने का तरीका खामोशी से आमूलचूल बदल डाला. केबल टीवी की तरह तय वक्त पर और पुरानी फिल्में बार-बार दिखाने के अत्याचार से हटकर ओटीटी प्लेटफॉर्म इंटरनेट के जरिए सभी विधाओं, फॉर्मेट और भाषाओं के दिलबहलाऊ कार्यक्रम स्ट्रीम करते हैं. सबसे महत्वपूर्ण यह कि यह सब अपनी सुविधा और पसंद से किसी भी वक्त, किसी भी जगह और किसी भी माध्यम पर देखा जा सकता है, चाहे वह सेलफोन हो, लैपटॉप या टैबलेट और हां, टीवी स्क्रीन भी.

भारतीय मनोरंजन उद्योग के लिए 2020 वाकई आमूलचूल बदलाव का साल था. ढेरों विकल्पों की मौजूदगी ने भारतीय दर्शकों को आखिरकार बिगाड़ ही दिया. ओटीटी ने बड़ी तादाद में जो फिल्में, सीरीज, एंथोलॉजी, डॉक्यूमेंट्री और शॉर्ट फिल्में पेश कीं, वे केवल देसी खुराक तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उनमें दुनिया भर के ढेरों पकवान और व्यंजन

आउटफिट: सुकेत धीर; जूलरी: एजोटीक ऐंड क्यूरियो कलेक्ट; स्टाइलः ईशा अमीन

एकता कपूर

जॉइंट एमडी, आल्टबालाजी

हर साल औसतन 20 वेब सीरीज तैयार कर रहा. अगले साल 40 के लिए तैयारी

मोनिका शेरगिल

वी-पी, कंटेंट, नेटफ्लिक्स

2019-20 में कंटेंट तैयार करने का बजट 3,000 करोड़ रु. था. 40 टाइटल रिलीज को तैयार

अपर्णा पुरोहित

हेड, इंडिया ओरिजनल्स, अमेजन प्राइम वीडियो

भारत अमेजन ओरिजनल्स का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है. 70 प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है

यानी पूरा का पूरा बफे था. चाहे वह एंथोलॉजी सीरीज रे हो, *मनी हाइस्ट* (स्पेन) में प्रोफेसर के कारनामे या कोरियन ड्रामा सीरियलों के 16 एपिसोड लगातार देखना, इनमें सबके लिए कुछ न कुछ था. जब फिल्म उद्योग में अनिश्चितता का बोलबाला था तब 40 के करीब ओटीटी प्लेटफॉर्मों ने दर्शकों के लिए 2020 में करीब 1,200 घंटों की ताजा और नई सामग्री परोसी. इनमें ओटीटी प्लेटफॉर्मों के दिग्गज नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम वीडियो, डिज्नी-हॉटस्टार, सोनी लिव और जी5 भी थे.

ईवाइ-फिक्की की मार्च 2021 की एक रिपोर्ट तस्दीक करती है कि महामारी ने इस उद्योग की वृद्धि को तेज रफ्तार दी, जब पिछले साल 2019 के 1.05 करोड़ से बढ़कर 2.8 करोड़ लोगों ने ओटीटी के 5.3 करोड़ सबस्क्रिप्शन का भुगतान किया. बॉलीवुड ओटीटी की ताकत को अब और अनदेखा नहीं कर सकता. आखिर पैसा यहां है और नौकरियां भी यहीं हैं. मीडिया पार्टनर एशिया की 'द फ्यूचर ऑफ इंडियाज ऑनलाइन वीडियो मार्केट' रिपोर्ट के मुताबिक, 2021 में ओटीटी प्लेटफॉर्मों की तरफ से कंटेट में 1 अरब डॉलर के निवेश की उम्मीद है. अक्षय कुमार, अजय देवगन और शाहिद कपूर उन बहुत-से सितारों में हैं जो डिजिटल माध्यम में पहला कदम रखने जा रहे हैं. जब जी5 सरीखे भारतीय स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म भारत में जल्द आने का मंसूबा बना रहे एचबीओ मैक्स सरीखे अंतरराष्ट्रीय प्लेटफॉर्मों से होड़ कर रहे हों, तो प्रतिस्पर्धा और बढ़ेगी ही.

फिल्म उद्योग पर राज करने वाले लोग भी बदल रहे हैं, क्योंकि पारंपरिक फिल्म निर्मातों की जगह ओटीटी प्लेटफॉर्मों के मठाधीशों ने ले ली है और वे ही यह तय करने में अहम भूमिका अदा कर रहे हैं कि भारत क्या देखे. तीन सबसे लोकप्रिय प्लेटफॉर्मों की क्रिएटिव यानी सृजन शाखाओं की अगुआई कर रही तीन मोहतरमाएं इस स्ट्रीमिंग क्रांति की सबसे अगली कतार में हैं : अमजेन प्राइम वीडियो में इंडिया ओरिजिनल की हेड अपर्णा पुरोहित, नेटफ्लिक्स में वाइस-प्रेसिडेंट, कंटेट, मोनिका शेरगिल और बालाजी टेलीफिल्म्स की जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर एकता कपूर. *इंडिया टुडे* मैग्जीन के आवरण के लिए पहली बार एक साथ आईं ये तीनों नए मनोरंजन की मलिकाएं हैं.

मलिकाओं का उत्थान

इनमें से हरेक के पास शिखर पर पहुंचने की अपनी दिलकश कहानी है. मसलन पुरोहित दूरदर्शन के *तमस, बुनियाद, हम लोग सरीखे शो* और बाद में फिल्म उत्सवों में विश्व सिनेमा का आनंद लेते हुए दिल्ली में पली-बढ़ीं. जामिया मिल्लिया इस्लामिया के जनसंचार प्रोग्राम की यह पूर्व छात्रा मुंबई आ गई और पहले सोनी टीवी, यूटीवी और राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम में काम किया. 2015 में प्राइम वीडियो में आईं, जहां उन्होंने फिल्मकारों को मनाया कि वे लॉन्च होने जा रहे एसवीओडी (सब्स्क्रिप्शन वीडियो ऑन डिमांड) प्लेटफॉर्म के लिए ऐसी फिल्में बनाएं जो वे दिल से बनाना चाहते हैं. 42 वर्षीय पुरोहित याद करती हैं, ''पहली प्रतिक्रिया (हमें यह मिलती) थी कि 'तुम लोग एक बड़ा मॉल हो. कंटेट के बारे में तुम जानते ही क्या हो?' एक फिल्ममेकर हैं, जिनकी मैं बहुत तारीफ करती हूं, उन्होंने कहा, 'हमारे भीतर अब भी कुछ फिल्में बची हैं. मेहरबानी करके हमें ये वेब शो करने के लिए न कहें'.'' पुरोहित को अब कहानियों के पीछे भागना नहीं पड़ता. उन्हें रोज करीब 10 प्रस्ताव मिलते हैं. 2018 में ऐसा ही एक

''क्रिएटिविटी की एक लहर उठ रही है. इसकी अभी शुरुआत ही है. हर कोई उम्दा किस्से और वैसे ही किस्सागो ढूंढ रहा है...जब हम खुद के सामने एक चुनौती उछालते हैं तो उसके नतीजे में दर्शक को शानदार चीजें देखने को मिलती हैं''

मोनिका शेरगिल
वी-पी, कंटेंट, नेटफ्लिक्स

''शुरू में लोगों की पहली प्रतिक्रिया यही थी कि 'यार, तुम लोगों ने बड़ा-सा मॉल खोल के रख दिया है. तुम्हें कंटेंट के बारे में भला क्या पता? पर अब लोग हमारे साथ खुशी-खुशी काम करने के लिए आ रहे हैं''

अपर्णा पुरोहित
हेड, इंडिया ओरिजनल्स, अमेजन प्राइम वीडियो

''एक समय था जब मैं कंटेंट को लेकर इतना परेशान नहीं होती थी. पर अब तो मेरी नींद ही उड़ जाती है और इसमें मुझे मजा आ रहा है. आप प्रेरित होते हैं, माथा पीटते हैं और फिर उछलते-कूदते हैं. आपके काम में जिंदादिली का यही तो सबूत है''

एकता कपूर
जॉइंट एमडी, आल्टबालाजी

दुनिया स्ट्रीमिंग की

भारत में स्ट्रीमिंग मार्केट के प्रमुख खिलाड़ियों पर एक नजर

आप भी जानें अपनी स्ट्रीमिंग सर्विस के बारे में

ग्राहकी आधारित वीडियो ऑन डिमांड (एसवीओडी)

- ग्राहक यहां कंटेंट देखने के लिए महीने या साल के हिसाब से सब्स्क्रिप्शन खरीदते हैं
- नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम वीडियो, डिज्नी+हॉटस्टार, वूट सेलेक्ट, आल्टबालाजी, जी5, सोनीलिव, एमयूबीआइ और अन्य

विज्ञापन आधारित वीडियो ऑन डिमांड (एवीओडी)

- प्रोग्राम फ्री लेकिन विज्ञापन के साथ दिखाए जाते हैं; संबंधित टीवी शो भी उसी में जोड़ देते हैं
- एमएक्स प्लेयर, टीवीएफ प्ले, वूट, डाइस मीडिया, डिज्नी+हॉटस्टार, जी5, सोनीलिव

टेलीकॉम राजस्व

- इसके तहत मोबाइल सर्विस ऑपरेटर उपभोक्ताओं को विभिन्न ओटीटी की कांप्लीमेंटरी एक्सेस देते हैं
- जियोटीवी, जियोसिनेमा, एयरटेल स्ट्रीम, वीआइ मूवीज ऐंड टीवी

ट्रांजैक्शनल वीडियो ऑन डिमांड (टीवीओडी)

- इसमें दर्शक ग्राहकी लेने की बजाए अपनी पसंदीदा चीज देखने को उसका पेमेंट करते हैं
- जीप्लेक्स, यूट्यूब

NETFLIX

शुरुआत
जनवरी 2016 में
अनुमानित ग्राहक
46 लाख
बेस्ट सेलर
सैक्रेड गेम्स, देहली क्राइम, लिट्ल थिंग्स

prime video

शुरुआत
दिसंबर 2016 में
अनुमानित ग्राहक
1.8 करोड़
बेस्ट सेलर
इनसाइड एज, मिर्जापुर, द फैमिली मैन, पाताल लोक

Disney+ hotstar

शुरुआत
हॉटस्टार के रूप में फरवरी 2015 में; अप्रैल 2020 में डिज्नी+हॉटस्टार हो गया
अनुमानित ग्राहक
3 करोड़
बेस्ट सेलर
आइपीएल, आर्य, स्पेशल ऑप्स

ZEE5

शुरुआत
फरवरी 2018 में
अनुमानित ग्राहक
40 लाख
बेस्ट सेलर
रंगबाज

voot select

शुरुआत
मार्च 2020 में
सक्रिय ग्राहक
फरवरी 2021 तक 10 लाख
बेस्ट सेलर
असुर, द गॉन गेम, बिग बॉस

ALT BALAJI

शुरुआत
अप्रैल 2017 में
सक्रिय ग्राहक
जून 2021 तक 24 लाख
बेस्ट सेलर
गंदी बात, ब्रोकन बट ब्यूटीफुल

SONY liv

शुरुआत
2013 में
अनुमानित ग्राहक
70 लाख
बेस्ट सेलर
स्कैम 1992: द हर्षद मेहता स्टोरी, यूरो 2020, टोक्यो 2020 और विदेशों में क्रिकेट सरीखे खेल के आयोजन

MXPLAYER

शुरुआत
पहले वीडियो प्लेयर था, 2019 में ओटीटी प्लेटफॉर्म के रूप में मैदान में
ग्राहक
पता नहीं, अनुमानित उपभोक्ता 20 करोड़
बेस्ट सेलर
आश्रम, क्वीन, रक्तांचल, समांतर

स्रोत: मीडिया पार्टनर्स एशिया की 'भारत में वीडियो ऑनलाइन मार्केट का भविष्य' रिपोर्ट

प्रस्ताव यूपी के कस्बे की पृष्ठभूमि में ऐक्शन, दुश्मनी, बदला और हास-परिहास से भरा क्राइम ड्रामा बनाने का प्रस्ताव था. पुरोहित कहती हैं, ''डेटा से हमें पता चला कि वाकई मर्दों का दिल बहलाने लायक कुछ था ही नहीं.'' आज *मिर्जापुर* प्राइम के सबसे लोकप्रिय शो में है. इसके तीसरे सीजन को हरी झंडी मिल गई है और औरतें भी इसकी मुरीद हैं.

नेटफ्लिक्स में शेरगिल तय करती हैं कि 2019 और 2020 में भारत की मौलिक फिल्में, शो, डॉक्यूमेंटरी और कॉमेडी स्पेशल बनाने के लिए अलग रखे गए 3,000 करोड़ रुपए का बेहतर से बेहतर इस्तेमाल कैसे हो. नेटफ्लिक्स ने भारत में बस इतना ही निवेश नहीं किया. स्ट्रीमिंग की यह दिग्गज कंपनी अपनी तरह के पहले उद्यम में मुंबई में पोस्ट-प्रोडक्शन सुविधा केंद्र बना रही है. शेरगिल कहती हैं, ''हमें दर्शकों को बेहतरीन कहानियां सुनानी हैं तो समुदाय में योगदान देना और इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश करना होगा''

इन्हीं की खोज करते शेरगिल को अब दो दशक से ज्यादा वक्त हुआ. यह खोज उन्होंने पत्रकार बनकर शुरू की. 1990 के दशक के शुरुआती सालों में टीवी सीरीज *लिविंग ऑन द एज* के लिए पर्यावरण और सामाजिक न्याय से जुड़ी रिपोर्ट करते हुए वे भारत भर में घूमीं. उन्होंने आमिर खान की तरफ से होस्ट किए गए *सत्यमेव जयते* सरीखे शो बनाए और *जस्सी जैसी कोई नहीं* तथा *सीआइडी* सरीखे शो भी. नेटफ्लिक्स में शेरगिल पाती हैं कि ''दर्शकों की कई जिम्मेदारियां उनके सिर पर'' हैं, क्योंकि विभिन्न दर्शकों की बारीक पसंदों के हिसाब से अनेक किस्म की सामग्री उन्हें परोसनी होती है. नतीजा है *मसाबा मसाबा* और *जामतारा: सबका नंबर आएगा* सरीखे शो, जिनमें पहले में हकीकत और फसाना का फर्क धुंधला हो जाता है और दूसरा झारखंड के फिशिंग घोटाले से प्रेरित क्राइम ड्रामा है.

एकता कपूर के पास भले ही नेटफ्लिक्स के बजट का महज पांचवां हिस्सा भर हो, उनके हौसलों में कमी नहीं आई. *सास भी कभी बहू थी* और *पवित्र रिश्ता* सरीखे टीवी शो से महिलाओं का दिल वे जीत ही चुकी थीं, फिर उन्हें लगा कि आबादी के दो प्रमुख तबके युवा और पुरुष भी संभावनाओं से भरपूर हैं. 2017 में उन्होंने आल्टबालाजी शुरू किया. 1994 में टीवी प्रोड्यूसर बनकर शुरुआत करने वाली 46 वर्षीय एकता कहती हैं, ''आल्ट नहीं होता तो मैं बूढ़ी और बेकार हो गई होती. एक वक्त था जब कंटेंट को लेकर मैं नींद खराब नहीं करती थी. मगर अब मैं करती हूं और मुझे बहुत अच्छा लगता है. ''

आल्टबालाजी अब सबसे उर्वर एसओवीडी प्लेटफॉर्म में से एक है. इसके पास 86 वेब शो की लाइब्रेरी है जिनमें से कई जी5 और एमएक्स प्लेयर सरीखे दूसरे प्लेटफॉर्म पर भी देखे जा सकते हैं. नौजवानों की कामवासना की पड़ताल करने वाले *गंदी बात, एक्सएक्सएक्स* और *वर्जिन भास्कर* सरीखे शो के चलते इसे ऐप की दुनिया के ''बैड बॉय'' (कपूर के लफ्जों में) की तरह देखा जाता है. वे कहती हैं, ''हमारे इतने सारे शो हैं पर मुझे नहीं पता कि वह क्या है, टीवी की पृष्ठभूमि से पैदा उम्मीदें या महिलाओं के जोखिम भरा या धारदार कंटेंट बनाने का जुनून, जिससे हमें यह शोहरत मिली है.''

तीनों प्लेटफॉर्मों के बीच इंटरनेट के समय को लेकर मारामारी मची है, पर इन मलिकाओं के लिए कहानियां बयान करने का

''हमारी इंडस्ट्री अब ज्यादा जीवंत-जोशीली और रणनीतिक बन रही है. अब इसे ऐसा बुनियादी ढांचा और बैंडविड्थ तैयार करना होगा जिससे कि हमारे कंटेंट के कुछ हिस्से को अंतरराष्ट्रीय बाजार में जगह मिल सके''

गौरव बनर्जी
प्रेसिडेंट, हिंदी एंटरटेनमेंट, स्टार इंडिया

इससे बेहतर वक्त नहीं हो सकता था. पुरोहित सुबह तक जागकर ओटीटी शो देखती हैं, यह जानने के लिए कि प्रतिस्पर्धी क्या कर रहे हैं और कौन नए लेखक और अदाकार आ रहे हैं. शेरगिल को काम का नशा है. वे बॉलीवुड की नामी-गिरामी शख्सियतों के साथ तेजी से करारों पर दस्तखत कर रही हैं, संजय लीला भंसाली हों या करण जौहर, या फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी. फिल्म प्रोड्यूसर भी होने के नाते कपूर ओटीटी के बढ़ते दबदबे का असर सिनेमा पर भी देख रही हैं, जहां फिल्मकारों को सोचना पड़ रहा है कि फिल्म देखने के ''तजुर्बे को और ज्यादा बड़ा'' कैसे बनाएं, ताकि दर्शक सिनेमाघरों में लौटें.

महामारी से आया उछाल

तीनों मलिकाएं एकमत हैं कि उनके दर्शकों और किस्मतों में यह उछाल महामारी की देन है. पुरोहित के 76 वर्षीय पिता और 67 वर्षीय मां की तरह कई भारतीयों ने पहली बार ओटीटी देखना शुरू किया. मीडिया एनालिटिक्स और कंसल्टिंग फर्म ओरमैक्स का 2020 का अध्ययन बताता है कि अप्रैल-अगस्त 2020 के बीच करीब 2.3 करोड़ टीवी दर्शक स्ट्रीम करने लगे, जिनमें 57 फीसद महिलाएं थीं. ओरमैक्स मीडिया के सीईओ शैलेष कपूर कहते हैं, ''साफ है कि जब टीवी शो का प्रसारण बंद था, युवा दर्शकों और पुरुषों की पहल पर बुजुर्गों व महिलाओं ने नमूने की तौर पर ओटीटी का ओरिजिनल कंटेंट देखना शुरू किया.''

ओटीटी कारोबार इसलिए भी फला-फूला कि महामारी में देश भर के सिनेमाघर काफी हद तक बंद रहे. महाराष्ट्र में तो अगस्त 2021 तक ताले पड़े थे. नतीजा यह कि बॉलीवुड के घर मुंबई में अक्षय कुमार की ताजा प्रदर्शित फिल्म *बेलबॉटम* के पोस्टर नहीं लगे. उसकी जगह डिज्नी-हॉटस्टार के *द एम्पायर* के होर्डिंग लगे.

ओटीटी कई मायनों में बराबरी लाने वाला बन गया, जिसने स्टारडम की परिभाषा बदल दी. होनहार अदाकार अब हाशियों में नहीं रहे. स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्मों पर उन्हें नामी शो मिल रहे हैं. मनोज बाजपेयी बताते हैं कि *द फैमिली मैन* के चलते हवाई अड्डों पर अब उन्हें भीड़ घेर लेती है. दिव्येंदु

''सामग्री इतनी पट गई है कि कोई शायद ही देख पाए. आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि आप परोस क्या रहे हैं. अगर आपके कंटेंट में दम है तो वह कहीं भी हो, उसे लोग खोज-खाज कर देख ही लेंगे''

सौगत मुखर्जी
हेड, ओरिजनल कंटेंट, सोनीलिव

मंदार देवधर

के दक्षिण भारत में ऐसे मुरीद थे कि *मिर्जापुर* के उनके किरदार मुन्ना के कटआउट पर दूध चढ़ाते थे. *आश्रम* और *शी* से मशहूर अदिति पोहनकर को मुंबई के उपनगर के डीमार्ट पर मास्क लगाने के बाद भी पहचान लिया गया. लायन्सगेट प्ले लेकर भारत आए लायन्सगेट, साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर रोहित जैन कहते हैं, ''इससे पंकज त्रिपाठी सुपरस्टार बन गए. आप शो इसलिए देखेंगे क्योंकि वे इसमें हैं.''

लेखे-जोखे का लम्हा

फिक्की-ईवाइ की रिपोर्ट का अनुमान है कि 2023 तक ओटीटी पर कंटेंट दोगुना बढ़कर हर साल 3,000 घंटे से ज्यादा हो जाएगा. फिर आश्चर्य क्या कि तीन या चार फिल्मों के बराबर कहानियां डिजिटल माध्यमों पर सुनाने के इच्छुक फिल्मकारों की तादाद बढ़ रही है. इनमें संजय लीला भंसाली भी हैं जो नेटफ्लिक्स के लिए लंबी सीरीज *हीरामंडी* बनाएंगे. लेखकों की भी बहार आ गई है, जो ज्यादा लंबे और ज्यादा परतदार अफसाने बयान करने को उत्साहित हैं और ऐसी एक दुनिया रचने को लेकर भी जिसमें वे बार-बार लौटकर आते रहें. पुरोहित कहती हैं, ''पहले ऐसा होता था कि हमें स्टार और डायरेक्टर मिल गए हैं, चलो अब प्रोजेक्ट खोजें.'' रवैया यह था कि ''कुछ न कुछ तो लिख लेंगे.'' ओटीटी पर सच्चा और सरल विजन बिकता है और जरूरी नहीं कि उसे परदे पर साकार करने वाला अदाकार बॉक्स ऑफिस स्टार हो.

बॉलीवुड जानता है कि दर्शकों को सिनेमाघरों में महामारी के पहले वाले स्तर तक वापस लाना टेढ़ी खीर है. सोनीलिव में ओरिजिनल कंटेंट के प्रमुख सौगत मुखर्जी कहते हैं, ''लोग सिनेमाघर जाने में एहतियात बरतेंगे. अब ओटीटी की आदत हो गई है.'' दुनिया के सबसे सस्ते मोबाइल डेटा वाले देशों में होने के चलते ाओं की फेहरिस्त में भारतीय सबसे ऊपर हैं. वे हर हफ्ते औसतन 10 घंटे और 54 मिनट इस पर खर्च करते हैं.

फिल्म स्टूडियो का नजरिया यह लगता है कि अगर तुम उन्हें हरा नहीं सकते तो उनके साथ हो लो. मुंबई के करीब हर बड़े स्टूडियो ने, धर्मा की धर्मान्टिक से लेकर वायकॉम18 की टिपिंग पॉइंट प्रोडक्शंस तक, स्ट्रीमिंग के लिए शो या फिल्में बनाने की खातिर अलग शाखा खोल ली है. एक्सेल एंटरटेनमेंट और आरएसवीपी सरीखे कुछ एक ही बैनर के तले दोनों में डुबकी लगा रहे हैं. ओटीटी प्लेटफॉर्म की हिलोर ने सबको काम में डुबो दिया है. जी5 इंडिया की हिंदी ओरिजिनल की हेड निमिषा पांडे कहती हैं, ''अच्छी कहानियां जुटाना बड़ी चुनौती है. मांग इस तेजी से बढ़ रही है कि इसे पूरा करने की कोशिश में बावले हो जाते हैं. एक बड़ा और अच्छा शो करना काफी नहीं है.'' जब स्ट्रीम करने वाले माध्यम अपने मौजूदा ग्राहकों को बनाए रखते हुए ग्राहक आधार का विस्तार करने की जद्दोजहद में हों, तो नियमित तौर पर नए प्रोग्रामों की पेशकश ही काफी नहीं. गुणवत्ता अहम भूमिका निभाती है. कंटेंट अगर रास नहीं आया तो 'कैंसिल सब्स्क्रिप्शन' पर एक क्लिक का मतलब है खेल खत्म. पांडे कहती हैं, ''आपको दर्शकों को पैसा वसूल कंटेंट देना होगा. और केवल बहुत भारी-भरकम शो देने का ही मत सोचो बल्कि खासी तादाद में और लगातार देने के बारे में सोचो.''

बढ़ती आकांक्षाएं

ओटीटी दर्शकों की लालसाएं बहुत बड़ी हैं. पुरोहित कहती हैं, यह एक ''सूक्ष्मदर्शी, समझदार दर्शक'' है जिसकी रुचि तेजी से विकसित हो रही है और अब वह अंतरराष्ट्रीय शो का स्वाद भी ले चुका है. भारतीय नेटफ्लिक्स ग्राहक जापानी एनिमे (एनिमिटेड मूवी का एक प्रकार) चुन

सकते हैं, जबकि डिज्नी+हॉटस्टार पर एचबीओ के *मेर ऑफ ईस्टटाउन* और *व्हाइट लोटस* के साथ *लोकी* जैसी हैरतअंगेज सीरीज भी देखने को उपलब्ध हैं. ओटीटी कंटेंट बनाने वाले प्रमुख स्टूडियो में से एक, ऐप्लॉज एंटरटेनमेंट के सीईओ समीर नायर कहते हैं, ''आपके पास देखने और तुलना करने के लिए दुनियाभर के कंटेंट उपलब्ध हैं. यह तथ्य भारतीय स्ट्रीमर और क्रिएटर्स को अधिक महत्वाकांक्षी बना रहा है.'' लेकिन ऐसा करने के लिए कल्पना, समय और धन की जरूरत होती है. ऐप्लॉज में, प्रति एपिसोड बजट 1-2 करोड़ रुपए से लेकर 5-6 करोड़ रुपए तक होता है. सुचेता दलाल और देबाशीष बसु की किताब के अधिकार खरीदने से लेकर पोस्ट-प्रोडक्शन तक- 2020 की सबसे सफल वेब सीरीज में से एक *स्कैम 1992: द हर्षद मेहता स्टोरी* बनाने में तीन साल लगे. नायर कहते हैं, ''8-10 भाग की सीरीज की कहानी सुनाना, समय खपाऊ और कष्टदायी अनुभव होता है.''

हिंदी मनोरंजन चैनल स्टार इंडिया के अध्यक्ष, गौरव बनर्जी इससे सहमत हैं. बनर्जी कहते हैं, ''शो का प्रेजेंटेशन टाइम बढ़ गया है. स्वाभाविक है कि उसके कंटेट की गुणवत्ता को एकदम सही रखने पर खर्च भी'' बढ़ेगा. बनर्जी के लिए, अब आइपीएल ही एसवीओडी की सबसे मूल्यवान संपत्ति नहीं है. भारत की सबसे बड़ी ओटीटी कंपनी डिज्नी+हॉटस्टार ने हाल ही में 'हर वॉच, टॉप नॉच' टैगलाइन के तहत 14 नए स्पेशल की घोषणा की. इसकी नवीनतम रिलीज, *द एम्पायर,* मुगल सम्राट बाबर पर आधारित पीरियड ड्रामा (ऐतिहासिक कथा) है जो सबूत है कि यह ओटीटी प्लेटफॉर्म किसी कहानी को एक फिल्म जैसे भव्य पैमाने पर प्रस्तुत करने के लिए खर्चने से डरता नहीं है.

ओटीटी प्लेटफॉर्मों का निवेश मनोरंजन उद्योग को बड़े पैमाने पर बदल रहा है. शो के लेखकों के पास प्रोजेक्ट का स्तर तय करने की आजादी है. एक सीरीज बनाने के लिए 'शोरनर (फिल्मों में निर्माता के समकक्ष)' की अवधारणा लोकप्रिय हो रही है.

भाषा कोई बंधन नहीं है

स्कैम 1992 से सफलता का स्वाद चखने के तुरंत बाद, इसके प्रमुख अभिनेता प्रतीक गांधी ने *विड्डल तीडी* में अभिनय किया, जो हाल ही में लॉन्च किए गए गुजराती ओटीटी प्लेटफॉर्म ओहो का पहला शो था. यह पिछले 18 महीनों में लॉन्च हुए कई भाषा-विशिष्ट प्लेटफॉर्मों में से एक था, जिसमें अहा (तेलुगु), नीस्ट्रीम (मलयालम), हीरोज (पंजाबी), कट्टे (कन्नड़) जैसे कुछ नाम शामिल हैं. डिज्नी+ हॉटस्टर के गौरव बनर्जी का मानना है कि गैर-हिंदी बाजारों से दर्शकों का एक नया विशाल

62.2
करोड़
भारत में 2020 में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या, चीन के बाद सर्वाधिक

2.8
करोड़
भारतीयों ने 2020 में 5.3 करोड़ ओटीटी ग्राहकी खरीदी, जिससे डिजिटल सब्स्क्रिप्शन राजस्व में 49% बढ़ोतरी हुई

10 घंटे 54 मिनट
औसतन इतना समय भारतीय बिता रहे थे 2020 में ऑनलाइन वीडियो देखने पर. 2019 के मुकाबले यह 30% की बढ़त थी. इससे भारत दुनिया का सबसे बड़ा मनोरंजन उपभोक्ता बन गया

...जल्द आ रहे हैं

सिनेमा के बड़े स्टार्स को भी अब लगने लगा ओटीटी का चस्का

अक्षय कुमार
(अमेजन प्राइम वीडियो)
''आज के नौजवान तो ओटीटी पर ही जुटे हुए हैं'', अक्षय ने बेटे आरव की इस टिप्पणी को गंभीरता से लिया. ऐक्शन एडवेंचर सीरीज *द एंड* में वे अपने पुराने 'खिलाड़ी' अवतार में दिखेंगे

सोनाक्षी सिन्हा
(अमेजन प्राइम वीडियो)
मेड इन हेवन के बाद अमेजन पर रीमा कागती की यह दूसरी, अभी अनाम, प्रस्तुति. अपनी ओटीटी डेब्यू में सोनाक्षी पुलिस अफसर के किरदार में

माधुरी दीक्षित नेने
(नेटफिलक्स)
फाड़ंडिंग अनामिका में माधुरी एक ऐसे सुपरस्टार, बीवी और मां के रोल में हैं जो एकाएक गायब हो जाती है. करण जौहर के धर्मान्टिक एंटरटेनमेंट की यह प्रस्तुति *15 अगस्त* (बतौर निर्माता) के बाद नेटफ्लिक्स के लिए दूसरा प्रोजेक्ट है

एपी

प्रियंका अरोड़ा-जोनास
(अमेजन प्राइम वीडियो)
वे रुसो ब्रदर्स (*एवेंजर्स* वाले) की सिटाडेल के अमेरिकी संस्करण में नुमायां हो रही हैं. यह एक्शन से भरपूर खुफिया सीरीज है, जिसकी कहानी इटली, मेक्सिको और भारत में घूमती है. इसका निर्देशन राज और डीके कर रहे हैं

अजय देवगन
(डिज्नी+हॉटस्टार)
रुद्रा: द एज ऑफ डार्कनेस में देवगन शीर्षक भूमिका निभा रहे हैं. यह लोकप्रिय ब्रिटिश सीरीज *लूथर* का रूपांतरण है. देवगन के लिए डिजिटल स्पेस व्यापक पहुंच देने वाला है, जो कि उनके मुताबिक, ''और बढ़ने ही वाला है''

शाहिद कपूर
(अमेजन प्राइम वीडियो)
द फैमिली मैन के प्रशंसक कपूर इसके निर्माता राज और डीके के साथ काम करने के इच्छुक थे. संयोगवश इन दोनों के इस ''अजीबोगरीब ड्रामा थ्रिलर'' के लिए कपूर पहली पसंद थे. तमिल सिनेमा के नामी ऐक्टर विजय सेतुपति भी इसमें हैं

*इनकी की उम्मीद

हृतिक रोशन
बीबीसी वन के टॉम हिडलसन अभिनीत *द नाइट मैनेजर* के देसी संस्करण में उनके आने की उम्मीद है

रणवीर सिंह
उड़ती-उड़ती खबर है कि वे एक बड़े अंतरराष्ट्रीय प्लेटफॉर्म के लिए बीयर ग्रिल्स के साथ एक ऐक्शन एडवेंचर नॉन-फिक्शन सीरीज में काम कर रहे हैं

अतुल रावत

''अच्छी कहानियां खोजकर ला पाना सचमुच बड़ा चुनौती वाला काम है. मांग इतनी तेजी से बढ़ रही है कि उसे पूरा कर पाना मुश्किल हो रहा है. कोई एक बढ़िया-सा शो कर देना ही काफी नहीं है अब''

निमिषा पांडेय
हेड, हिंदी ओरिजनल्स, जी5

समूह आएगा. वे कहते हैं, ''मुंबई में बैठकर, हमें लगता है कि हिंदी भारत की सबसे बड़ी भाषा है लेकिन यह देश के आधे हिस्से से ही बात करती है. हम शेष आधे से कैसे बात करते हैं?'' प्लेटफॉर्म पहले ही तमिल और तेलुगु में शो जारी कर चुका है और कई नए शो बना रहा है. फिक्की-ईवाइ की रिपोर्ट कहती है कि 2025 तक ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर क्षेत्रीय भाषा की सामग्री की खपत चरम पर होगी, जो कुल खर्च समय के 50 प्रतिशत को पार कर जाएगी.

उज्ज्वल भविष्य

मनोरंजन की दुनिया के अधिकांश क्षेत्रों में राजस्व में गिरावट देखी गई, जबकि 2020 में डिजिटल मीडिया और ऑनलाइन गेमिंग की कमाई बढ़ी. आरबीएसए सलाहकारों की जुलाई 2021 की एक रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि भारत में स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की संख्या 2021 में 76 करोड़ से अधिक हो जाएगी जो चीन के दूसरी सबसे बड़ी संख्या होगी. जहां भारत के लगभग 70 प्रतिशत लोग मोबाइल पर वीडियो सामग्री देखते हैं, वहीं टीवी सेट की कीमतों में गिरावट हो रही है. स्मार्ट टीवी का बाजार धीरे-धीरे विकसित हो रहा है. 32 इंच के स्मार्ट टीवी की कीमत 2019 में 8,499 रुपए थी जो 2020 में 7,200 रुपये हो गई. सोनीलिव के मुखर्जी का मानना है कि इससे ''गुणवत्ता और कथाओं में एक बड़ा बदलाव'' आएगा. एसवीओडी और इंटरनेशनल बिजनेस, वायकॉम18 डिजिटल वेंचर्स के प्रमुख फरजाद पालिया का कहना है कि नवाचार समय की मांग है. पालिया ने कहा, ''हर मंच खुद को औरों से अलग करना चाहता है. अगर आप कुछ भी अलग नहीं करते हैं, तो उपभोक्ता दूर हो जाएंगे.'' अगस्त में वायकॉम18 ने वूट सेलेक्ट पर अपने लोकप्रिय रियलिटी शो *बिग बॉस* का एक ओटीटी संस्करण लॉन्च किया जो एवीओडी (विज्ञापन-आधारित वीडियो ऑन डिमांड) प्लेटफॉर्म वूट पर *बिग बॉस* के घर में हो रही गतिविधियों का 24 घंटे का लाइव फीड चला रहा है. वे कहते हैं, ''हमने [ओटीटी] उद्योग को एक मॉडल दिया है कि कैसे शो से पैसे बनाए जा सकते हैं.''

हालांकि, ओटीटी की अपनी चुनौतियां भी हैं. सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली फिल्मों और टीवी शो की सफलता को क्रमश: बॉक्स ऑफिस की कमाई और टीआरपी के माध्यम से मापा जा सकता है, लेकिन दर्शकों की संख्या के आंकड़ों को लेकर स्ट्रीमर पारदर्शी नहीं हैं. यह कैसे तय होगा कि कोई शो सफल है या नहीं? सोनीलिव के मुखर्जी कहते हैं, ''अगर आपको दूसरे सीजन के अनुरोध मिल रहे हैं, तो यह अच्छा संकेतक है.'' डिज्नी+हॉटस्टार के बनर्जी ओटीटी को एक टी-20 मैच नहीं, बल्कि ''एक लंबा खेल'' मानते हैं. वे कहते हैं, ''यह एक बच्चा है जो अपनी ताकत पहचानना सीख रहा है और इसने थोड़ा सा दौड़ना भी शुरू कर दिया है. ''

चुनौतियां भी सामने हैं. केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने फरवरी में जो गाइडलाइंस जारी की हैं. उनके अनुसार, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स को दर्शकों की आपत्तियों का निराकरण करने के लिए शिकायत निवारण बोर्ड गठित करना होगा. प्रोग्रामिंग में खुले हाथ से काम करने वाली मलिकाओं को अब नए कार्यक्रमों को लेकर और सचेत होना पड़ेगा. आल्ट के शो *वर्जिन भास्कर* की वजह से कपूर पर सौ से ज्यादा केस दर्ज हो चुके हैं. हाल ही में अमेजन प्राइम वीडियो के पॉलिटिकल ड्रामा *तांडव* को, इसके एक किरदार के भगवान शिव के जैसे परिधान में होने के कारण, विरोध का सामना करना पड़ा. बाद में इस हिस्से को काटा गया. सेंसरशिप के बजाए स्ट्रीमर आत्म अनुशासन पसंद करते हैं. शेरगिल गाइडलाइंस को बाधक नहीं मानतीं. वे कहती हैं, ''हमें विविधतापूर्ण कहानियां सुनाने से कोई भी नहीं रोक रहा है, जो हम कर रहे हैं. ''

अभी अधिकांश ओटीटी ग्राहक आधार वर्तमान में चार महानगरों और बड़े शहरों में केंद्रित है. इन्हें विकास की अगली लहर टियर-2 और टियर-3 शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में पैदा करनी होगी. उन्हें लुभाकर स्ट्रीमिंग की दुनिया में ले आने की जिम्मेदारी कपूर, पुरोहित और शेरगिल जैसों को निभानी होगी. ये काम पर लग भी चुकी हैं. ■

इंडिया टुडे

उत्तर भारत के टॉप कालेज

आर्ट्स, साइंस, कॉमर्स, मेडिकल, इंजीनियरिंग,
आर्किटेक्चर, लॉ, बीबीए और बीसीए

इंडिया टुडे-एमडीआरए बेस्ट कॉलेजेज सर्वे, 2021

इलस्ट्रेशनः नीलांजन दास

उत्तर भारत के बेस्ट कॉलेज

अगस्त में आइआइएम-जम्मू के पांच साल पूरे होने पर आयोजित एक समारोह में केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि यह क्षेत्र उच्च शिक्षा के एक केंद्र के तौर पर तेजी से उभरा है. और, ऐसा करने वाले जम्मू अकेला शहर नहीं है. दरअसल, हाल के दिनों में उत्तर भारत के कई शहर उच्च शिक्षा के आकर्षक स्थान के तौर पर उभरे हैं. राष्ट्रीय महत्ता वाले कई सारे संस्थानों के साथ उत्तर प्रदेश ने भी भारत के उच्च शिक्षा के मानचित्र पर उल्लेखनीय स्थान हासिल किया है. हालांकि ये सभी आंतरिक विकास रहे, उच्च छात्र गतिशीलता और पहुंच के लिए बुनियादी ढांचे के साथ विभिन्न शहरों को पहचानने और जोड़ने के लिए अब ठोस प्रयास करने की जरूरत है. 2021 के बजट में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने ऐलान किया था कि विभिन्न संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय बनाने और सामूहिक विकास के लिए नौ शहरों में ''उच्च शिक्षा समूह'' विकसित किए जाएंगे. उत्तर भारत के टॉप कॉलेजों की इंडिया टुडे की यह रैंकिंग दरअसल इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा के हॉट स्पॉट के तौर पर लोकप्रियता हासिल कर रहे शहरों पर प्रकाश डालने की कोशिश है. नौ क्षेत्रों—आर्ट्स, साइंस, कॉमर्स, मेडिकल, इंजीनियरिंग, आर्किटेक्चर, लॉ, बीबीए और बीसीए—की यह रैंकिंग मार्केटिंग ऐंड डेवलपमेंट रिसर्च एसोसिएट्स (एमडीआरए) के सहयोग से तैयार 2021 इंडिया टुडे बेस्ट कॉलेज रैंकिंग से ली गई है.

विषयवार नतीजे

आर्ट्स

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		250	250	150	200	150	1,000	1,000	2,000
1	हिंदू कॉलेज, नई दिल्ली	215.9	190.5	122.1	170.5	145.0	844.0	999.1	1843.1
2	सेंट स्टीफंस कॉलेज, नई दिल्ली	206.8	177.2	129.9	180.3	131.8	826.0	996.5	1822.5
3	मिरांडा हाउस, नई दिल्ली	204.2	184.4	112.9	170.4	131.6	803.5	988.5	1792.0
4	लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन, नई दिल्ली	197.8	175.7	92.7	160.6	137.6	764.4	993.0	1757.4
5	हंसराज कॉलेज, नई दिल्ली	194.2	173.6	92.4	131.2	124.9	716.3	991.2	1707.5
6	गार्गी कॉलेज, नई दिल्ली	187.9	156.3	79.9	137.3	110.3	671.7	953.5	1625.2
7	रामजस कॉलेज, नई दिल्ली	158.4	156.3	94.3	114.3	105.3	628.6	982.2	1610.8
8	आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज, नई दिल्ली	177.5	179.5	82.7	124.7	101.1	665.5	931.3	1596.8
9	श्री वेंकटेश्वर कॉलेज, नई दिल्ली	178.1	142.3	71.8	124.6	100.9	617.7	928.4	1546.1
10	दौलत राम कॉलेज, नई दिल्ली	175.6	161.6	79.5	106.4	102.3	625.4	905.9	1531.3
11	महाराजा अग्रसेन कॉलेज, नई दिल्ली	162.0	167.0	84.3	141.3	93.5	648.1	812.0	1460.1
12	मैत्रेयी कॉलेज, नई दिल्ली	173.9	125.5	78.6	121.6	91.5	591.1	843.1	1434.2
13	मेहरचंद महाजन डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, चंडीगढ़	163.8	126.8	82.8	91.0	102.9	567.3	865.3	1432.6
14	लक्ष्मीबाई कॉलेज, नई दिल्ली	135.3	155.6	64.7	117.3	103.1	576.0	816.8	1392.8
15	डीएवी कॉलेज, सेक्टर-10, चंडीगढ़, चंडीगढ़	168.9	126.5	79.9	87.7	83.6	546.6	830.0	1376.6
16	गोस्वामी गणेश दत्त एस.डी. कॉलेज, चंडीगढ़, चंडीगढ़	139.8	120.2	87.6	101.7	118.7	568.0	788.7	1356.7
17	शिवाजी कॉलेज, नई दिल्ली	170.8	155.0	79.2	98.8	88.8	592.6	720.3	1312.9
18	इसाबेला थोबर्न डिग्री कॉलेज, लखनऊ	166.4	130.7	78.0	113.2	98.2	586.5	714.2	1300.7
19	पोस्ट ग्रेजुएट गर्वमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, चंडीगढ़	155.1	138.1	84.0	108.0	91.3	576.5	694.5	1271.0
20	एस.एस. जैन सुबोध पीजी (स्वायत्त) कॉलेज, जयपुर	169.5	147.8	82.5	91.6	106.0	597.4	641.2	1238.6
21	फैकल्टी ऑफ आर्ट्स, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़	138.4	159.9	110.5	86.5	95.7	591.0	637.1	1228.1
22	रामानुजन कॉलेज, नई दिल्ली	176.1	171.2	72.2	126.6	84.7	630.8	490.5	1121.3
23	एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर	133.5	136.7	77.6	122.8	99.3	569.9	477.5	1047.4

आर्ट्स

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		250	250	150	200	150	1,000	1,000	2,000
24	भारती कॉलेज, नई दिल्ली	162.9	133.4	68.0	103.9	97.5	565.7	387.1	952.8
25	केशव महाविद्यालय, नई दिल्ली	151.4	56.6	102.1	59.9	37.5	407.5	496.6	904.1
26	सेंट विल्फ्रेड्स पीजी कॉलेज, जयपुर, जयपुर	112.3	149.5	94.7	125.4	107.1	589.0	246.6	835.6
27	कन्या महाविद्यालय, जालंधर	144.2	136.5	100.8	98.9	56.4	536.8	274.5	811.3
28	एमिटी स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, नोएडा	90.1	144.8	91.2	102.2	89.2	517.5	290.9	808.4
29	डीएवी कॉलेज, होशियारपुर, होशियारपुर	130.4	147.2	99.2	97.5	76.4	550.7	233.8	784.5
30	डीएवी कॉलेज, अबोहर, अबोहर	136.6	125.7	82.0	72.8	63.1	480.2	303.5	783.7
31	देशबंधु कॉलेज, नई दिल्ली	138.7	120.9	65.1	87.0	69.7	481.4	285.8	767.2
32	एमिटी स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स, गुरुग्राम	114.4	163.8	104.0	118.4	71.1	571.7	193.7	765.4
33	गोपीचंद आर्य महिला कॉलेज, अबोहर	126.5	80.1	62.2	57.2	65.1	391.1	345.1	736.2
34	बीबीके डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर	117.0	104.1	91.3	90.5	55.9	458.8	178.9	637.7
35	अवध गर्ल्स पीजी कॉलेज, लखनऊ	136.2	124.3	62.5	85.1	79.2	487.3	150.2	637.5
36	फैकल्टी ऑफ आर्ट्स ऐंड सोशल साइंसेज, आइआइएस (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी) जयपुर	130.7	152.8	105.4	115.5	76.1	580.5	51.8	632.3
37	डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, फिरोजपुर कैंट, फिरोजपुर	122.5	116.9	39.2	48.4	90.2	417.2	210.4	627.6
38	रामा पीजी कॉलेज, लखनऊ	109.4	35.6	60.2	57.3	44.4	306.9	232.5	539.4
39	परिष्कार कॉलेज ऑफ ग्लोबल एक्सिलेंस, जयपुर	93.3	123.3	52.9	117.0	88.0	474.5	27.6	502.1
40	बेबे नानकी यूनिवर्सिटी कॉलेज, मिठड़ा, कपूरथला	96.9	93.3	40.0	45.1	16.9	292.2	0.0	292.2

साइंस

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		250	250	175	175	150	1000	1000	2000
1	हिंदू कॉलेज, नई दिल्ली	221.0	209.0	138.6	130.9	147.7	847.2	1000.0	1847.2
2	मिरांडा हाउस, नई दिल्ली	216.6	207.2	133.8	138.4	145.3	841.3	996.0	1837.3
3	सेंट स्टीफंस कॉलेज, नई दिल्ली	196.0	195.2	142.0	136.3	142.0	811.5	989.1	1800.6
4	हंसराज कॉलेज, नई दिल्ली	215.1	182.8	110.5	113.5	127.9	749.8	991.4	1741.2
5	दौलत राम कॉलेज, नई दिल्ली	192.5	171.4	120.3	119.7	100.5	704.4	973.2	1677.6
6	श्री वेंकटेश्वर कॉलेज, नई दिल्ली	180.7	150.8	104.9	121.4	109.2	667.0	970.9	1637.9
7	दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, नई दिल्ली	171.9	164.1	114.8	111.0	118.9	680.7	956.3	1637.0
8	गार्गी कॉलेज, नई दिल्ली	183.6	175.2	108.6	105.1	105.9	678.4	956.3	1634.7
9	लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर विमेन, नई दिल्ली	187.0	164.2	105.9	155.7	111.7	724.5	902.3	1626.8
10	आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज (एआरएसडी कॉलेज), नई दिल्ली	188.4	175.7	90.9	114.6	134.0	703.6	908.3	1611.9
11	रामजस कॉलेज, नई दिल्ली	158.5	153.6	110.8	108.1	114.1	645.1	958.0	1603.1
12	आचार्य नरेंद्र देव कॉलेज, नई दिल्ली	182.3	166.8	80.4	104.4	116.0	649.9	905.9	1555.8
13	महाराजा अग्रसेन कॉलेज, नई दिल्ली	166.2	166.0	111.0	120.5	97.8	661.5	869.2	1530.7
14	गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कॉलेज, चंडीगढ़	167.6	171.0	123.9	105.5	95.1	663.1	839.5	1502.6
15	मेहरचंद महाजन डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, चंडीगढ़	172.3	152.8	108.2	86.7	111.7	631.7	840.6	1472.3
16	शिवाजी कॉलेज, नई दिल्ली	177.9	135.2	102.9	89.0	105.3	610.3	828.2	1438.5
17	मैत्रेयी कॉलेज, नई दिल्ली	167.6	171.0	106.1	120.6	85.1	650.4	760.2	1410.6
18	डीएवी कॉलेज, सेक्टर 10, चंडीगढ़, चंडीगढ़	165.5	137.7	119.2	76.4	94.7	593.5	813.4	1406.9

उत्तर भारत के बेस्ट कॉलेज

साइंस

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		250	250	175	175	150	1000	1000	2000
19	पोस्ट ग्रेजुएट गवर्नमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, चंडीगढ़	169.4	140.5	90.6	83.4	117.7	601.6	798.0	1399.6
20	इसाबेला थोबर्न डिग्री कॉलेज, लखनऊ	170.8	135.4	107.2	102.6	98.7	614.7	730.6	1345.3
21	केशव महाविद्यालय, नई दिल्ली	150.4	89.6	93.2	78.2	119.8	531.2	804.7	1335.9
22	एस.एस. जैन सुबोध पीजी कॉलेज (स्वायत्त), जयपुर	182.7	153.6	83.5	65.1	104.0	588.9	746.5	1335.4
23	देशबंधु कॉलेज, नई दिल्ली	162.5	158.8	79.7	63.1	81.0	545.1	786.3	1331.4
24	लक्ष्मीबाई कॉलेज, नई दिल्ली	145.8	158.8	117.3	86.7	109.5	618.1	708.1	1326.2
25	सेंट विल्फ्रेड्स पीजी कॉलेज, जयपुर	116.3	164.8	125.0	88.3	108.7	603.1	716.1	1319.2
26	भास्कराचार्य कॉलेज ऑफ एप्लाइड साइंसेज, नई दिल्ली	158.7	179.2	72.5	91.8	79.6	581.8	606.0	1187.8
27	एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड साइंसेज, नोएडा	110.4	170.2	141.0	101.3	100.9	623.8	484.1	1107.9
28	पोद्दार इंटरनेशनल कॉलेज, जयपुर	114.5	157.5	115.2	106.8	81.8	575.8	523.4	1099.2
29	एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड साइंसेस, गुरुग्राम	109.2	197.8	142.6	104.1	86.7	640.4	439.8	1080.2
30	कन्या महाविद्यालय (स्वायत्त), जालंधर	170.6	162.3	114.2	105.5	74.3	626.9	312.3	939.2
31	डीएवी कॉलेज, अबोहर, अबोहर	152.0	163.3	113.3	79.5	81.0	589.1	330.4	919.5
32	बीबीके डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर, अमृतसर	143.6	132.3	94.3	99.3	74.5	544.0	356.9	900.9
33	स्कूल ऑफ लाइफ ऐंड बेसिक साइंसेज, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर	129.2	154.5	119.3	126.5	81.7	611.2	213.3	824.5
34	डीएवी सेंटेनरी कॉलेज, फरीदाबाद	145.0	113.6	82.4	78.8	67.0	486.8	335.8	822.6
35	डी.ए.वी. कॉलेज, होशियारपुर, होशियारपुर	137.3	135.3	115.4	86.0	77.8	551.8	249.7	801.5
36	फैकल्टी ऑफ साइंसेज, आइआइएस (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी) जयपुर	149.2	179.7	130.6	108.0	70.9	638.4	84.0	722.4
37	सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला कैंट	113.7	66.3	31.2	63.7	62.2	337.1	382.2	719.3
38	एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, लखनऊ, लखनऊ	97.4	175.8	142.4	13.0	89.8	518.4	187.7	706.1
39	जगदीश चंद्र डीएवी कॉलेज, दसूया	118.8	112.7	90.1	55.2	70.2	447.0	204.8	651.8
40	परिष्कार कॉलेज ऑफ ग्लोबल एक्सिलेंस, जयपुर	88.4	105.0	62.7	63.8	83.1	403.0	172.5	575.5
41	उत्तरांचल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देहरादून	54.0	132.2	140.1	96.4	110.3	533.0	0.0	533.0
42	बेबे नानकी यूनिवर्सिटी कॉलेज, मिठड़ा, कपूरथला	37.9	49.2	60.9	52.6	80.5	281.1	16.8	297.9

कॉमर्स

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		225	250	150	175	200	1000	1000	2000
1	श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स (एसआरसीसी), नई दिल्ली	191.3	199.8	132.7	157.9	181.3	863.0	1000.0	1863.0
2	हिंदू कॉलेज, नई दिल्ली	189.8	192.4	133.6	147.5	190.6	853.9	996.1	1850.0
3	लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन, नई दिल्ली	190.4	180.9	128.4	157.1	169.1	825.9	981.9	1807.8
4	हंसराज कॉलेज, नई दिल्ली	200.0	172.2	110.5	143.4	170.6	796.7	992.5	1789.2
5	रामजस कॉलेज, नई दिल्ली	155.4	173.4	111.9	119.9	142.7	703.3	975.8	1679.1
6	आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज (एआरएसडी), नई दिल्ली	167.0	165.2	99.0	128.0	137.0	696.2	944.9	1641.1
7	दौलत राम कॉलेज, नई दिल्ली	178.5	162.7	79.3	129.7	152.2	702.4	929.6	1632.0
8	गार्गी कॉलेज, नई दिल्ली	182.1	149.1	96.2	129.8	145.0	702.2	923.2	1625.4
9	श्री वेंकटेश्वर कॉलेज, नई दिल्ली	174.4	124.9	96.3	124.3	151.5	671.4	945.5	1616.9
10	दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, नई दिल्ली	165.3	136.7	109.5	116.8	150.6	678.9	902.4	1581.3

AMRITA VISHWA VIDYAPEETHAM
DEEMED TO BE UNIVERSITY

School of Engineering

AMRITAPURI • BENGALURU • CHENNAI • COIMBATORE

"Education should spread light within and without."

Shri. Mata Amritanandamayi Devi, Chancellor

HAPPY TEACHERS' DAY

Celebrating those who inspire hope and illuminate the world.

SCAN TO WATCH

TRIBUTE TO TEACHERS

4TH BEST UNIVERSITY nirf NATIONAL INSTITUTIONAL RANKING FRAMEWORK

RECOGNISED AS INSTITUTION of EMINENCE BY THE UGC

A++ GRADE ACCREDITATION NAAC NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

95% STUDENTS PLACED in 2020

₹66 LAKH P.A. HIGHEST CTC

50% SEATS WITH SCHOLARSHIP

₹6 LAKH P.A. AVERAGE CTC

No.1 INTERNATIONAL FACULTY QS WORLD UNIVERSITY RANKINGS 2020

160+ INTERNATIONAL COLLABORATIONS WITH LEADING UNIVERSITIES

200+ STUDENTS AVAIL STUDY ABROAD PROGRAMMES EVERY YEAR

+91 94 4379 7777

amrita.edu

DF/155

Education for Life. Education for Living.

उत्तर भारत के बेस्ट कॉलेज

कॉमर्स

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		225	250	150	175	200	1000	1000	2000
11	श्री गुरु गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स, नई दिल्ली	163.9	185.4	93.6	128.8	127.5	699.2	830.4	1529.6
12	गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कॉलेज, चंडीगढ़	159.2	163.5	99.7	109.3	145.9	677.6	848.8	1526.4
13	शिवाजी कॉलेज, नई दिल्ली	164.6	133.0	96.2	102.0	131.4	627.2	871.8	1499.0
14	मैत्रेयी कॉलेज, नई दिल्ली	175.0	125.9	108.8	132.1	128.0	669.8	817.6	1487.4
15	महाराजा अग्रसेन कॉलेज, नई दिल्ली	164.3	173.5	104.9	132.5	117.1	692.3	784.2	1476.5
16	इसाबेला थोबर्न कॉलेज, लखनऊ	127.7	129.6	101.3	130.9	123.3	612.8	723.5	1336.3
17	लक्ष्मीबाई कॉलेज, नई दिल्ली	151.7	161.2	88.0	114.8	115.2	630.9	703.8	1334.7
18	रामानुजन कॉलेज, नई दिल्ली	162.3	171.2	75.9	127.0	133.4	669.8	663.4	1333.2
19	भारती कॉलेज, नई दिल्ली	157.4	124.9	78.6	108.9	112.8	582.6	716.2	1298.8
20	मेहरचंद महाजन डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, चंडीगढ़	145.5	117.6	80.1	111.4	119.0	573.6	698.9	1272.5
21	पोस्ट ग्रेजुएट गवर्नमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, चंडीगढ़	149.2	141.8	94.8	70.8	112.0	568.6	669.1	1237.7
22	डीएवी कॉलेज, चंडीगढ़, चंडीगढ़	157.3	126.7	97.1	68.3	122.7	572.1	654.7	1226.8
23	एमिटी कॉलेज ऑफ कॉमर्स ऐंड फाइनेंस, नोएडा	103.1	160.1	99.9	93.3	125.3	581.7	640.4	1222.1
24	एस.एस. जैन सुबोध पीजी (स्वायत्त) कॉलेज, जयपुर	163.1	151.0	94.2	84.8	134.4	627.5	593.2	1220.7
25	देशबंधु कॉलेज, नई दिल्ली	158.3	107.2	111.3	110.0	144.4	631.2	531.6	1162.8
26	जगन्नाथ इंटरनेशनल मैनेजमेंट स्कूल, कालकाजी, नई दिल्ली	76.9	159.0	71.8	159.1	105.5	572.3	390.9	963.2
27	बीबीके डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर	125.8	90.0	76.1	98.5	95.2	485.6	471.9	957.5
28	केशव महाविद्यालय, नई दिल्ली	155.7	74.6	74.8	40.6	72.7	418.4	529.6	948.0
29	कन्या महाविद्यालय (स्वायत्त), जालंधर, जालंधर	141.3	127.1	93.9	111.5	105.1	578.9	363.4	942.3
30	हंस राज महिला महाविद्यालय, जालंधर	130.2	133.4	84.5	101.6	151.6	601.3	330.4	931.7
31	डीएवी कॉलेज, अबोहर, अबोहर	145.1	144.6	103.4	101.4	101.0	595.5	334.6	930.1
32	विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, नई दिल्ली	130.3	121.3	71.6	110.1	132.5	565.8	287.6	853.4
33	डीएवी कॉलेज, होशियारपुर, होशियारपुर	138.7	153.2	95.0	101.8	119.1	607.8	203.4	811.2
34	एफएमएस-विजडम बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली	120.6	185.6	114.9	108.5	108.1	637.7	100.5	738.2
35	लिंगायाज ललिता देवी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड साइंसेज, नई दिल्ली	113.8	146.8	107.6	117.0	108.1	593.3	143.4	736.7
36	एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर	94.7	128.4	47.1	70.1	136.1	476.4	259.5	735.9
37	यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ बिजनेस, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, मोहाली	125.8	158.3	121.6	113.8	107.3	626.8	103.8	730.6
38	स्कूल ऑफ बिजनेस ऐंड मैनेजमेंट, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर	120.3	148.1	120.4	121.5	93.1	603.4	126.9	730.3
39	पोद्दार इंटरनेशनल कॉलेज, जयपुर	109.7	119.4	96.7	120.2	128.4	574.4	150.6	725.0
40	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, आइएमएस यूनिसन यूनिवर्सिटी, देहरादून	63.4	164.6	108.3	103.0	133.8	573.1	132.4	705.5
41	देवकी देवी जैन मेमोरियल कॉलेज फॉर विमेन, लुधियाना	136.7	75.2	91.2	107.3	106.2	516.6	160.3	676.9
42	डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, आइआइएस (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी), जयपुर	119.5	176.0	120.5	125.9	85.4	627.3	30.0	657.3
43	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ऐंड कॉमर्स, पूर्णिमा यूनिवर्सिटी, जयपुर	93.9	140.1	123.4	118.3	112.5	588.2	63.4	651.6
44	सेंट विल्फ्रेड्स पीजी कॉलेज, जयपुर	92.6	147.7	79.3	86.3	121.2	527.1	122.0	649.1
45	अवध गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ	119.3	99.1	51.6	87.1	76.0	433.1	184.2	617.3
46	परिष्कार कॉलेज ऑफ ग्लोबल एक्सीलेंस, जयपुर	118.3	150.9	86.9	129.3	120.3	605.7	3.4	609.1
47	पंजाब कॉलेज ऑफ टेक्निकल एजुकेशन, लुधियाना	88.0	144.4	108.4	109.7	82.0	532.5	49.7	582.2
48	सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला कैंट, अंबाला	141.0	77.7	34.7	35.0	85.6	374.0	204.0	578.0
49	उत्तरांचल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देहरादून	81.8	137.8	123.0	100.4	96.5	539.5	31.1	570.6
50	फैकल्टी ऑफ कॉमर्स ऐंड बिजनेस मैनेजमेंट, आम्रपाली ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स, हल्द्वानी	79.7	145.3	102.7	98.3	113.9	539.9	0.0	539.9
51	रामा पीजी कॉलेज, लखनऊ	78.7	55.8	80.2	57.7	100.1	372.5	146.0	518.5
52	बेबे नानकी यूनिवर्सिटी कॉलेज, कपूरथला	66.0	85.2	46.8	46.7	61.2	305.9	0.0	305.9

MANSAROVAR® GLOBAL UNIVERSITY

INSPIRING INTELLECT

Be Remarkable

OUR FACULTIES

- PARAMEDICAL
- NURSING
- COMPUTER
- COMMERCE AND FINANCE
- ARTS AND DESIGN
- PHARMACY
- LAW
- SCIENCE
- MANAGEMENT
- AGRICULTURE SCIENCE AND TECHNOLOGY
- JOURNALISM AND MASS MEDIA
- SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

Scan QR

FOR MORE INFORMATION CONTACT :

8989010102
8989080809

www.mguindia.com

YouTube | Mansarovar Global University and MGI

City Office : **Mansarovar Public School**, Opp. Bima Kunj, **Kolar Road**, Bhopal-462042

Follow us on :

कौशल शिक्षा बनेगा विकसित

DSEU
Crafting Excellence

दिल्ली कौशल एवं उद्यमिता विश्वविद्यालय के साथ, दिल्ली सरकार ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, उद्योग द्वारा मान्यता प्राप्त गुणवत्तापूर्ण कौशल शिक्षा प्रदान करने वाले एक विश्वस्तरीय संस्थान बनाने का लक्ष्य रखा है।

अरविंद केजरीवाल,
मुख्यमंत्री, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली सरकार

भारत का हर 5 में से 1 स्नातक बेरोजगार है[1]

21-25 साल की आयु के करीब 40% युवा बेरोजगार हैं [2]

सोर्स: सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी

भारत में नौकरियों का संकट

2018 में, यूपी पुलिस विभाग ने 'टेलीफोन मैसेंजर' के पद के लिए 62 रिक्तियों का विज्ञापन दिया था। नौकरी के लिए जो अहर्ता तय की गई थी उसमें उम्मीदवारों के लिए कक्षा 5 उत्तीर्ण होना और साइकिल चलाना आना जरूरी था। इसके लिए आए 93,000 आवेदनों में से – 50,000 स्नातक थे, 28,000 स्नातकोत्तर थे और 3,700 के पास पीएचडी की डिग्री थी।

भारत का रोजगार संकट दोहरी समस्याएं दर्शाता है। पहला युवाओं का एक बड़ा हिस्सा बेरोजगार है। इससे भी ज्यादा गंभीर बात, जो संख्याओं से प्रकट नहीं होती, वह यह है कि शिक्षित युवा ऐसी नौकरी करते हैं जो उनकी योग्यता के अनुरूप नहीं है। यह कॉलेजों द्वारा ऑफर किए जा रहे कोर्स के बाजार की जरूरतों के अनुरूप नहीं होने और भारत में उच्च शिक्षा के कई संस्थानों में शिक्षा की खराब गुणवत्ता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

इसके अतिरिक्त, अक्सर यह देखा गया है कि बड़े पैमाने पर भर्ती करने वाले उद्योगों को, छात्रों को फिर से प्रशिक्षित करना पड़ता है और उन्हें नौकरी के लिए तैयार करने के लिए कई महीनों के अतिरिक्त पाठ्यक्रमों को पूरा करना पड़ता है। यह सब पारंपरिक शिक्षा और वर्तमान उद्योग आवश्यकताओं के बीच के अंतर को उजागर करता है।

एक भविष्योन्मुखी विश्वविद्यालय

इस परिदृश्य को देखते हुए, दिल्ली कौशल एवं उद्यमिता विश्वविद्यालय (डीएसईयू) ने अध्ययन के सभी क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने और उसे उद्यमशीलता के लिए तैयार करने का लक्ष्य रखा है। डीएसईयू का मिशन छात्रों को 21वीं सदी के बाजार में अपने लिए महत्वपूर्ण संभावनाएं तलाशने में सक्षम करने के लिए उपयुक्त शिक्षा प्रदान करना और काम करने के लिए आवश्यक कौशलों से लैस करना है।

दिल्ली भर में फैले 15 परिसरों के साथ डीएसईयू शहर के सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में से एक है जो अब कई तरह की डिग्री और डिप्लोमा पाठ्यक्रम ऑफर करता है।

नए कलेवर वाला पाठ्यक्रम

डीएसईयू का पहला कदम उद्योग जगत के विशेषज्ञों के साथ साझेदारी में अपने पाठ्यक्रम को तैयार करना और उसमें सुधार करना था, जिसे डीएसईयू के करिकुलम एडवाइजरी ग्रुप (सीएजी) और करिकुलम रिव्यु कमिटी (सीआरसी) के माध्यम से औपचारिक रूप दिया गया। सीएजी में शिक्षा और उद्योग जगत के विशेषज्ञ शामिल हैं, और प्रत्येक स्नातक और मास्टर पाठ्यक्रम के लिए एक सीएजी और प्रत्येक डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए एक अलग सीआरसी है। उदाहरण के लिए, बी.ए. एस्थेटिक्स एंड ब्यूटी थेरेपी कोर्स को हैडमास्टर्स, गोदरेज, ज्यश्वँ क्लॉ बेगिअन सैलून और स्पा जैसे कई अन्य पेशेवरों के सहयोग से विकसित किया गया था।

इमेज: डीएसईयू का द्वारका कैंपस, नई दिल्ली

भारत की पहचान

फोकस दिल्ली

मूल सिद्धांत

21वीं सदी के बाजार के लिए प्रासंगिक कोर्स

उद्योग जगत के अग्रणियों के साथ करीबी साझेदारी में बाजार से जुड़े पाठ्यक्रम विकसित करना ताकि छात्रों के लिए विशिष्ट नौकरियों के अवसर बन सकें। डीएसईयू ने पहले ही टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), एसआरएल लेबोरेटरीज, आरआर डोनेली और एचडीएफसी लाइफ सहित कई अन्य उद्योगों के साथ आधिकारिक करार किए हैं।

विश्वस्तरीय कौशल हासिल करना

छात्रों को अपने मेजर (प्रमुख डिग्री) के अलावा, 21वीं सदी के कार्यस्थल में सफल होने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान, संचार और डिजिटल कौशल जैसे बहुत से ऐसे कौशलों से लैस किया जाएगा जो उन्हें एक से अधिक कार्यों के लिए कुशल बनाएंगे।

एक उद्यमी मानसिकता का विकास

डीएसईयू का उद्देश्य उन छात्रों को सपोर्ट करना है जो अपना उद्यम स्थापित करने के लिए कौशल प्राप्त करते हैं। वर्तमान में, विश्वविद्यालय के 2 परिसरों में इन्क्यूबेशन सेंटर मौजूद हैं जो परामर्श, संरक्षण और उद्यम के लिए आवश्यक शुरुआती पूंजी के रूप में स्टार्ट–अप को सहायता प्रदान करते हैं। सभी छात्रों में एक उद्यमी सी क्षमताएं विकसित करने के लिए, उन्हें एक सक्षम और सहायक पाठ्यक्रम और इसके लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान किया जाएगा।

डीएसईयू के प्रमुख उद्योग साझेदार:

- इन्फोसिस
- मर्सिडिज बेंज
- एचडीएफसी लाइफ
- एसआरएल लिमिटेड
- एचडीएफसी बैंक
- क्वेस कॉर्प

20+ उद्योगों के साथ हो चुकी है साझेदारी

प्रासंगिक, परिवर्तनात्मक और बाज़ारोन्मुख कोर्सेज

- बी.ए. डिजिटल मीडिया और डिजायन
- बीएससी. डेटा एनालिटिक्स
- बीएससी. मेडिकल लेबोरेट्री टेक्नॉलोजी
- बीएमएस (ई–कॉमर्स ऑपरेशंस)
- बीसीए (बैचलर ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन)
- बीबीए (फैसिलिटीज और हाइजीन मैनेजमेंट)

इंटर्नशिप, उद्योग अनुभव, उद्योग से सीखने के अवसर

डीएसईयू के पाठ्यक्रम न केवल उद्योग जगत के विशेषज्ञों के सहयोग से डिजाइन किए गए थे, बल्कि पूरे पाठ्यक्रम के दौरान इंडस्ट्रीज के साथ काम करने के अनुभव को भी प्राथमिकता दी गई है। यहां उद्योग के पेशेवरों द्वारा चयनित पाठ्यक्रम पढ़ाए जाएंगे, उद्योग से कई अतिथि व्याख्यान आयोजित किए जाएंगे, विभिन्न उद्योगों के लिए एक्सपोजर विजिट (कामकाज को देखकर सीखने का अवसर) डीएसईयू में शिक्षा का एक प्रमुख पहलू होगा। सभी कोर्स में अनिवार्य रूप से इंटर्नशिप शामिल होगा। इसके अलावा इसके 3 डिग्री कोर्सेज में ग्रेजुएट अप्रेंटसिश्प प्रोग्राम (स्नातक प्रशिक्षुता कार्यक्रम) भी शुरू किया गया है। ये कोर्स करने वाले छात्र ऑन–द–जॉब प्रशिक्षण प्राप्त करने में सक्षम होंगे और इसके लिए वे यूनवर्सिटी क्रेडिट भी अर्जित करेंगे। इसमें रिटेल मैनेजमेंट में बीबीए शामिल है, जिसमें छात्रों का 21 महीने का अप्रेंटिसशिप प्रोग्राम होगा।

प्रेरक नेतृत्व, विशेषज्ञ संकाय

डीएसईयू का नेतृत्व आईआईएम–अहमदाबाद की पूर्व प्रोफेसर निहारिका वोहरा कर रही हैं, जिन्हें शिक्षाविद के रूप में दो दशकों से अधिक का अनुभव है। उन्होंने आईआईएम–ए में सेंटर फॉर इनोवेशन इनक्यूबेशन एंटरप्रेन्योरशिप में भी काफी बड़े स्तर पर काम किए हैं और वह अनुभव एक विशेष कौशल एवं उद्यमिता विश्वविद्यालय को दिशा देने में महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय को प्रो. स्निग्धा पटनायक, पूर्व में एक्सयूबी, भुवनेश्वर और जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय से आए प्रो. रिहान खान सूरी का नेतृत्व भी प्राप्त हो रहा है। टीम के कई सदस्य गहन कौशल अनुभव रखते हैं जिन्हें विश्वविद्यालय के प्रमुख इकाइयों को स्थापित करने की प्रक्रिया में मदद के लिए शामिल किया गया है। इसके अलावा, विश्वविद्यालय प्रख्यात विश्वविद्यालयों और प्रमुख उद्योग के संकाय सदस्यों को फ्लैगशिप प्रोग्राम्स पढ़ाने के लिए अपने पैनल में शामिल कर रहा है। विश्वविद्यालय में वर्तमान में मजबूत शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाले 500+ अध्यापक हैं। सभी अध्यापकों के लिए विश्वविद्यालय अनिवार्य संकाय विकास कार्यक्रम आयोजित कर रहा है ताकि छात्रों का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके।

मल्टीप्ल एंट्री एंड एग्जिट (प्रवेश और निकास) के लिए कई अवसर

एनईपी से प्रेरित व्यवस्था के तहत, छात्रों के पास एक निश्चित अवधि के बाद रोजगार की तलाश के लिए कोर्स को बीच में छोड़ने का विकल्प होगा और वे अपना क्रेडिट बरकरार रखते हुए डिप्लोमा हासिल कर सकते हैं। डीएसईयू के डिप्लोमा की भी अच्छी प्रतिष्ठा है और इसे प्राप्त करने वाले छात्र अपनी शिक्षा और अनुभव के अनुरूप नौकरी कर सकते हैं। इसी तरह, छात्र किसी कौशल में पूर्व प्रशिक्षण के साथ बीच में भी अपने कोर्स बदल सकते हैं। डीएसईयू मेधावी इंजीनियरिंग डिप्लोमा छात्रों को एकीकृत इंजीनियरिंग प्रोग्राम में नामांकन का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है, जिसमें वे इंजीनियरिंग बी.टेक की डिग्री के साथ स्नातक हो सकते हैं।

उत्कृष्टता की पौधशाला

डीएसईयू अपने छात्रों को उनके चुने हुए कौशल में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए एक विश्वस्तरीय कौशल शिक्षा प्रदान करने को प्रयासरत है। हाल ही में विश्वविद्यालय ने 2022 में शंघाई में आयोजित होने वाले कौशल के ओलंपिक– 'विश्व कौशल प्रतियोगिता' की ओर एक कदम के रूप में पहली राज्य स्तरीय कौशल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

कुशल भारतीयों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार करने के लिए जिसके युवा दुनियाभर के कुशल युवाओं से स्तीभर भी कम न हों, डीएसईयू भारत में कौशल शिक्षा को नए मानदंड प्रदान हैं।

उत्तर भारत के बेस्ट कॉलेज

मेडिकल

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		300	300	240	180	180	1200	800	2000
1	ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स), नई दिल्ली, नई दिल्ली	282.2	276.3	214.3	153.9	173.7	1100.4	800.0	1900.4
2	मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज (एमएएमसी), नई दिल्ली	255.4	248.8	186.2	145.7	151.0	987.1	782.9	1770.0
3	इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी	237.1	259.0	195.6	107.4	103.1	902.2	781.8	1684.0
4	किंग जॉर्ज'स मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ	228.3	221.0	184.4	134.4	117.8	885.9	778.5	1664.4
5	वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली	241.6	215.8	196.7	119.9	125.2	899.2	744.6	1643.8
6	लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली, नई दिल्ली	259.7	204.0	164.5	125.7	145.2	899.1	736.0	1635.1
7	यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली	259.3	200.4	179.9	123.9	120.1	883.6	730.5	1614.1
8	गर्वमेंट मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल (जीएमसीएच), चंडीगढ़	214.3	198.9	182.6	118.0	93.2	807.0	685.8	1492.8
9	सवाई मान सिंह मेडिकल कॉलेज, जयपुर	221.7	215.6	149.4	139.5	84.5	810.7	681.7	1492.4
10	जवाहरलाल नेहरु मेडिकल कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू), अलीगढ़	221.1	195.2	173.6	144.6	103.0	837.5	644.0	1481.5
11	ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स), जोधपुर, जोधपुर	210.3	209.8	181.7	110.0	90.8	802.6	575.4	1378.0
12	आर्मी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली	142.3	186.9	166.9	122.9	123.7	742.7	621.2	1363.9
13	दयानंद मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल, लुधियाना	195.9	223.9	155.6	120.3	78.0	773.7	577.2	1350.9
14	क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, लुधियाना, लुधियाना	155.0	200.4	200.4	124.5	93.1	773.4	551.9	1325.3
15	ईरा'ज लखनऊ मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल, लखनऊ	139.8	201.7	185.1	133.2	115.4	775.2	539.3	1314.5
16	डॉ. राजेंद्र प्रसाद गर्वमेंट मेडिकल कॉलेज, कांगड़ा	154.7	137.8	152.9	115.4	91.6	652.4	457.4	1109.8
17	श्री राम मूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, बरेली	146.0	174.7	184.1	120.3	93.6	718.7	389.4	1108.1
18	श्री गुरु राम राय इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल ऐंड हेल्थ साइंसेज, देहरादून	111.1	111.6	141.1	115.0	74.7	553.5	117.6	671.1

इंजीनियरिंग

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	स = सरकारी/ प्रा = प्राइवेट	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
			288	264	240	120	288	1,200	800	2,000
1	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली	स	244.5	230.1	216	100.3	273.4	1,064.3	799.2	1,863.5
2	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर	स	235.1	221	215.2	98.9	258.1	1,028.3	791.9	1,820.2
3	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रुड़की	स	234.7	213.2	205	97.5	254.8	1,005.2	787.1	1,792.3
4	बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऐंड साइंस (बिट्स), पिलानी	प्रा	221.6	173.5	180.5	88.8	250.3	914.7	777.9	1,692.6
5	दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली	स	226.8	175.6	179.6	86.8	229.1	897.9	774.2	1,672.1
6	नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली	स	227.6	155.5	185.8	78.6	250.1	897.6	772.9	1,670.5
7	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश	स	209.9	173.2	208.5	82.6	213.1	887.3	752.5	1,639.8
8	इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मंडी, हिमाचल प्रदेश	स	206.0	180.7	191.8	86.8	247.3	912.6	704.4	1,617
9	इंद्रप्रस्थ इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी दिल्ली, नई दिल्ली	स	207.8	169.8	180.8	91.5	222.5	872.4	743.6	1,616
10	मालवीय नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर	स	208.4	195.3	178.7	88.6	191.9	862.9	713	1,575.9
11	नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश	स	208.3	177.7	179.7	83.7	173.7	823.1	711.1	1,534.2
12	थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, पटियाला, पंजाब	प्रा	207.1	153.3	178.7	85.6	178.9	803.6	714.9	1,518.5
13	इंदिरा गांधी दिल्ली टेक्निकल यूनिवर्सिटी फॉर विमेन, नई दिल्ली	स	204.2	158	171.5	84.4	195	813.1	700.5	1,513.6
14	हरकोर्ट बटलर टेक्निकल यूनिवर्सिटी, कानपुर, उत्तर प्रदेश	स	210.1	161.9	170.4	74	188.9	805.3	695.6	1,500.9

www.LNCT.ac.in

LNCT SM
GROUP OF COLLEGES
"WORKING TOWARDS BEING THE BEST"

LNCT GROUP OF COLLEGES

LNCT | JNCT | LNCTS | LNCP | LNCTE

Approved by AICTE, Affiliated to RGPV & BU, Bhopal

LNCT GROUP 1993 28 2021 EXCELLENCE IN EDUCATION

Why Choose LNCT Group?

2000+offers for 2021 batch

Highest Package offered **28 LPA**

350+ Dream offer (5.5 to 28 LPA) Set New Records in Pandemic

175+ Companies Visited 2020-21

1260+ Internships in Cisco

MSME approved Incubation center KLIC

AICTE IDEA Lab One of only 49 IDEA labs in country

Networking CISCO Academy

200+Dream offer for prefinal Year

Rated as Most Future Ready Institute by Nasscom FSP

ADMISSION OPEN 2021-22*

COURSES OFFERED

B.Tech	CSE / CSE (AIML / Data Science / IoT / AI&DS / Cyber Security) CE / EC / EE / EX / ME / IT & Lateral Entry
M.Tech	CSE / CTM / DC / Power Sys. / Structure Engg. Thermal / Power Elx. / VLSI
PHARMACY	D. Pharm. | B. Pharm. | M. Pharm. (Pharmaceutics / Pharm' Chemistry / Pharmacology)
MBA	Marketing, HR, Finance, Retails, Banking
POLYTECHNIC	ME / CIVIL
MCA	2 YEARS

RANKS & ACCREDITATIONS

Ranked No. 1 in M.P. PRIVATE ENGINEERING COLLEGE

INDIA TODAY · JAGRAN Josh · THE WEEK · Outlook · CAREERS360 Magazine

NBA ACCREDITED COLLEGE (4 Time)

nirf NATIONAL INSTITUTIONAL RANKING FRAMEWORK
Only Pvt Engg. College of MP in NIRF Ranking 2020

*Admissions are based on Counseling Authorities Norms

OUR PREMIUM RECRUITERS

Cognizant · vmware · Infosys · Tech Mahindra · DXC.technology · UB Group · ADP · Prism · accenture · Capgemini · ORACLE · amazon · SAP · STERLING & WILSON · ORIANT · dcode · orange Business Services · BYJU'S The Learning App · XL Dynamics · ZYCUS · ValueLabs · TEKsystems

More than **25,000 Alumni** working in best of brands across the globe

LNCT Campus - Kalchuri Nagar, Raisen Road, Bhopal (MP) **Email: admission@LNCT.ac.in**

7440777111, 7440777222, 7440777555

उत्तर भारत के बेस्ट कॉलेज

इंजीनियरिंग

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	स = सरकारी/ प्रा = प्राइवेट	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
			288	264	240	120	288	1,200	800	2,000
15	डॉ. बी.आर. आंबेडकर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जालंधर, पंजाब	स	220.3	154.2	178.9	90.4	188.2	832.0	610.4	1,442.4
16	जाकिर हुसैन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	स	210.5	172.7	176.5	80.3	164.9	804.9	624.1	1,429
17	नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर	स	191.7	151.7	158.9	81.5	189.7	773.5	532.1	1,305.6
18	महाराजा सूरजमल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली	प्रा	199.5	121	150.6	65.5	169.6	706.2	481.8	1,188
19	गलगोटियाज कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नोएडा	प्रा	188.5	113	150.5	64.5	123	639.5	544.3	1,183.8
20	ऐमिटी स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी नोएडा, नोएडा	प्रा	140.6	166	160.1	67.3	147.3	681.3	471.7	1,153
21	फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग, मणिपाल यूनिवर्सिटी जयपुर, जयपुर	प्रा	163.4	115.4	170.7	85.8	180.6	715.9	394.9	1,110.8
22	जी.एल. बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऐंड मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा	प्रा	132.8	150.2	157.1	75.3	146.3	661.7	437	1,098.7
23	द एलएनएम इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, जयपुर	प्रा	164.3	148	144.5	70.3	164.1	691.2	313.1	1,004.3
24	जेपी इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, नोएडा	प्रा	176.9	109.5	132.8	28.3	184.4	631.9	372.2	1,004.1
25	स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग, यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम ऐंड एनर्जी स्टडीज, देहरादून, उत्तराखंड	प्रा	163.8	144.9	156.8	66.3	161.4	693.2	306	999.2
26	गुरु नानक देव इंजीनियरिंग कॉलेज, लुधियाना, पंजाब	प्रा	190.8	122.1	160.5	63.8	113.5	650.7	336.2	986.9
27	यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, मोहाली	प्रा	112.2	151.2	173.2	67	142	645.6	306.3	951.9
28	इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, चितकारा यूनिवर्सिटी, राजपुरा, पंजाब	प्रा	120.6	149.9	157.4	51.4	159.3	638.6	293.1	931.7
29	अजय कुमार गर्ग इंजीनियरिंग कॉलेज, गाजियाबाद	प्रा	168.4	116.8	142.5	68.3	120.8	616.8	260.9	877.7
30	फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, मानव रचना इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, फरीदाबाद	प्रा	176.3	144.5	174.4	72	95.4	662.6	194.5	857.1
31	स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, गलगोटियाज यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा	प्रा	177.2	92.3	113.4	42.2	97.1	522.2	332.3	854.5
32	डीएवी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, जालंधर, पंजाब	प्रा	185.8	84	172.8	70	120.3	632.9	209.5	842.4
33	जयपुर इंजीनियरिंग कॉलेज ऐंड रिसर्च सेंटर, जयपुर	प्रा	170.2	83.3	108.4	68.2	157	587.1	253.9	841
34	इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड मैनेजमेंट, जयपुर	प्रा	99.9	95.6	170.2	78.9	119.1	563.7	270.6	834.3
35	श्री रामस्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड मैनेजमेंट, लखनऊ	प्रा	123.9	86.1	139.3	45.1	84.4	478.8	353.1	831.9
36	इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, जे.के. लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी, जयपुर	प्रा	101.1	128	179.9	68.9	91.4	569.3	262.5	831.8
37	प्रणवीर सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर, उत्तर प्रदेश	प्रा	177	72.8	142	52.1	130	573.9	253.9	827.8
38	स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, संस्कृति यूनिवर्सिटी, मथुरा	प्रा	101.1	125.1	165.6	68.8	123.2	583.8	243.6	827.4
39	चंडीगढ़ इंजीनियरिंग कॉलेज, मोहाली	प्रा	134.7	113.7	138.6	64.8	152.4	604.2	209.1	813.3
40	ऐमिटी स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, लखनऊ	प्रा	152.1	132.0	165.5	56.5	137.9	644	131.9	775.9
41	यूनाइटेड कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड रिसर्च, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश	प्रा	127.1	115.5	122.9	49.5	136.6	551.6	145.3	696.9
42	ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, लखनऊ	प्रा	127.8	143.5	163.5	30	137.1	601.9	88.5	690.4
43	इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, जीएलए यूनिवर्सिटी, मथुरा, उत्तर प्रदेश	प्रा	103.6	117.5	167.6	55.5	139.9	584.1	101.8	685.9
44	केआईईटी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, गाजियाबाद	प्रा	133.8	99.4	136.6	56.7	119.8	546.3	135.9	682.2
45	स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, शारदा यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा	प्रा	162.6	142.3	135.6	77.9	55.6	574	106.1	680.1
46	श्री राम मूर्ति स्मारक कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश	प्रा	103.3	120.6	160.8	57.3	122.7	564.7	112	676.7
47	एक्सिस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऐंड मैनेजमेंट, कानपुर, उत्तर प्रदेश	प्रा	129.3	108.2	144.5	51.7	113.9	547.6	123.3	670.9
48	जेआइएमएस इंजीनियरिंग मैनेजमेंट टेक्निकल कैंपस, ग्रेटर नोएडा	प्रा	168	121.4	151.8	31	90.3	562.5	95.7	658.2
49	फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग, तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश	प्रा	156.8	122.7	156.1	66.6	47.2	549.4	105.5	654.9
50	गीतांजलि इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज, उदयपुर, राजस्थान	प्रा	126.3	121.6	164.4	49.9	93.3	555.5	75.0	630.5

आज तक

देश का नं. 1 हिंदी न्यूज़ ऐप

जुड़े रहिए हर खबर से,
कहीं भी, कभी भी

अभी डाउनलोड करें

aajtak.in/app

उपलब्ध है

उत्तर भारत के बेस्ट कॉलेज

इंजीनियरिंग

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	स = सरकारी/ प्रा = प्राइवेट	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
			288	264	240	120	288	1,200	800	2,000
51	शोभित इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, मेरठ, उत्तर प्रदेश	प्रा	126.1	121.1	143.9	55.1	109.7	555.9	73.3	629.2
52	सुभारती इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऐंड इंजीनियरिंग, मेरठ, उत्तर प्रदेश	प्रा	116.3	152.1	173.9	15.3	36.1	493.7	129.4	623.1
53	रुड़की कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, रुड़की, उत्तराखंड	प्रा	106.3	135.5	156.3	52.1	133.7	583.9	35.8	619.7
54	महर्षि मार्कंडेश्वर इंजीनियरिंग कॉलेज, मुलाना-अंबाला, हरियाणा	प्रा	107.9	139.5	158.9	48.2	82.2	536.7	62.4	599.1
55	कानपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर, उत्तर प्रदेश	प्रा	128.4	66.3	164.9	78.2	71.5	509.3	82.8	592.1
56	सेठ जय प्रकाश मुकंद लाल इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, यमुनानगर, हरियाणा	प्रा	138.4	70.4	140.2	49.5	120.6	519.1	68.4	587.5
57	आइटीएस इंजीनियरिंग कॉलेज, ग्रेटर नोएडा	प्रा	116.2	131.8	158	68.6	79.9	554.5	22.7	577.2
58	शिवालिक कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, देहरादून, उत्तराखंड	प्रा	107.3	102.3	167.3	69	94.5	540.4	22.7	563.1
59	पूर्णिमा यूनिवर्सिटी, जयपुर	प्रा	99.5	125.7	149.5	59.9	79.9	514.5	23.5	538
60	राजश्री इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश	प्रा	97.1	142.5	158.2	14.5	55.4	467.7	0	467.7

आर्किटेक्चर

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		275	260	240	150	275	1,200	800	2,000
1	डिपार्टमेंट ऑफ आर्किटेक्चर ऐंड प्लानिंग, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रुड़की	231.6	221.6	219.0	144.9	224.7	1041.8	800.0	1841.8
2	स्कूल ऑफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली	237.0	209.7	212.2	136.7	221.0	1016.6	789.1	1805.7
3	फैकल्टी ऑफ आर्किटेक्चर ऐंड एकिस्टिक्स, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली	220.7	175.0	167.4	102.0	215.8	880.9	709.0	1589.9
4	डिपार्टमेंट ऑफ आर्किटेक्चर, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	211.4	149.6	173.5	52.5	190.5	777.5	585.9	1363.4
5	डिपार्टमेंट ऑफ आर्किटेक्चर, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश	187.3	147.7	186.8	104.4	144.1	770.3	564.2	1334.5
6	सुशांत स्कूल ऑफ आर्ट ऐंड आर्किटेक्चर, गुरुग्राम	179.3	168.7	157.4	103.7	159.8	768.9	531.6	1300.5
7	ऐमिटी स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर ऐंड प्लानिंग, नोएडा	188.2	166.7	170.8	98.3	164.9	788.9	510.7	1299.6
8	फैकल्टी ऑफ आर्किटेक्चर ऐंड प्लानिंग, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम टेक्निकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश	207.6	148.0	154.0	85.5	135.6	730.7	435.2	1165.9
9	एमबीएस स्कूल ऑफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली	146.1	125.3	133.2	65.8	162.4	632.8	424.4	1057.2
10	एमिटी स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर ऐंड प्लानिंग, लखनऊ	159.9	152.2	200.0	103.8	146.4	762.3	291.7	1054.0
11	एक्सिस इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्चर, कानपुर, उत्तर प्रदेश	158.4	126.3	185.1	101.0	163.0	733.8	260.7	994.5
12	चितकारा स्कूल ऑफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, पटियाला, पंजाब	161.2	171.3	146.2	104.2	161.6	744.5	223.2	967.7
13	स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा	145.9	185.4	194.7	101.5	84.9	712.4	211.2	923.6
14	फैकल्टी ऑफ आर्किटेक्चर ऐंड प्लानिंग, इंटीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ	173.0	153.5	180.9	102.4	147.1	756.9	154.6	911.5
15	आयोजन स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, जयपुर	133.9	102.1	124.3	87.3	136.8	584.4	284.5	868.9
16	स्कूल ऑफ प्लानिंग ऐंड आर्किटेक्चर, पूर्णिमा यूनिवर्सिटी, जयपुर	151.4	140.2	177.1	100.9	139.1	708.7	82.3	791.0
17	सुंदर दीप कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, गाजियाबाद	161.8	126.2	155.8	84.5	163.0	691.3	0.0	691.3

लॉ

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		210	300	180	240	270	1,200	800	2,000
1	डॉ. राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, लखनऊ	169.8	236.3	162.3	201.7	180.9	951.0	700.6	1651.6
2	फैकल्टी ऑफ लॉ, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी, वाराणसी	164.4	232.8	147.9	172.5	185.8	903.4	737.7	1641.1
3	फैकल्टी ऑफ लॉ, लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ	153.6	231.3	147.7	169.6	200.4	902.6	636.7	1539.3
4	फैकल्टी ऑफ लॉ, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़	147.9	252.1	155.3	167.1	168.3	890.7	613.4	1504.1
5	आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ, मोहाली	130.9	220.3	143.1	159.7	171.5	825.5	520.4	1345.9
6	फैकल्टी ऑफ लॉ, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली	145.9	231.3	151.4	132.3	139.9	800.8	521.4	1322.2
7	लॉयड लॉ कॉलेज, ग्रेटर नोएडा	131.7	224.1	130.0	172.6	172.7	831.1	489.6	1320.7
8	स्कूल ऑफ लॉ, यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम ऐंड एनर्जी स्टडीज, देहरादून	138.1	182.6	139.2	170.6	156.9	787.4	510.1	1297.5
9	ऐमिटी लॉ स्कूल, नोएडा	104.6	223.8	144.0	167.1	148.3	787.8	437.1	1224.9
10	स्कूल ऑफ लॉ, आइएमएस यूनिसन यूनिवर्सिटी, देहरादून	113.1	224.2	141.7	156.3	159.3	794.6	289.2	1083.8
11	आइसीएफएआइ लॉ स्कूल, देहरादून	124.2	174.7	129.9	132.3	147.8	708.9	360.2	1069.1
12	आइएमएस लॉ कॉलेज नोएडा, नोएडा	112.2	197.3	125.7	147.1	161.0	743.3	322.4	1065.7
13	स्कूल ऑफ लॉ, शारदा यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा	128.1	222.8	150.2	153.8	149.8	804.7	222.6	1027.3
14	स्कूल ऑफ लॉ, गलगोटियाज यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा	129.6	189.6	144.9	145.0	143.0	752.1	264.7	1016.8
15	लॉ कॉलेज देहरादून, उत्तरांचल यूनिवर्सिटी, देहरादून	125.6	220.5	129.5	145.8	171.8	793.2	211.3	1004.5
16	ऐमिटी लॉ स्कूल, गुरुग्राम	118.5	220.3	154.8	159.7	154.4	807.7	196.3	1004.0
17	विवेकानंद स्कूल ऑफ लॉ ऐंड लीगल स्टडीज, विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज (वीआइपीएस), नई दिल्ली	134.7	159.6	116.8	167.4	155.0	733.5	269.3	1002.8
18	ऐमिटी लॉ स्कूल, लखनऊ, लखनऊ	118.1	191.2	145.1	135.5	165.6	755.5	245.7	1001.2
19	सेंट विल्फ्रेड्स कॉलेज ऑफ लॉ, जयपुर	115.0	183.2	140.9	145.6	150.5	735.2	151.1	886.3
20	डिपार्टमेंट ऑफ लॉ, महर्षि मार्कंडेश्वर यूनिवर्सिटी, अंबाला	82.0	171.2	145.4	92.6	152.4	643.6	212.9	856.5
21	चंद्रप्रभु जैन कॉलेज ऑफ हायर स्टडीज ऐंड स्कूल ऑफ लॉ, नई दिल्ली	136.1	174.0	128.7	155.9	137.5	732.2	98.6	830.8
22	सीडलिंग स्कूल ऑफ लॉ ऐंड गवर्नेंस, जयपुर	121.8	212.3	149.4	143.5	45.2	672.2	135.9	808.1
23	सेंट सोल्जर लॉ कॉलेज, जालंधर	116.6	115.2	116.3	146.9	162.4	657.4	117.5	774.9
24	इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज ऐंड रिसर्च, मंगलायतन यूनिवर्सिटी, अलीगढ़	108.1	130.2	140.1	83.1	140.0	601.5	145.5	747.0
25	गीता इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ, पानीपत	93.7	170.5	130.6	136.6	121.3	652.7	50.4	703.1
26	श्री गिरराज महाराज कॉलेज ऑफ लॉ ऐंड प्रोफेशनल स्टडीज, मथुरा	102.4	94.2	105.9	98.8	72.1	473.4	0.0	473.4

बीबीए

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		240	270	180	210	300	1,200	800	2,000
1	शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनेस स्टडीज, नई दिल्ली	209.5	227.0	139.5	164.4	291.8	1032.2	796.9	1829.1
2	ऐमिटी स्कूल ऑफ बिजनेस, नोएडा	157.0	215.4	142.6	151.7	233.8	900.5	759.5	1660.0
3	महाराजा सूरजमल इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली	175.6	191.4	121.9	121.3	222.9	833.1	661.1	1494.2
4	केशव महाविद्यालय, नई दिल्ली	182.9	121.0	109.4	127.6	227.4	768.3	719.1	1487.4
5	जगन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नई दिल्ली	157.4	222.2	93.5	168.1	233.3	874.5	535.4	1409.9
6	गोस्वामी गणेश दत्त एसडी कॉलेज, चंडीगढ़	178.3	167.0	136.3	166.6	208.4	856.6	544.8	1401.4
7	जगन्नाथ इंटरनेशनल मैनेजमेंट स्कूल, वसंत कुंज, नई दिल्ली	152.4	152.1	77.1	149.9	214.1	745.6	632.2	1377.8

उत्तर भारत के बेस्ट कॉलेज

बीबीए

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		240	270	180	210	300	1,200	800	2,000
8	स्कूल ऑफ बिजनेस, यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम ऐंड एनर्जी स्टडीज, देहरादून	154.9	203.1	121.9	125.9	225.6	831.4	539.2	1370.6
9	जगन्नाथ इंटरनेशनल मैनेजमेंट स्कूल, कालकाजी, नई दिल्ली	143.1	182.9	92.0	188.0	218.8	824.8	543.3	1368.1
10	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, नोएडा	143.8	175.9	95.6	126.8	194.3	736.4	580.3	1316.7
11	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, आइएमएस यूनिसन यूनिवर्सिटी, देहरादून	117.9	123.2	115.9	124.8	206.5	688.3	594.4	1282.7
12	दून बिजनेस स्कूल, देहरादून	133.6	168.9	129.4	174.7	179.0	785.6	492.2	1277.8
13	एस.एस. जैन सुबोध पीजी (स्वायत्त) कॉलेज, जयपुर	171.0	157.7	96.9	104.5	208.8	738.9	497.7	1236.6
14	आइ.टी.एस. यूजी इंस्टीट्यूट, मोहन नगर, गाजियाबाद	158.4	185.7	119.3	162.9	201.2	827.5	407.9	1235.4
15	विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, नई दिल्ली	172.2	140.0	59.1	119.2	184.2	674.7	530.4	1205.1
16	ऐमिटी बिजनेस स्कूल, गुरुग्राम	118.5	204.1	125.7	143.9	168.7	760.9	441.8	1202.7
17	एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर	167.9	153.8	69.2	129.8	173.2	693.9	478.3	1172.2
18	डीएवी कॉलेज, सेक्टर-10, चंडीगढ़	166.3	99.7	115.4	118.1	185.7	685.2	485.4	1170.6
19	कन्या महा विद्यालय जालंधर (स्वायत्त), जालंधर	197.3	141.7	116.3	127.3	205.2	787.8	382.5	1170.3
20	चंडीगढ़ बिजनेस स्कूल ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, मोहाली	135.5	178.7	132.0	95.7	214.2	756.1	365.9	1122.0
21	यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ बिजनेस, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, मोहाली	140.4	176.0	127.6	130.1	216.0	790.1	290.0	1080.1
22	लिंगयाज ललिता देवी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड साइंसेज, नई दिल्ली	152.4	161.8	107.9	126.8	197.7	746.6	332.8	1079.4
23	डीएवी सेंटेनरी कॉलेज, फरीदाबाद	169.5	116.9	94.2	111.7	150.9	643.2	423.3	1066.5
24	चितकारा बिजनेस स्कूल, राजपुरा	126.1	185.6	140.4	169.6	142.7	764.4	299.7	1064.1
25	फैकल्टी ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, पीसीटीई लुधियाना, लुधियाना	115.9	151.9	120.8	152.0	192.2	732.8	278.4	1011.2
26	फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, आइसीएफएआइ बिजनेस स्कूल, जयपुर	103.4	165.3	148.6	187.9	194.2	799.4	185.0	984.4
27	बीबीके डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर	177.6	105.5	96.6	105.1	159.4	644.2	339.4	983.6
28	इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी, जयपुर	124.6	161.3	156.5	127.5	151.6	721.5	255.4	976.9
29	स्कूल ऑफ बिजनेस ऐंड मैनेजमेंट, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर	148.5	148.8	126.3	150.0	185.3	758.9	217.9	976.8
30	स्कूल ऑफ बिजनेस, गलगोटियाज यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा	103.8	122.0	100.7	93.8	187.7	608.0	353.8	961.8
31	टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, नई दिल्ली	136.5	141.9	86.2	96.1	149.5	610.2	348.5	958.7
32	सेंट विल्फ्रेड पीजी कॉलेज, जयपुर	127.4	139.4	121.5	125.5	200.8	714.6	219.5	934.1
33	पोद्दार इंटरनेशनल कॉलेज, जयपुर	145.0	114.3	116.5	178.2	200.7	754.7	157.5	912.2
34	एक्सिस इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन, कानपुर	125.1	126.2	118.8	122.9	188.3	681.3	230.5	911.8
35	जेआइएमएस इंजीनियरिंग मैनेजमेंट टेक्निकल कैंपस, ग्रेटर नोएडा	106.8	94.9	80.2	85.8	203.2	570.9	333.2	904.1
36	उत्तरांचल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देहरादून	109.6	119.2	117.1	101.7	188.4	636.0	262.0	898.0
37	डीएवी कॉलेज अबोहर, पंजाब	168.7	153.6	126.2	120.8	113.0	682.3	215.3	897.6
38	ज्ञान ज्योति इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ऐंड टेक्नोलॉजी, मोहाली	133.0	171.4	116.4	144.4	179.0	744.2	140.3	884.5
39	स्कूल ऑफ मैनेजमेंट ऐंड कॉमर्स, संस्कृति यूनिवर्सिटी, मथुरा	122.6	175.9	137.0	139.6	196.6	771.7	106.2	877.9
40	देवकी देवी जैन मेमोरियल कॉलेज फॉर विमेन, लुधियाना	163.4	76.1	93.9	115.9	125.9	575.2	299.3	874.5
41	पीएसआइटी कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन, कानपुर	98.4	115.6	122.0	92.7	195.6	624.3	221.6	845.9
42	ग्रेजुएट स्कूल ऑफ बिजनेस, तुला'ज इंस्टीट्यूट, देहरादून	83.4	101.7	116.0	127.6	178.4	607.1	221.1	828.2
43	डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट, आइआइएस (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी), जयपुर	142.4	151.1	131.5	129.2	145.1	699.3	127.4	826.7
44	आचार्य विष्णु गुप्त सुभारती कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट ऐंड कॉमर्स, मेरठ	158.4	132.5	140.4	69.3	113.1	613.7	137.6	751.3
45	फैकल्टी ऑफ कॉमर्स ऐंड बिजनेस मैनेजमेंट, आम्रपाली ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, हल्द्वानी	105.2	88.5	111.1	77.4	143.6	525.8	123.7	649.5
46	इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड मेडिसिन्स ऐंड रिसर्च, गाजियाबाद	98.8	117.5	80.1	100.7	135.0	532.1	65.5	597.6
47	विवेक कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बिजनौर, उत्तर प्रदेश	142.2	133.9	85.4	81.8	126.5	569.8	22.4	592.2
48	रामा पीजी कॉलेज, लखनऊ	108.9	36.8	89.6	113.0	123.9	472.2	108.9	581.1
49	पं. दीनदयाल उपाध्याय मैनेजमेंट कॉलेज, मेरठ	89.5	72.1	33.3	42.2	192.5	429.6	0.0	429.6

INDIA TODAY

BREAKING NEWS

JUST A TAP AWAY

DOWNLOAD THE APP NOW

AVAILABLE ON

कॉलेजों की रैंक और उनके स्कोर

उत्तर भारत में रैंक 2021	कॉलेज और शहर	इनटेक क्वालिटी और गवर्नेंस	अकादमिक गुणवत्ता	इन्फ्रास्ट्रक्चर और माहौल	व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास	करियर की संभावना और प्लेसमेंट	ऑब्जेक्टिव स्कोर	धारणात्मक स्कोर	ओवरऑल स्कोर
		210	270	240	180	300	1,200	800	2,000
1	ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, नोएडा	133.2	217.0	198.5	140.0	227.6	916.3	756.6	1672.9
2	महाराजा सूरजमल इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली	153.0	200.3	178.5	160.4	203.1	895.3	697.8	1593.1
3	एआइएम ऐंड एसीटी, डिपार्टमेंट कंप्यूटर साइंस, बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली विद्यापीठ	142.6	195.1	174.2	124.3	193.8	830.0	702.8	1532.8
4	जगन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, रोहिणी, नई दिल्ली	142.0	203.9	134.0	148.5	224.2	852.6	600.3	1452.9
5	गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कॉलेज, चंडीगढ़	157.9	175.9	186.6	142.3	209.3	872.0	573.3	1445.3
6	स्कूल ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, आइएमएस नोएडा, नोएडा	145.3	187.9	116.5	136.1	207.4	793.2	637.6	1430.8
7	डीएवी कॉलेज, सेक्टर-10, चंडीगढ़	158.6	163.3	172.0	101.8	211.4	807.1	618.5	1425.6
8	जगन्नाथ इंटरनेशनल मैनेजमेंट स्कूल, वसंत कुंज, नई दिल्ली	141.7	178.2	139.6	122.0	207.2	788.7	608.1	1396.8
9	इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऐंड साइंस (आइटीएस) यूजी कैंपस, मोहन नगर, गाजियाबाद	137.4	180.7	170.8	121.9	207.9	818.7	574.8	1393.5
10	कन्या महा विद्यालय, जालंधर	177.4	170.2	161.1	102.9	218.6	830.2	551.8	1382.0
11	ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, लखनऊ	134.3	214.0	195.0	117.6	222.1	883.0	481.3	1364.3
12	एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. (स्वायत्त) कॉलेज, जयपुर	163.9	185.5	163.4	120.9	216.3	850.0	511.3	1361.3
13	मेहर चंद महाजन डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, चंडीगढ़	139.6	201.4	171.1	130.2	214.4	856.7	488.8	1345.5
14	डी.ए.वी. कॉलेज, होशियारपुर, पंजाब	158.1	204.6	189.7	133.8	202.0	888.2	435.3	1323.5
15	चंद्रप्रभु जैन कॉलेज ऑफ हायर स्टडीज ऐंड स्कूल ऑफ लॉ, नई दिल्ली	86.2	135.3	169.7	143.3	225.6	760.1	470.1	1230.2
16	यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ कंप्यूटिंग, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, मोहाली	145.2	186.6	196.5	143.6	215.6	887.5	326.7	1214.2
17	चितकारा यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, पटियाला	112.1	199.6	189.1	131.9	159.4	792.1	392.3	1184.4
18	स्कूल ऑफ कंप्यूटिंग साइंस ऐंड इंजीनियरिंग, गलगोटियाज यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा	109.3	147.2	165.9	90.0	141.6	654.0	513.5	1167.5
19	जेआइएमएस इंजीनियरिंग मैनेजमेंट टेक्निकल कैंपस, (जेईएमटीईसी), ग्रेटर नोएडा	119.9	137.0	158.3	106.4	203.4	725.0	421.8	1146.8
20	बीबीके डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर	155.2	154.0	136.5	88.4	210.5	744.6	387.5	1132.1
21	पोस्ट ग्रेजुएट गर्वमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, चंडीगढ़	141.7	170.0	157.6	121.4	189.2	779.9	339.5	1119.4
22	डीएवी कॉलेज, अबोहर, पंजाब	144.0	195.3	163.2	121.9	164.1	788.5	265.5	1054.0
23	पंजाब कॉलेज ऑफ टेक्निकल एजुकेशन, लुधियाना	123.1	156.0	161.0	135.4	182.2	757.7	290.2	1047.9
24	स्कूल ऑफ कंप्यूटर ऐंड सिस्टम्स साइंसेज, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर	124.4	187.0	179.8	135.9	220.9	848.0	187.1	1035.1
25	सेंट विल्फ्रेड्स पी.जी. कॉलेज, जयपुर	129.2	189.2	175.2	101.3	202.4	797.3	148.7	946.0
26	एक्सिस इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन, कानपुर	112.5	135.3	161.0	88.7	199.9	697.4	227.5	924.9
27	पोद्दार इंटरनेशनल कॉलेज, जयपुर	129.9	199.7	168.0	148.9	161.0	807.5	104.2	911.7
28	डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साइंस ऐंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, आइआइएस (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी), जयपुर	149.8	182.9	194.8	119.1	189.0	835.6	68.9	904.5
29	आम्रपाली इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड साइंस, हल्द्वानी	101.9	162.0	173.9	94.8	216.1	748.7	154.0	902.7
30	एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर	136.4	195.9	135.2	144.6	161.8	773.9	117.5	891.4
31	उत्तरांचल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देहरादून	110.0	166.7	177.8	119.3	216.7	790.5	100.4	890.9
32	पीएसआइटी कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन, कानपुर	126.9	168.1	171.1	75.8	199.2	741.1	116.4	857.5
33	डीएवी सेंटेनरी कॉलेज, फरीदाबाद	133.9	159.1	83.2	89.3	182.7	648.2	206.1	854.3
34	देवकी देवी जैन मेमोरियल कॉलेज फॉर विमेन, लुधियाना	138.0	120.6	104.1	64.3	144.7	571.7	120.6	692.3
35	लाल बहादुर शास्त्री पीजी कॉलेज, जयपुर	111.7	141.2	104.6	95.4	185.1	638.0	0.0	638.0
36	जगदीश चंद्र डीएवी कॉलेज, दसूया, पंजाब	128.6	137.3	114.1	78.4	114.0	572.4	9.7	582.1
37	परिष्कार कॉलेज ऑफ ग्लोबल एक्सीलेंस, जयपुर	122.8	138.1	78.9	91.4	129.3	560.5	4.6	565.1
38	पं. दीनदयाल उपाध्याय मैनेजमेंट कॉलेज, मेरठ	75.8	114.4	50.2	38.4	176.6	455.4	99.9	555.3
39	बेबे नानकी यूनिवर्सिटी कॉलेज, कपूरथला, पंजाब	96.4	78.5	85.8	25.2	17.2	303.1	0.0	303.1

1. रैंकिंग ऑब्जेक्टिव डेटा और धारणात्मक सर्वे डेटा पर आधारित है
2. केवल उन्हीं कॉलेजों की रैंकिंग की गई है जिन्होंने अपना ऑब्जेक्टिव डेटा जमा किया था. एनएएलएसआर हैदराबाद, एनएलयू दिल्ली, एनएलयू जोधपुर जैसे संस्थान जिन्होंने अपना ऑब्जेक्टिव डेटा जमा नहीं किया या भाग लेने से मना कर दिया, उनकी रैंकिंग नहीं की गई है
3. रैंकिंग में भाग लेने के लिए केवल उन्हीं कॉलेजों को योग्य माना गया जो निम्नलिखित मानक पूरा किया था:
कम-से-कम तीन बैच उत्तीर्ण होकर निकले हों; जो फुलटाइम अंडरग्रेजुएट (यूजी) प्रोग्राम ऑफर करते हों
4. सभी स्कोर की गणना दशमलव के एक अंक तक ही की गई है; मानकवार स्कोर जोड़ने में हो सकता है कि त्रुटियां दिख जाएं
5. जिन कॉलेजों की धारणात्मक सर्वे में रैंकिंग नहीं की गई है उनका धारणात्मक स्कोर शून्य है

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

INDIA TODAY GROUP

यूपी की धान खरीद व्यवस्था में कई छेद
लालफीताशाही के शिकंजे में कारोबार
सरना: पुराने धर्म पर नई बहस
इंडिया टुडे
कोविड-19 वैक्सीन
कितनी सुरक्षित? कितनी कारगर?
बाजार में आने के लिए तैयार नई वैक्सीन से जुड़े सारे अहम सवालों के जवाब

राम मंदिर को माना गया मोदी की प्रमुख उपलब्धि
अनुच्छेद 370 हटाने को मिला जोरदार समर्थन
बेरोजगारी मानी गई सबसे बड़ी समस्या
इंडिया टुडे
देश का मिजाज सर्वेक्षण
मोदी और हिंदुत्व का बोलबाला
देशव्यापी छमाही सर्वेक्षण से जाहिर है कि नरेंद्र मोदी लोकप्रियता के शिखर पर बरकरार हैं और संघ परिवार के एजेंडे को मिली जबरदस्त बढ़त

सबसे भरोसेमंद स्रोतों से, सबसे सटीक जानकारी

सब्सक्राइब करें और पाएं 21% तक की छूट

हां! मैं इंडिया टुडे को सब्सक्राइब करना चाहता/चाहती हूँ

अपनी पसंद के सब्सक्रिप्शन को टिक करें और फॉर्म को इस पते पर भेज दें– **वी केअर, लिविंग मीडिया इंडिया लि. सी–9, सेक्टर–10, नोएडा 201302 (भारत)**

टिक करें	अवधि	कुल अंक	कवर प्राइस (₹)	ऑफर प्राइस (₹)	डिस्काउंट
☐	2 वर्ष	104	~~5200~~	4099	21%
☐	1 वर्ष	52	~~2600~~	2199	15%

कृपया फॉर्म को ब्लॉक लेटर में भरें

मैं चेक/डीडी जमा कर रहा/रही हूँ जिसकी संख्या.....है और इसे दिनांक..... को लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड के पक्ष में ..... (बैंक का नाम).....रुपये की धनराशि (दिल्ली से बाहर के चेक के लिए ₹ 50 रुपये अतिरिक्त जोड़ें, समान मूल्य के चेक मान्य नहीं होंगे) के लिए बनवाया गया है.

नाम..... पता.....

..... शहर..... राज्य..... पिन.....

मोबाइल..... ईमेल.....

सब्सक्राइब करने के लिए यहां स्कैन करें.

ऑफर के विषय में विशेष जानकारी के लिए निम्न माध्यमों से संपर्क भी कर सकते हैं

हमारे टॉल फ्री नंबर पर कॉल करें
18001800100 (0120) 2479900

ईमेल भेजें
wecare@intoday.com

लॉग ऑन करें
subscriptions.intoday.in/indiatoday-hindi

लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड इस ऑफर या इसके अंश को कभी भी समाप्त करने या आगे बढ़ाने का अधिकार सुरक्षित रखता है. अन्य नियम व शर्तों की जानकारी के लिए कृपया देखें-www.indiatoday.in

नई सोच और नए विचार

दूसरी बार वर्चुअल आयोजित इंडिया टुडे ई-माइंड रॉक्स 2021 में जीवन के हर क्षेत्र की मशहूर शख्सियतों और वक्ताओं ने गुजरे साल के अनुभव साझा किए और अपने विचार व्यक्त किए कि महामारी के बाद नए हालात में कैसे आगे बढ़ा जाए

''कोविड का अनुभव मेरे लिए निजी था. मेरी मां और मैं बीमार पड़ गए और मैंने जाना कि महामारी कितनी कठिनाई लेकर आ सकती है...मुझे अपनी जिन मुश्किलों का एहसास हुआ, उसी ने मुझे राहत कार्य शुरू करने को प्रेरित किया और मुझे लगा कि उससे मुझे जल्दी ठीक होने में मदद मिली''

भूमि पेडणेकर
अभिनेत्री

''मुझे विभिन्न क्षेत्रों से प्रेरणा मिलती है. मैं खुद को सिर्फ कलाकार होने तक ही सीमित नहीं रखता. मैं बहुत सारी चीजों संगीत, राजनीति वगैरह से प्रभाव ग्रहण करता हूं''

राहुल वैद्य
गायक और संगीतकार

''मैंने पिछले दस साल में 16 फिल्मों में काम किया, लेकिन मैंने अपनी दिमागी और शारीरिक सेहत को उतना समय नहीं दिया, जितना देना चाहिए था. आगे मैं अपना यह रवैया बदलना चाहूंगा''

अर्जुन कपूर
अभिनेता

''मलयालम फिल्मों में काम करने का यह अच्छा और दिलचस्प वक्त है. यहां दर्शक आपके काम की गुणवत्ता की सराहना करते हैं और प्रयोगधर्मिता को हमेशा बेहतर मानते हैं''

रोशन मैथ्यू
अभिनेता

मंदार देवधर

''ज्यादातर एथलीट मध्यम वर्गीय परिवारों से आते हैं, जो खेल का खर्च नहीं उठा सकते. हम कड़ी मेहनत भर कर सकते हैं. लेकिन काफी सुधार हुआ है. स्टेडियम अधिक बने हैं और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं''

नीरज चोपड़ा
एथलीट, ओलंपिक स्वर्ण विजेता

संजीव वर्मा /गेट्टी इमेजेज

''मैं अब खुद को बाहरी नहीं कहती हूं. मैं फिल्म उद्योग का बाकायदा हिस्सा हूं. मैंने अपने लिए खुद से मुकम्मल जगह बना ली है. मैं अब यहां सुकून और बेहतर महसूस करती हूं''

कृति सैनन
अभिनेत्री

मिलिंद शेल्टे

''महामारी की वजह से यकीनन पढ़ाई-लिखाई के नए तौर-तरीकों की राह खुली और हमारा ध्यान इस ओर गया कि हम आज कहां खड़े हैं और भविष्य में हम किस ओर जाना चाहते हैं''

धर्मेंद्र प्रधान

केंद्रीय शिक्षा मंत्री

रंचित गोस्वामी

''इससे कतई कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन-सा खेल खेल रहे हैं—चाहे बैटलग्राउंड हो या फीफा वगैरह. आपकी शख्सियत में आकर्षण होना चाहिए और खेलना आना चाहिए''

आदित्य डी. सावंत (डायनामो)

गेमर, स्ट्रीमर और कंटेंट क्रिएटर

''गेमिंग 2022 एशियन गेम्स का हिस्सा बनने जा रहा है. हम ऐसे सफर पर निकल चुके हैं, जहां काफी गहमागहमी होगी''

विनीत कार्णिक

दक्षिण एशिया प्रमुख, स्पोर्ट्स, ई-स्पोर्ट्स और एंटरटेनमेंट, यूएम

''मेरी राय में जब आप कुछ असरदार करते हैं तो पैसा बरसता है. हमेशा कुछ नया करने की कोशिशों का हिस्सा बनिए और कुछ ऐसा बनाइए, जो लंबे समय तक टिकाऊ हो''

सुजीत कुमार

संस्थापक, उड़ान

''मैं रेडियो से बाहर निकलने को बुरी तरह छटपटा रही थी...इस तरह मेरे लिए यूट्यूब का दरवाजा खुला, क्योंकि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, लेकिन मैं सोचती हूं कि यह उम्दा फैसला था''

प्राजक्ता कोली

यूट्यूबर और अभिनेत्री

मिलिंद शेल्टे

''बतौर अभिनेता, मैं सेल्फ सेंसरशिप यानी आत्म संयम में यकीन रखता हूं. मेरा काम बतौर अभिनेता अपनी भूमिका, अपने दृश्यों पर ध्यान रखना है, न कि पूरे शो पर''

पंकज त्रिपाठी

अभिनेता

''हमारे पाठ्यक्रम और इतिहास के पाठ में बदलाव की जरूरत है; हम जैसे विज्ञान पढ़ाते हैं, उसे बदलने की जरूरत है. हमें पश्चिमी परंपराओं को पढ़ाने से पहले अपनी खुद की परंपराओं को पढ़ाने की जरूरत है''

अमीष त्रिपाठी

लेखक

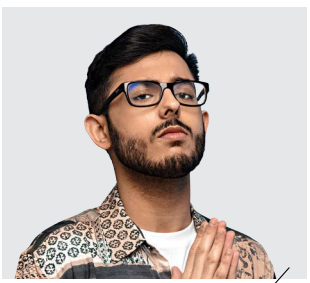

''यूट्यूब इंस्टाग्राम से काफी अलग किस्म का खेल है. मैंने महामारी के दौरान अपनी राह बदली. जिस तरह मैं अपने कंटेंट और चैनल को देखता हूं, उसमें भी बदलाव आ गया है''

कैरी मिनाटी

यूट्यूबर

संगीत

मेरा जुनून है प्रतिभाओं की तलाश

गायक कैलाश खेर नई प्रतिभाओं की खोज के अपने प्रकल्प, अपनी गायिकी में प्रयोग और आज के समय में देशभक्ति के सवाल पर

● नया टैलेंट सामने लाने वाले आपके नए प्रकल्प *नई उड़ान* के पीछे आखिर सोच क्या है?

लोग मानते हैं कि *नई उड़ान* के जरिए नए गायक और नए बैंड को पेश करके मैं अपने लिए चुनौती खड़ी कर रहा हूं. पर सच यह है कि इस मंच से मैं नई प्रतिभाओं को रास्ता दिखा रहा हूं. यह मेरा जुनून है, पागलपन है. पांच साल हो गए हैं. श्रीकांत सुरफिरा पहला बैंड पेश किया था. रचित अग्रवाल, सुभोजित मिश्र, ईशा सिंह के बाद इस साल जम्मू-कश्मीर से ओवैस अशरफ, रमन सलाथिया और अनन्या शर्मा को खोजकर लाए हैं. ये संगीत का भविष्य हैं.

● इस साल क्या और भी कोई प्रकल्प शुरू करने का इरादा है आपका?

जी. यह कैलाश खेर एकेडमी फॉर लर्निंग आर्ट्स की ओर से कलाधाम नाम से ऑनलाइन शुरू होने जा रहा है. इसमें संगीत, गायन, नृत्य, योग, वेदोच्चार और संस्कृत के पाठ्यक्रम हैं. बुजुर्गों के लिए श्लोक के पाठ्यक्रम हैं जिससे वे तनावमुक्त होंगे.

● अच्छा अपने गायन को आप किस तरह से देखते हैं?

मैं मनोरंजन के लिए नहीं गाता. मेरे लिए यह प्रार्थना है. मैं तो गाता भी नहीं, महसूस करता हूं. गाते तो परमात्मा हैं, मैं देखता हूं. मेरी कोई तमन्ना भी नहीं. मैं संतुष्ट ही पैदा हुआ और संतुष्ट ही जाऊंगा.

● अपनी नई रचनाओं में आप साजों को लेकर भी प्रयोग कर रहे हैं. उनके बारे में आपकी क्या राय है?

नए गानों में नए शब्द, नए ध्वनियां और नए वाद्य यंत्रों के प्रयोग मिलेंगे आपको. मसलन रबाब और मैंडोलिन. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए योग पर बनाए एक गाने में वीणा और नादस्वरम का इस्तेमाल किया, जो उत्तर भारत में कम ही प्रयोग होते हैं. *अनादि अनंता* में अनूठी ध्वनि के लिए तबले के साथ चार-चार पखावज का इस्तेमाल किया.

● देश में अक्सर देशभक्ति को लेकर सवाल उठते हैं. आपको लगता है कि देश में देशभक्तों की कमी है?

हमारी शिक्षा को विकृत कर दिया गया था जिससे देशभक्ति की कमी थी. पर पिछले कुछ वर्षों से खासकर युवाओं में देशभक्ति जाग रही है. मैंने भी आजादी के अमृत महोत्सव पर देश के सच्चे नायकों को नमन करते हुए *ये है बदलता भारत, नए हौसलों का नया भारत* एल्बम निकाला है.

—नवीन कुमार

फुरसत

पल्लव

कथेतर विधाओं में संस्मरणों के साथ यात्रा आख्यान लिखने का आकर्षण इधर तेजी से बढ़ा है और अनेक नए लेखकों ने भी इस क्षेत्र में रुचि दर्शाई है. इसके सामाजिक–सांस्कृतिक कारणों में संभवतः एक यह भी हो कि कविता और कहानी रचने सरीखे कौशल का दबाव यहां दिखाई नहीं देता. यह भिन्न बात है कि यात्रा आख्यान और संस्मरण भी अंततः कला की कसौटी पर ही कसे जाएंगे. यही कारण है कि नवाचारों के जैसे प्रयोग कथेतर विधाओं में देखने में आ रहे हैं वैसे कहानी-उपन्यास में भी नहीं.

हाल में आई कुछ नई यात्रा पुस्तकों के माध्यम से इस बात को समझा जा सकता है. कवि अंबिकादत्त का *सियाराम का गांव*, रंगकर्मी दिनेश शर्मा का *फिर चल दिये*, कवि और एक्टिविस्ट गीता गैरोला का *ये मन बंजारा रे*, अरुण कुकसाल का *चले साथ पहाड़* तथा विज्ञान लेखक देवेंद्र मेवाड़ी का *कथा कहो यायावर* जैसे यात्रा आख्यानों का एक साथ प्रकाशन हिंदी में दुर्लभ घटना है और पाठकों के बदलते मिजाज का प्रमाण भी. इनमें सबसे पहले ध्यान जाता है *सियाराम का गांव* पर. पर्यटन स्थलों, ऐतिहासिक भू भागों और सुरम्य स्थानों की यात्राएं करना और उन्हें लिखना सामान्य है किन्तु क्या अपने आसपास का जीवन, परिवेश और भूगोल भी इतना रोचक हो सकता है कि वहां की यात्राओं को दर्ज किया जाए? अंबिकादत्त यही करते हैं. वे अपने शहर कोटा के आसपास के छोटे छोटे गांवों, नदियों और स्थलों की यात्राएं करते हैं, वहां के साधारण लोगों से मिलते हैं और उन्हें बेहद रोचक ढंग से दर्ज भी करते हैं. रोजमर्रा का जीवन सरीखा लगने पर उनकी किताब के डायरी होने का भ्रम भी होता है पर यहां डायरी जैसा एकांत और आत्मचिंतन उनका लक्ष्य नहीं. अम्बिकादत्त अपने आसपास के साधारण और मामूली जीवन को ध्यान से देखने और उसे महसूस करने का जोखिम सफलतापूर्वक निभाते

किताबें

यात्राओं का एक नया संसार

करते हैं. वे लिखते हैं, ''मैं सियाराम के गांव जरूर जाऊंगा—एक तो कालीसिंध नदी के किनारे स्थित भटेड़ी के बालाजी के दर्शन करने और दूसरे सियाराम के पिताजी से मिलने. मैं अब तक कई सारे शिक्षित, पढ़े-लिखे, अध्यापकों, अफसरों, डॉक्टरों, वकीलों, व्यापारियों, साहित्यकारों और पता नहीं किन-किन से मिला-लेकिन एक ऐसा आदमी जो साठ साल से गायें चरा रहा हो—ऐसे आदमी से मैं आज तक नहीं मिला.'' सही है कि कथा के सांचे में आने से रह गए कोनों-अंतरों में झांकने और उन्हें भी प्रकाशित करने का नया माध्यम है कथेतर.

दिनेश शर्मा का यात्रा आख्यान *फिर चल दिये* देश और अधिकांश विदेश की यात्राओं से बना है. वे यूरोप, एशिया और अमेरिका के अनेक छोटे-बड़े देशों-शहरों की यात्राएं करते हैं. एक यात्री के रूप में उनकी सफलता जीवन के सौंदर्य की तलाश करना है जिसके लिए भटकना और नए-नए स्थान देखना उन्हें प्रिय है. पुस्तक की शुरुआत 1973 में की गई एक यात्रा से होती है जो हंगरी, फ्रांस, आस्ट्रिया, बेल्जियम, इथोपिया, टर्की, वियतनाम और मैक्सिको तक जाती है. अपने देश में भी वे केदारनाथ, पांडिचेरी जैसी जगहों पर लिखते हैं. वे क्रोएशिया में एक ऐसे दुकानदार से मिलते हैं जिसकी चिंताएं विचित्र लग सकती हैं. इस व्यक्ति माटो के बारे में शर्मा ने लिखा है, 'वो और उसके बहुत सारे दोस्त सैलानियों की बेसाख्ता बढ़ती भीड़ से बहुत चिंतित हैं तो मुझे कुछ अजीब लगा. उसने बताया कि उसे लग रहा है कि उसका शहर जो एक शांत खूबसूरत चरित्रवान लड़की की तरह था अब भौंडी वेश्या बन रहा है जो हर वक्त बिकाऊ है. सब लोगों ने अपने घरों में सैलानियों के लिए गेस्ट हाउस बना दिए हैं, ज्यादातर स्त्री-पुरुष कमाने की अंधी दौड़ में अपनी कारों को उबर टैक्सी बनाकर दिन रात दौड़ा रहे हैं. पुराने शहर में जहां सदियों से हजारों परिवार बसते थे, महज दो चार सौ लोगों को छोड़कर सबने अपने मकान और दुकान पैसे और कमाई के लालच में 'बाहर वालों' को बेच दिए हैं.'

हमारे देश में अभी भी घुमक्कड़ी पुरुषों का विशेषाधिकार समझा जाता है. इसका कारण पितृसत्तात्मक संरचना ही नहीं. इसके सामाजिक-आर्थिक कारण भी हैं. उत्तराखंड में जमीनी कार्यकर्ता के रूप में विख्यात गीता गैरोला दुस्साहसी यात्री भी हैं. वे पहली स्त्री यात्री हैं जिन्होंने नंदा देवी राजजात यात्रा पूरी की. इस यात्रा में एक निश्चित स्थान के बाद स्त्रियों का जाना वर्जित था जिसे गीता जैसी साहसी महिला ने तोड़ा. उनकी पुस्तक *ये मन बंजारा रे* पहाड़ों की दिलचस्प और सामाजिक चिंताओं से उपजी यात्राओं से बनी है. वे घुमक्कड़ी का आनंद लेना जानती हैं किंतु महिला आंदोलनों और सामाजिक चिंताओं से पृथक नहीं हो पाती. अपनी इन यात्राओं में वे सामाजिक वर्जनाओं को लगातार प्रश्नांकित करती हैं. एक जगह उन्होंने लिखा है, 'नंदा देवी स्वयं औरत होते हुए दूसरी औरतों का आना वर्जित क्यों करेंगी?.'' कहना न होगा कि देश में सांस्कृतिक जागरूकता के लिए कितना काम किया जाना शेष है.

अरुण कुकसाल की किताब *चले साथ पहाड़* जहां पहाड़ों के सौंदर्य और विषमता बोध को एक साथ लक्षित करती है तो देवेंद्र मेवाड़ी ने विज्ञान शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए की गई यात्राओं को भी रचना का रूप दे दिया. कुकसाल वर्णन की गहराई में विश्वास रखने वाले लेखक हैं जो यात्राओं में चेहरों के साथ चित्त को भी देखने-समझने का आग्रह रखते हैं. उनकी यात्राएं बहुलांश में भीतर की खोज भी बन जाती हैं. वहीं मेवाड़ी से सीखा जा सकता है कि कैसे अनुभवों का दुहरा-तिहरा रचनात्मक उपयोग संभव है.

इन यात्रा आख्यानों को पढ़ना हिंदी संसार में हो रही नई आहटों को भी देखना-समझना है जहां विधाओं की परंपरागत चौखटों को तोड़कर कथेतर के नये रूपों के प्रकट होने की सुगबुगाहट है तो सामाजिक-सांस्कृतिक जड़ता से उपज रही बेचैनी भी इन्हें दस्तावेजी बनाती है.■

इन यात्रा आख्यानों को पढ़ना हिंदी संसार में हो रही नई आहटों को भी देखना-समझना है जहां विधाओं की परंपरागत चौखट को तोड़कर कथेतर के नए रूपों के प्रकट होने की सुगबुगाहट है

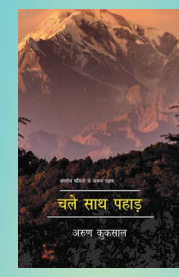

चले साथ पहाड़
लेखक: अरुण कुकसाल
संभावना प्रकाशन, हापुड़, यूपी
कीमत: 250 रुपए

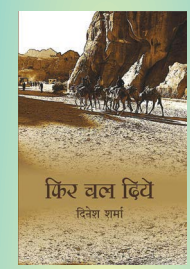

फिर चल दिये
लेखक: दिनेश शर्मा
अनन्य प्रकाशन, दिल्ली
कीमत: 175 रुपए

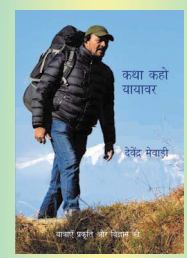

कथा कहो यायावर
लेखक: देवेंद्र मेवाड़ी
संभावना प्रकाशन, हापुड़, यूपी
कीमत: 250 रुपए

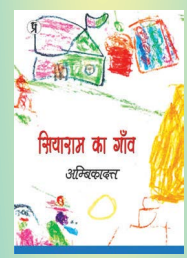

सियाराम का गांव
लेखक: अंबिका दत्त
प्रभाकर प्रकाशन, दिल्ली
कीमत: 150 रुपए

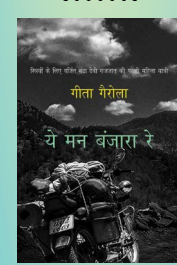

ये मन बंजारा रे
लेखक: गीता गैरोला
संभावना प्रकाशन, हापुड़, यूपी
कीमत: 250 रुपए

सवाल+जवाब

मैदान में मोर्चे पर

भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान **मनप्रीत सिंह** बेफिक्र होकर जिंदगी जीने में यकीन रखते हैं. टीम की अगुआई करते हुए ओलंपिक में कांस्य पदक दिलाने वाले मनप्रीत कहते हैं कि लंबे अरसे से संजोया गया उनका सपना आखिरकार पूरा हुआ

● ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के बाद किस तरह की अनुभूति हो रही है?

भारत ने 41 साल पहले आखिरी बार जब ओलंपिक में हॉकी में पदक जीता था तब तक हमारी टीम का कोई खिलाड़ी पैदा तक नहीं हुआ था. भारत के पदक जीतने की बात हमने बस सुनी ही थी. तो इस दफा कांस्य जीतने पर एक अलग तरह का एहसास हो रहा था. हमसे पहले भी बहुत-से अच्छे खिलाड़ी टीम में हुए लेकिन बतौर टीम हमने अच्छा खेला, जिसके चलते हमने पदक जीता. बचपन से ही ओलंपिक में पदक जीतने का सपना था जो अब पूरा हो गया.

● सेमी फाइनल में हार और तीसरे स्थान के लिए जर्मनी से हुए मैच के बीच के समय में खिलाड़ियों से आपने क्या कहा?

सेमी फाइनल में हार से सारे खिलाड़ी स्तब्ध थे. वह मैच हम जीत गए होते तो स्वर्ण या रजत पदक पक्का हो जाता. अब यह साफ था कि सिर्फ जीतने पर ही कांस्य पदक मिल सकेगा. मैंने उनसे यही कहा कि हमारे पास 60 मिनट हैं, इस दौरान हमने बढ़िया खेला तो हमारे नाम के आगे भी मेडल जुड़ जाएगा. वर्ना जिंदगी भर पछताने को रह जाएगा.

● भारतीय हॉकी में इसी जज्बे और उत्साह को बनाए रखने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

भारत अभी विश्व में नंबर 3 पर है और सोच यही है कि इसे बरकरार रखा जाए. हमें ओलंपिक में की गई गलतियों पर काम करने और उन पहलुओं को पहचानने की जरूरत है जिनमें सुधार की जरूरत है. कैंप में लौटने पर हम इन चीजों का विश्लेषण करेंगे. अंतिम लक्ष्य, जाहिर है, नंबर 1 बनना ही है.

● फिलहाल कुछ दिनों के लिए आप ट्रेनिंग वगैरह से दूर हैं, इस दौरान सबसे ज्यादा किस चीज का आनंद ले रहे हैं?

लौटने के बाद से ही हम अनेक स्वागत समारोहों में शिरकत करते रहे. लेकिन जहां कहीं थोड़ी भी गुफ्तगू का मौका मिला, मैंने लोगों को इस पदक के लिए किए गए बलिदान और बहाए गए पसीने के बारे में बताया. लोगों को मैं बताना चाहता हूं कि यहां पहुंचने के लिए टीम ने क्या-क्या नहीं किया. ओलंपिक से पूर्व फास्ट फूड और मिठाई खाने पर रोक लग गई थी. अब थोड़ा उसका मजा ले रहा हूं.

–शैल देसाई

आज तक

देश का नं. 1 हिंदी न्यूज़ ऐप

जुड़े रहिए हर खबर से,
कहीं भी, कभी भी

अभी डाउनलोड करें

aajtak.in/app

उपलब्ध है

IndiaContent

SEARCH FOR EDITORIAL IMAGES ENDS HERE